कबीर बीजक

प्रस्तुत पुस्तक कबीर बीजक में कबीर साहेब की चुनी हुई रमैनी, सबद, चौंतीसा, विप्रमतीसी, कहरा, बसंत, चांचर, बेलि, विरहुली, हिंडोला, साखियां, आदि काव्य रूपों का बहुत ही अनूठा संकलन किया गया है।

विषय सूची

मूल बीजक

बीजक माहात्म्य तथा पाठ–फल प्रारंभ

बीजक कहिये साख धन, धन का कहै संदेश।
आतम धन जेहि ठौर है, बचन कबीर उपदेश॥ 1॥

देखै बीजक हाथ लै, पावै धन तेहि शोध।
याते बीजक नाम भौ, माया मन को बोध॥ 2॥

अस्ति आत्मा राम है, मन माया कृत नास्ति।
याकी पारख लहै यथा, बीजक गुरुमुख आस्ति॥ 3॥

पढ़ै गुनै अति प्रीति युत, ठहरि के करै बिचार।
थिरता बुधि पावै सही, वचन कबीर निरधार॥ 4॥

सार शब्द टकसार है, बीजक याको नाम।
गुरु की दया से परख भई, बचन कबीर तमाम॥ 5॥

पारख बिन परचै नहीं, बिन सत्संग न जान।
दुबिधा तजि निर्भय रहे, सोई सन्त सुजान॥ 6॥

नीर क्षीर निर्णय करे, हंस लक्ष सहिदान।
दया रूप थिर पद रहे, सो पारख पहिचान॥ 7॥

देह मान अभिमान ते, निरहंकारी होय।
बर्ण कर्म कुल जाति ते, हंस निन्यारा होय॥ 8॥

जग विलास है देह को, साधो करो विचार।
सेवा साधन मन कर्म ते, ते, यथा भक्ति उर धार॥ 9॥
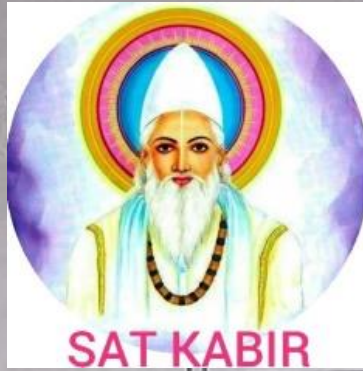
मूल बीजक

प्रथम प्रकरण : रमैनी

रमैनी-1

अन्तर जोति शब्द यक नारी, हरि ब्रह्मा ताके त्रिपुरारी।
ते तिरिये भग लिंग अनन्ता, तेऊ न जानै आदिउ अंता।
बाखरि एक विधातैं कीन्हा, चौदह ठहर पाट सो लीन्हा।
हरिहर ब्रह्मा महतो नाऊं, तिन्ह पुनि तीनि बसावल गाऊं।
तिन्ह पुनि रचल खंड ब्रह्मंडा, छौ दरसन छानवे पाषंडा।
पेटे न काहू वेद पढ़ाया, सुन्नति कराय तुरुक नहिं आया।
नारी मोचित गर्भ प्रसूती, स्वांग धरै बहुतै करतूती।
तहिया हम तुम एकै लोहू, एकै प्रान वियापै मोहू।
एकै जनी जना संसारा, कौन ग्यान ते भयो निनारा।
भौ बालक भग द्वारे आया, भग भोगे ते पुरुष कहाया।
अविगत की गति काहु न जानी, एक जीव कित कहउं बखानी।
जौ मुख होय जीभ दस लाखा, तौ कोइ आय मंहतो भाखा।

॥ साखी॥

कहहिं कबीर पुकारि के, ई ले ऊ व्यौहार।
राम नाम जाने बिना, भव बूड़ि मुवा संसार॥

रमैनी-2

जीव रूप यक अन्तर-वासा, अन्तर ज्योति कीन्ह परगासा।
इच्छा रूप नारि अवतरी, तासु नाम गायत्री धरी।
तेहि नारि के पुत्र तिन भयऊ, ब्रह्मा विष्णु महेश्वर नाऊं।
फिर ब्रह्मा पूछल महतारी, को तोर पुरुष केकरि तुम नारी।
तुम हम हम तुम और न कोई, तुमहिं मोर पुरुष हमहिं तोरि जोई।

॥ साखी॥

बाप पूत की एकै नारी, एकै माय बिआय।
ऐसा पूत सपूत न देखा, जो बापै चीन्है धाय॥

रमैनी-3

प्रथम अरंभ कौन को भैऊ, दूसर प्रगट कीन्ह सो ठैऊ।
प्रगटे ब्रह्मा विष्नु सिव सक्ती, प्रथमहि भक्ति कीन्ह जिव उक्ती।
प्रगटे पवन पानी औ छाया, बहुत विस्तार कै प्रगटी माया।
प्रगटे अण्ड पिण्ड ब्रह्मण्डा, पृथ्वी प्रगट कीन्ह नौ खण्डा।
प्रगटे सिद्ध साधक संन्यासी, ई सब लागि रहे अविनासी।
प्रगटे सुर नर मुनि सब झारी, तेहि के खोज परे सब हारी।

॥ साखी॥

जीव सीव सब प्रगटे, वै ठाकुर सब दास।
कबीर और जानै नहीं, यक राम नाम की आस॥

रमैनी-4

प्रथम चरन गुरु कीन्ह विचारा, करता गावै सिरजनहारा।
करमै कै कै जग बौराया, सक्ति भक्ति लै बांधिनि माया।
अद्‌बुद रूप जाति की बानी, उपजी प्रीति रमैनी ठानी।
गुनी अनगुनी अर्थ नहिं आया, बहुतक जने चिन्हि नहिं पाया।
जो चीन्हे ताको निर्मल अंगा, अनचीन्हे नर भए पतंगा।

॥ साखी॥

चीन्ह चीन्ह का गावहु बौरे, बानी परी न चीन्ह।
आदि अंत उतपति प्रलय, आपुहि कहि दीन्ह॥

रमैनी-5

कहलौं कहौं जुगन की बाता, भूले ब्रह्म न चीन्है बाटा।
हरिहर ब्रह्मा के मन भाई, बिबि अच्छर लै जुक्ति बनाई।
बिबि अक्षर का कीन्ह बंधाना, अनहद सब्द जोति परमाना।
अच्छर पढ़ि गुनि राह चलाई, सनक सनंदन के मन भाई।
वेद कितेब कीन्ह विस्तारा, फैलि गेल मन अगम अपारा।
चहुं जुग भक्तन बांधल बाटी, समुझि न परी मोटरी फाटी।
भैं भैं पृथ्वी दहुं दिसि धावै, अस्थिर होय न औषध पावै।
होय भिस्त जौ चित न डोलावै, खसमहिं छोड़ि दोजख को धावै।
पूरब दिशा हंस गति होई, है समीप संधि बूझै कोई।
भक्ता भक्तिन कीन्ह सिंगारा, बूड़ि गैल सब मांझहि धारा।

॥ साखी॥

बिनु गुरु ज्ञान दुंदि भई, खसम कही मिली बात।
जुग जुग सो कहवैया, काहु न मानी बात॥

रमैनी-6

बरनहुं कौन रूप और रेखा, दूसर कौन आहि जो देखा।
औ ओंकार आदि नहिं वेदा, ताकर कहहु कौन कुल भेदा।
नहिं तारागन नहिं रवि चन्दा, नहिं कछु होत पिता के बिंदा।
नहिं जल नहिं थल नहिं थिर पौना, को धरे नाम हुकुम को बरना।
नहिं कछु होत दिवस औ राती, ताकर कहहु कौन कुल जाती।

॥ साखी॥

सुन्न सहज मन सुमिरते, प्रगट भई एक ज्योत।
ताहि पुरुष की मैं बलिहारी, निरालम्ब जो होत॥

रमैनी-7

तहिया होते पवन नहिं पानी, तहिया सृष्टि कौन उत्पानी।
तहिया होते कली नहिं फूला, तहिया होते गर्भ नहिं मूला।
तहिया होते विद्या नहिं वेदा, तहिया होते शब्द नहिं स्वादा।
तहिया होते पिण्ड नहिं बासू, नहिं धर धरणि न पवन अकासू।
तहिया होते गुरु नहिं चेला, गम्य अगम्य न पन्थ दुहेला।

॥ साखी॥

अविगति की गति का कहो, जाके गांव न ठांव।
गुण बिहूना पेखना, का कहि लीजे नांव॥

रमैनी-8

तत्वमसी इन्हके उपदेसा, ई उपनिषद कहैं संदेसा।
ई निश्चय इन्हके बड़ भारी, वाहिक वर्णन करें अधिकारी।
परम तत्व का निज परमाना, सनकादिक नारद सुक माना।
जागबलिक औ जनक संवादा, दत्तात्रेय उहै रस स्वादा।
उहै राम वसिष्ठ मिली गाई, उहै बात कृष्ण ऊधौ समुझाई।
उहै बात जो जनक दृढ़ाई, देह धरे विदेह कहाई।

॥ साखी॥

कुल मर्यादा खोइ कै, जियत मुवा नहिं होय।
देखत जो नाहिं देखिया, अदृष्टि कहावै सोय॥

रमैनी-9

बांधे अष्ट कष्ट नौ सूता, जम बांधे अंजनी के पूता।
जम के बाहन बांधे जनी, बांधे सृष्टि कहां लौ गनी।
बांधे देव तैंतीस करोरी, सुमिरत बंदि लोह गौ तोरी।
राजा संवरै तुरिया चढ़ी, पंथी संवरै नाम लै बढ़ी।
अर्थ बिहूना संवरै नारी, परजा संवरै पुहुमी झारी।

॥ साखी॥

बंदि मनावै ते फल पावै, बंदि दिया सो देय।
कहैं कबीर सो ऊबरे, जो निसिदिन नामहि लेय॥

रमैनी-10

राही लै पिपराही बही, करगी आवत काहु न कही।
आई करगी भौ अजगूता, जन्म-जन्म जम पहिरे बूता।
बूता पहिरि जम कीन्ह सुमाना, तीनि लोक में कीन्ह पयाना।
बांधे ब्रह्मा विस्नु महेसू, सुरनर मुनि और बांधु गनेसू।
बांधे पौन पावक औ नीरू, चांद सुरुज बांधे दोउ बीरू।
सांच मंत्र बांधिनि सब झारी, अमृत वस्तु न जानै नारी।

॥ साखी॥

अमृत वस्तु जानै नहीं, मगन भये सब लोय।
कहहिं कबीर कामो नहीं, जीवहिं मरन न होय॥

रमैनी-11

आंधरि गुष्टि सृष्टि भौ बौरी, तीनि लोक मंह लागि ठगौरी।
ब्रह्मा ठग्यो नाग कहं जाई, देवता सहित ठग्यो त्रिपुरारी।
राजठगौरी बिस्नुहि परी, चौदह भुवन केर चौधरी।
आदि अंत जाकि जलक न जानी, ताकर डर तुम काहेक मानी।
वै उतंग तुम जाति पतंगा, जम घर कियहु जीव को संगा।
नीम कीट जस नीम पियारा, विष को अमृत कहै गंवारा।
विष अमृत गो एकहिं सानी, जिन जानी तिन विष कै मानी।
विष के संग कौन गुन होई, किंचित लाभ मूल गो खोई।
कहा भये नर सुध बेसूधा, बिनु परचै जग बूड़ न बूझा।
मति के हीन कौन गुन कहई, लालच लागे आसा रहई।

॥ साखी॥

मुवा है मरि जाहुगे, मुए की बाजी ढोल।
सपन सनेही जग भया, सहिदानी रहि बोल॥

रमैनी-12

माटिक कोट पषानक ताला, सोई बन सोई रखवाला।
सो बन देखत जीव डेराना, ब्राह्मण वैष्णव एकै जाना।
जौ रे किसान किसानी करई, उपजै खेत बीज नहिं परई।
छांड़ि देहु नर झेलिक झेला, बूड़े दोऊ गुरु औ चेला।
तीसर बूड़े पारथि भाई, जिन बन डाहे दवां लगाई।
भूंकि भूंकि कूकुर मरि गयऊ, काज न एक सियार से भयऊ।

॥ साखी॥

मूस बिलाई एक संग, कहु कैसे रहि जाय।
अचरज एक देखहु हो संतो, हस्ती सिंघहि खाय॥

रमैनी-13

नहिं परतीत जो यहि संसारा, दरब की चोट कठिन कै मारा।
सो तो सेषहु जाइ लुकाई, काहू कैं परतीति न आई।
चले लोग सब मूल गंवाई, जम की बाढ़ि काटि नहिं जाई।
आजु काज है काल्हि अकाजा, चलेउ लादि दिगन्तर राजा।
सहज विचारे मूल गंवाई, लाभ ते हानि होय रे भाई।
वोछी मति चन्द्रमा गौ अथई, त्रिकुटी संगम स्वामी बसई।
तबही बिस्नु कहा समुझाई, मैथून अष्ट तुम जीतहु जाई।
तब सनकादिक तत्व विचारा, जैसे रंक परा धन पारा।
भौ मरजाद बहुत सुख लागा, यह लेखे सब संसय भागा।
देखत उतपति लागु न बारा, एक मरै एक करै विचारा।
मुए गए की कोई न कहई, झूठी आस लागि जग रहई।

॥ साखी॥

जरत जरत ते बांचिहो, काहु न कीन्ह गोहारि।
विष विषय कै खायहु, राति दिवस मिलि झारि॥

रमैनी-14

बड़ सो पापी आहिं गुमानी, पाषंड रूप छलो नर जानी।
बावन रूप छलो बलि राजा, ब्राह्मन कीन कौन को काजा।
ब्राह्मन ही सब कीन्हो चोरी, ब्राह्मन ही को लागल खोरी।
ब्राह्मन कीन्हों वेद पुराना, कैसहु कै मोहि मानुष जाना।
एक से ब्रह्मै पंथ चलाया, एक से हंस गोपालहिं गाया।
एक से शंभू पंथ चलाया, एक से भूत-प्रेत मन लाया।
एक से पूजा जैनि विचारा, एक से निहुरि निमाज, गुजारा।
कोई काहु को हटा न माना, झूठा खसम कबीर न जाना।
तन मन भजि रहु मोरे भक्ता, सत्त कबीर सत्त है वक्ता।
आपुहि देव आपुहि है पाती, आपुहि कुल आपुहि है जाती।
सर्वभूत संसार निवासी, आपुहि खसम आपु सुखरासी।
कहते मोहि भये जुग चारी, काके आगे कहौं पुकारी।

॥ साखी॥

सांचहि कोई न माने, झूठहि के संग जाय।
झूठहि झूठा मिलि रहा, अहमक खेहा खाय॥

रमैनी-15

उनई बदरिया परिगौ संझा, अगुआ भूले बनखंड मंझा।
पिया अनते धनि अनते रहई, चौपरि कामरि माथे गहई।

॥ साखी॥

फुलवा भार न लै सकै, कहै सखियन सो रोय।
ज्यौं ज्यौं भीजै कामरी, त्यों त्यों भारी होय॥

रमैनी-16

चलत-चलत अति चरन पिराना, हारि परे तहां अति रे सयाना।
गण गन्धर्व मुनि अन्त न पाया, हरि अलोप जग धन्धे लाया।

गहनी बन्धन बाण न सूझा, थाकि परे तहां किछउ न बूझा।
भूलि परे जिय अधिक डेराई, रजनी अन्ध कूप होय आई।
माया मोह उहां भरपूरी, दादुर दामिनि पवन अपूरी।
बरसै तपै अखण्डित धारा, रैन भयावन कछु न अधारा।

॥ साखी॥

सबै लोग जहंड़ाइयां, अन्धा सबै भुलान।
कहा कोई ना माने, सब एकै माहिं समान॥

रमैनी-17

जस जिब आपु मिलै अस कोई, बहुत धर्म सुख हृदया होई।
जासों बात राम की कही, प्रीति न काहू सो निरबहीं।
एकहि भाव सकल जग देखी, बाहर परै सो होय विवेकी।
विषय मोह के फंद छोड़ाई, तहां जाय जहां काट कसाई।
अहै कसाई छूरी हाथा, कैसहु आवै काटे माथा।
मानुस बड़े बड़े ह्वै आए, एकै पंडित सबै पढ़ाए।
पढ़ना पढ़हु धरहु जनि गोई, नहिं तौ निश्चय जाहु बिगोई।

॥ साखी॥

सुमिरन करहु राम कै, छाड़हु दुख के आस।
तर ऊपर धै चांपिहि, जस कोल्हु कोटि पचास॥

रमैनी-18

अद्‌बुद पन्थ वरणि नहिं जाई, भूले राम भूलि दुनियाई।
जो चेतहु सो चेतहु रे भाई, नहिं तो जीव यम लै जाई।
शब्द न माने कथै ज्ञाना, ताते यम दियो है थाना।
संशय सावज बसे शरीरा, तिन खायो अनबेधा हीरा।

॥ साखी॥

संशय सावज शरीर में, संगहि खेले जुआरि।
ऐसा घायल बापुरा, जीवहि मारे झारि॥

रमैनी-19

अनहद अनुभव की करि आसा, ई विपरीत देखहु तमासा।
इहै तमासा देखहु भाई, जहवां सुंन तहां चलि जाई।
सुन्नहि बांछा सुंनहि गैऊ, हाथा छाड़ि बेहाथा भैऊ।
शंसय सावज सकल संसारा, काल अहेरी सांझ सकारा।

॥ साखी॥

सुमिरन करहू राम के, काल गहे है केस।
ना जानहु कब मारिहै, क्या घर क्या परदेस॥

रमैनी-20

अब कहु सत्यनाम अविनासी, हरि तजि जियरा कतहुं न जासी।
जहां जाहु तहां होहु पतंगा, अब जनि जरहु समुझि विषसंगा।
रामनाम लौ लाय सो लीन्हा, भृंगी कीट समुझि मन दीन्हा।
भौ अस गरुआ दुःख के भारी, करु जिय जतन जो देखु विचारी।
मन की बात है लहरि विकारा, ते नहिं सूझै वार न पारा।

॥ साखी॥

इच्छा करि भौ सागरे, जामे बोहित नाम अधार।
कहैं कबीर हरि सरन गहु, गौ खुर बछ विस्तार॥

रमैनी-21

बहुत दुख दुख दुख की खानी, तब बचिहो जब रामहि जानी।
रामहि जानि जुक्ति जौं चलई, जुक्तिहिं तें फंदा नहिं परई।
जुक्तिहि जुक्ति चला संसारा, निश्चय कहा न मानु हमारा।
कनक कामिनी घोर पटोरा, संपत्ति बहुत रहै दिन थोरा।
थोरहि संपत्ति गौ बौराई, धर्मराज के खबरि न पाई।
देखि त्रास मुख गौ कुम्हिलाई, अमृत धोखै गौ विष खाई।

॥ साखी॥

मैं सिरजौं मैं मारौं, मैं जारौं मैं खाउं।
जल थल नभ मंह रमि रहौं, मोर निरंजन नाउं॥

रमैनी-22

अलख निरंजन लखै न कोई, जेहि बंधे बंधा सब लोई।
जेहि झूठे सब बांधु अयाना, झूठे वचन सांच कै जाना।
धंधा बंधा किन्ह व्यवहारा, करम बिवरजित बसै निनारा।
षट आश्रम षट दरसन कीन्हा, षटरस वास षटै वस्तुहिं चीन्हा।
चारि वृक्ष छव साख बखानै, विद्या अगनित गनै न जानै।
औरो आगम करै विचारा, ते नहि सूझै वार न पारा।
जप तीरथ व्रत कीजै बहु पूजा, दान पुन्य कीजै बहु दूजा।

॥ साखी॥

मंदिर तौ है नेह का, मति कोइ पैठे धाय।
जो कोइ पैठे धायके, बिनु सिर सेंतिहि जाय॥

रमैनी-23

अल्प सुख दुख आदि औ अंता, मन भुलान मैगर मै मंता।
सुख विसराय मुक्ति कहं पावै, परिहरि सांच झूठ निज धावै।
अनल जोति डाहै एक संगा, नैन नेह जस जरै पतंगा।
करहु विचार जो सब दुख जाई, परिहर झूठा केरि सगाई।
लालच लागी जनम सिराई, जरा मरन नियरायल आई।

॥ साखी॥

भर्म का बांधल ई जग, यहि विधि आवै जाय।
मानुष जन्महि पाय नर, काहे को जहंडाय॥

रमैनी-24

चंद चकोर की ऐसी बात जनाई, मानुस बुद्धि दीन्ह पलटाई।
चारि अवस्था सपनेहु कहई, झूठो फुरो जानत रहई।
मिथ्या बात न जानै कोई, यहि विधि सब गैल बिगोई।
आगे दै दै सबन गंवाया, मानुस बुद्धि न सपनेहु पाया।
चौंतिस अक्षर से निकलै जोई, पाप पुन्य जानैगा सोई।

॥ साखी॥

सोई कहंता सोई होहुगे, तैं निकरि न बाहर आव।
हौं हजूर ठाढ़ कहत हौं, तैं क्यों धोखे जन्म गवांव॥

रमैनी-25

चौंतिस अक्षर का इहै विशेषा, सहस्त्रों नाम इहै मंह देखा।
भूलि भटकि नर फिरि घट आया, होत अजान सो सभन्हि गंवाया।
खोजहि ब्रह्मा विष्णु शिव शक्ति, अनन्त लोक खोजहि बहु भक्ति।
खोजहि गन गंधर्व मुनि देवा, अनन्त लोक खोजहिं बहु भेवा।

॥ साखी॥

जती सती सब खोजहिं, मनहिं न मानैं हारि।
बड़-बड़ जीव न बांचिहैं, कहहिं कबीर पुकारि॥

रमैनी-26

आपुहिं कर्ता भये कुलाला, बहु बिधि बासन गढ़ै कुम्हारा।
बिधि ने सबै कीन्ह एक ठाऊं, अनेक जतन के बने कनाऊं।
जठर अग्नि मों दीन्ह प्रजारी, तामहं आपु भये प्रतिपाली।
बहुत जतन कै बाहर आया, तब शिव शक्ती नाम धराया।
घर का सुत जो होय अयाना, ताके संग न जाहु सयाना।
सांची बात कही मैं अपनी, भया दिवाना और की पुन्हीं।
गुप्त प्रगट है एकै दूधा, काको कहिये ब्राह्मण शूद्रा।
झूठे गर्भ भूलो मति कोई, हिन्दू तुरुक झूठ कुल दोई।

॥ साखी॥

जिन्ह यह चित्र बनाइया, सांचा सो सूत्रधारि।
कहहिं कबीर ते जन भले, जो चित्रवन्तहि लेहि निहारि॥

रमैनी-27

ब्रह्मा को दीन्हो ब्रह्मण्डा, सात द्वीप पुहुमी नव खण्डा।
सत्त सत्त कै बिस्नु दिठाई, तीनि लोक मंह राखिनि जाई।

लिंग रूप तब संकर कीन्हा, धरती कीलि रसातल दीन्हा।
तब अष्टंगी रची कुमारी, तीनि लोक मोहिनि सभ झारी।
दुतिया नाम पारवती भैऊ, तप करते संकर कंह दैऊ।
एकै पुरुष एक है नारी, ताते रचेउ खानि भौ चारी।
सर्मन वर्मन देव औ दासा, रज सत तमगुन धरति अकासा।

॥ साखी॥

एक अंड ओंकार ते, सब जब भयो पसार।
कहहिं कबीर सब नारि की, अविचल पुरुष भ्रतार॥

रमैनी-28

अस जोलहा का मरम न जाना, जिन जग आय पसारिन्हि ताना।
महि अकास दुइ गाड़ खंदाया, चांद सुरुज दुई नरी बनाया।
सहस्त्र तार लै पूरिन पूरी, अजहुं बिनय कठिन है दूरी।
कहहिं कबीर करम सो जोरी, सूत-कुसूत बिनै भल कोरी।

रमैनी-29

वज्रहुं ते त्रिन खिन में होई, त्रिन ते वज्र करै पुनि सोई।
निझरु नीरु जानि परिहरिया, करम का बांधल लालच करिया।
कर्म धर्म मति बुधि परिहरिया, झूठा नाम सांच लै धरिया।
रज गति त्रिविध कीन्ह परगासा, कर्म धर्म बुधि केर बिनासा।
रवि के उदै तार भी छीना, चर बीहर दोनों मंह लीना।
विष के खाए विष नहिं जावै, गारुड़ि सो जो मरत जियावै।

॥ साखी॥

अलख जो लागी पलक में, पलकहि मंह डसि जाय।
विषहर मंत्र न मानै, तौ गारुड़ि काह कराय॥

रमैनी-30

औ भूले षट दर्शन भाई, पाखण्ड भेष रहा लपटाई।
जीव शीव का आहि नशौना, चारिउ वेद चतुर्गुण मौना।
जैनि धर्म का मर्म न जाना, पाती तोरि देव घर आना।
दवना मरुवा चम्पा के फूला, मानहु जीव कोटि सम तूला।
औ पृथ्वी के रोम उचारे, देखत जन्म आपनो हारे।
मन्मथ बिन्दु करै असरारा, कल्पै बिन्द खसे नहिं द्वारा।
ताकर हाल होय अदबूदा, छौ दर्शन में जैनि बिगुर्चा।

॥ साखी॥

ज्ञान अमर पद बाहिरे, नियरे ते है दूरि।
जो जाने ताके निकट है, नहिं तो रहा सकल घट पूरि॥

रमैनी-31

सुमृति आहि गुणन को चीन्हा, पाप पुण्य को मारग कीन्हा।
सुमृति वेद पढ़ें असरारा, पाखण्ड रूप करें हंकारा।
पढ़ें वेद औ करें बड़ाई, संशय गांठि अजहुं नहिं जाई।
पढ़ें शास्त्र जीव बध करई, मूंडि काटि अगमन के धरई।

॥ साखी॥

कहहिं कबीर ई पाखण्ड, बहुतक जीव सताव।
अनुभव भाव न दरशै, जियत न आपु रखाव॥

रमैनी-32

अंध सो दरपन वेद पुराना, दरबी कहा महारस जाना।
जस खर चंदन लादे भारा, परिमल बास न जान गंवारा।
कहहिं कबीर खोजै असमाना, सो न मिला जो जाय अभिमाना।

रमैनी-33

वेद की पुत्री सुम्रिति भाई, सो जेंवरि कर लेतहि आई।
आपुहि बरी आपु गर बंधा, झूठा मोह काल को फंदा।
बांधत बंधन छोरि न जाई, विषै रूप भूली दुनियाई।
हमरे देखत सकल जग लूटा, दास कबीर राम कहि छूटा।

॥ साखी॥

रामहि राम पुकारते, जिभ्या परिगौ रौंस।
सूधा जल पीवै नहीं, खोदि पियन की हौंस।

रमैनी-34

पढ़ि-पढ़ि पंडित करु चतुराई, निज मुक्ती मोहिं कहु समुझाई।
कहां बसे पुरुष कौन सा गाऊं, पंडित मोहिं सुनावहु नाऊं।
चारि वेद ब्रह्मै निज ठाना, मुक्तिक मर्म उनहुं नहिं जाना।
दान-पुन्य उन बहुत बखाना, अपने मरन की खबरि न जाना।
एक नाम है अगम गंभीरा, तहवां स्थिर दास कबीरा।

॥ साखी॥

चिउंटी जहां न चढ़ि सकै, राई ना ठहराय।
आवागमन की गम नहीं, तहं सकलो जग जाय॥

रमैनी-35

पण्डित भूले पढ़ि-गुनि वेदा, आप अपन पौ जानु न भेदा।
संझा तर्पण औ षट कर्मा, ई बहु रूप करे अस धर्मा।
गायत्री युग चारि पढ़ाई, पूछहू जाय मुक्ति किन पाई।
और के छिथे लेत हो छींचा, तुम सो कहहु कौन है नीचा।
ई गुण गर्व करों अधिकाई, अधिके गर्व न होय भलाई।
जासु नाम है गर्व प्रहारी, सो कस गर्वहि सकै सहारी।

॥ साखी॥

कुल मर्यादा खोय के, खोजिन पद निर्बान।
अंकुर बीज नशाय के, नर भये विदेही थान॥

रमैनी-36

ज्ञानी चतुर बिचक्षण लोई, एक सयान सयान न होई।
दूसर सयान को मर्म न जाना, उत्पति-परलय रैनि-बिहाना।
बनिज एक सबन मिलि ठाना, नेम धर्म संयम भगवाना।
हरि अस ठाकुर तजियो न जाई, बालहि बिहिस्त गावहिं दुलहाई।

॥ साखी॥

ते नर कहां गए, जिन दीन्हा गुरु घोंटि।
राम नाम निजु जानि के, छाड़ि देहु वस्तु खोटि॥

रमैनी-37

एक सयान सयान न होई, दोसर सयान न जानै कोई।
तीसर सयान सयानहिं खाई, चौथे सयान तहां लै जाई।
पंचये सयान न जाने कोई, छठवे मा सभ गैल बिगोई।
सतये सयान जो जानहु भाई, लोक वेद मा देहु देखाई।

॥ साखी॥

बीजक बतावै बित्त को, जो बित गुप्ता होय।
सब्द बतावै जीव को, बूझै विरला कोय॥

रमैनी-38

यहि विधि कहौं कहा नहिं माना, मारग मांहि पसारिन ताना।
राति दिवस मिलि जोरिन तागा, ओटत कातत भरम न भागा।
भरमै सभ जग रहा समाई, भरम छोड़ि कतहूं नहिं जाई।
परै न पूरि दिनहु दिन छीना, तहां जाय जहं अंग बिहीना।
जो मत आदि अंत चलि आई, सो मत सभ उन प्रगट सुनाई।

॥ साखी॥

यह संदेसा फुरकै मानेहु, लीन्हेउ सीस चढ़ाय।
संतो है संतोष सुख, रहहु तो हिरदय जुड़ाय॥

रमैनी-39

जिन्ह कलमा कलि माहिं पढ़ाया, वुफदरत खोज तिनहुं नहिं पाया।
कर्मत कर्म करे करतूता, वेद कितेब भये सब रीता।
कर्मत सो जग भौ अवतरिया, कर्मत सो निमाज को धरिया।
कर्मत सुन्नति और जनेऊ, हिन्दू तुरुक न जाने भेऊ।

॥ साखी॥

पानी पवन संजोय के, रचिया यह उतपात।
शून्यहि सूरति समोय के, कासों कहिये जात॥

रमैनी-40

आदम आदि सुधि नहिं पाई, मामा हवा कहां ते आई।
तब नहिं होते तुरुक औ हिन्दू, माय के रुधिर पिता के बिन्दू।
तब नहिं होते गाय कसाई, तब बिसमिल्ला किन फुरमाई।
तब नहिं होते कुल और जाती, दोजख बिहिस्त कौन उतपाती।
मन मसले की सुधि नहिं जाना, मति भुलान दुइ दीन बखाना।

॥ साखी॥

संजोगे का गुण रवै, बिजोगे का गुण जाय।
जिभ्या स्वारथ कारणे, नर कीन्हें बहुत उपाय॥

रमैनी-41

अंबु कि रासि समुद्र कि खांई, रवि ससि कोटि तैतिसो भाई।
भंवर जाल मंह आसन मांड़ा, चाहत सुख, दुख संग न छांड़ा।
दुख कै मर्म न काहू पाया, बहुत भांति के जग भरमाया।
आपुहि बाउर आपु सयाना, हिरदय बसे तेहि राम न जाना।

॥ साखी॥

तेई हरि तेई ठाकुर, तेई हरि के दास।
ना जम भया न जामिनी, भामिनि चली निरास॥

रमैनी-42

जब हम रहल रहल नहिं कोई, हमरे मांह रहल सब कोई।
कहहु राम कौन तोर सेवा, सो समुझाय कहौ मोहि देवा।
फुर-फुर कहत मार सब कोई, झूठहिं झूठा संगति होई।
आंधर कहै सबै हम देखा, तहं दिठियार बैठि मुख पेखा।
यहि विधि कहौं मानु जौ कोई, जस मुख तस जौ हृदया होई।
कहहिं कबीर हंस मुसुकाई, हमरे कहल दुष्ट बहु भाई।

रमैनी-43

जिन्ह जिव कीन्ह आपु विश्वासा, नरक गये तेहि नरकहि बासा।
आवत जात न लागे बारा, काल अहेरी सांझ सकारा।
चौदह विद्या पढ़ि समुझावा, अपने मरण की खबरि न पावा।
जाने जीव को परा अंदेसा, झूठहि आय के कहा संदेसा।
संगत छाड़ि करे असरारा, उबहै मोट नरक कर भारा।

। साखी॥

गुरु द्रोही मन्मुखी, नारी पुरुष विचार।
ते नर चौरासी भरमिहैं, ज्यौं लौं चन्द्र दिवाकार॥

रमैनी-44

कबहुं न भयउ संग अरु साथा, ऐसो जनम गवांयउ आछा।
बहुरि न पइहउ ऐसो थाना, साधु संगति तुम नहिं पहिचाना।
अब तोर होय है नरक महं बासा, निसु दिन बसेउ लबार के पासा।

॥ साखी॥

जात सबन कहं देखिया, कहहिं, कबीर पुकार।
चेतवा है तौ चेत ले नहिं तो, दिवसु परतु है धार॥

रमैनी-45

हिरनाकुस रावन गौ कंसा, कृस्न गए सुर नर मुनि बंसा।
ब्रह्मा गए मर्म नहिं जाना, बड़ सब गयल जो रहल सयाना।
समुझि परी नहिं राम कहानी, निरवक दूध कि सरवक पानी।
रहिगौ पंथ थकित भौ पौना, दसो दिसा उजारि भौ गौना।
मीन जाल भौ ई संसारा, लोह की नाव पषाण की भारा।
खेवै सभै मर्म नहिं नहिं जानी, तहियो कहै रहै उतरानी।

॥ साखी॥

मछरी मुख जस केंचुवा, मुसवन मुख गिरदान।
सर्पन मांहि गहेजुआ, ऐसी जात सभन की जान॥

रमैनी-46

बिनसे नाग, गरुड़ गलि जाई, बिनसे कपटी, औ सत भाई।
बिनसे पाप पुन्य जिन्ह कीन्हा, बिनसे गुन निरगुन जिन चीन्हा।
बिनसे अगिनि पौन और पानी, बिनसे सृष्टि कहां लौ गनी।
बिस्नु लोक बिनसे छिन मांही, हौं देखा परलै की छांही।

॥ साखी॥

मच्छ रूप माया भई, जबरहिं खेले अहेर।
विधि हरि हर नहिं ऊबरे, सुन नर मुनि केहि केर॥

रमैनी-47

जरासिंधु सिसुपाल संहारा, सहस्त्रार्जुन छल ते मारा।
बड़ छल रावन सो गौ बीती, लंका रहल कंचन की भीती।
दुरजोधन अभिमानहि गैऊ, पांडव केर मर्म नहिं पैऊ।
माया के डिंभ गैल सभ राजा, उत्तम मद्धिम बाजन बाजा।
छौ चकवे बिति धरनि समाना, एको जीव परतीत न आना।
कहं लगि कहौं अचेतहि गैऊ, चेत अचेत झगरा एक भैऊ।

॥ साखी॥

ई माया जग मोहिनी, मोहिसि सब जग धाय।
हरीचन्द सत कारने, घर घर सोक बिकाय॥

रमैनी-48

मानिकपुर कबीर बसेरी, मद्दति सुनी शेख तकी केरी।
ऊ जे सुनी जौनपुर थाना, झूंसी सुनि पीरन को नामा।
इकइस पीर लिखे तेहि ठामा, खतमा पढ़ैं पैगम्बर नामा।
सुनी बोल मोहि रहा न जाई, देखि मुकरबा रहा भुलाई।
हबी नबी नबी के कामा, जहं लौ अमल सो सबै हरामा।

॥ साखी॥

शेख अकरदी शेख सकरदी, मानहु वचन हमार।
आदि अंत उतपति प्रलय, देखहु दृष्टि पसार॥

रमैनी-49

दर की बात कहौ दरबेसा, बादशाह है कौने भेसा।
कहां कूच कहं करै मुकामा, मैं तोहि पूछौं मुसलमाना।
लाल जरद की नाना बाना, कवन सुरति के करहु सलामा।
काजी काज करहु तुम कैसा, घर-घर जबह करावहु भैसा।
बकरी मुरगी किन फुरमाया, किसके हुकुम तुम छुरी चलाया।
दरद न जानहु पीर कहावहु, बैता पढ़ि-पढ़ि जग भरमावहु।
कहहिं कबीर एक सैयद कहावै, आपु सरीखे जग कबुलावै।

॥ साखी॥

दिन को रोजा रहतु है, राति हनत है गाय।
यह खून वह बंदगी, क्यों कर खुसी खोदाय॥

रमैनी-50

कहइत मोहि भयल जुग चारी, समुझत नाहिं मोर सुत नारी।
बंसहि आगि लगि बंसै जरिया, भर्म भूलि नर धंधे परिया।
हस्तिनि के फंदे हस्ती रहई, मृगी के फंदे मृगा परई।
लौहे-लोह जस काटि सयाना, त्रिया कै तत्तु त्रिया पहिचाना॥

॥ साखी॥

नारि रचंते पुरुषा, पुरुष रचंते नार।
पुर्षहिं पुर्षा जो रचै, ते बिरला संसार॥

रमैनी-51

जाकर नाम अकहुआ रे भाई, ताकर काह रमैनी गाई।
कहौं तातपर्ज एक ऐसा, जस पंथी बोहित चढ़ि वैसा।
है कछु रहनि गहनि की बाता, बैठा रहे चला पुनि जाता।
रहै बदन नहिं स्वांग सुभाऊ, मन अस्थिर नहिं बोलै काहू।

॥ साखी॥

तन राता मन जात है, मन राता तन जाय।
तन मन एकै होय रहै, हंस कबीर कहाय॥

रमैनी-52

जेहि कारन सिव अजहुं वियोगी, अंग विभूति लाय भौ जोगी।
सेस सहस मुख पार न पावा, सो अब खसम सही समुझावा।
ऐसी विधि जो मो कहं ध्यावै, छठये मांह दरस सो पावै।
कौनेहू भाव दिखाई देऊं, गुप्तै रहौ स्वभाव सब लेहो।

॥ साखी॥

कहहिं कबीर पुकारि के, सभ का उहै विचार।
कहा हमार मानै नहीं, कैसे छूटै भ्रम जार॥

रमैनी-53

महादेव मुनि अंत न पाया, उमा सहित उन्ह जन्म गंवाया।
उनहुते सिध साधक नहिं कोई, मन निश्चय कहु कैसे होई।
जौ लगि तन में आहै सोई, तब लगि चेति न देखै कोई।
तब चेतिहौ जब तजिहहु प्राना, भया अयान तब मन पछिताना।
इतना सुनत निकट चलि आई, मन का विकार नहिं छूटी भाई।

॥ साखी॥

तीनि लोक मुवा कौ आय के, छूटि न काहु कि आस।
इक अंधरे जग खाइया, सबका भया बिनास॥

रमैनी-54

मरि गए ब्रह्मा कासी के वासी, सीव सहित मुए अविनासी।
मथुरा मरिगो कृस्न गुवारा, मरि मरि गए दसौ अवतारा।
मरि मरि गए भगति जिन ठानी, सरगुन महं निरगुन जिनि आनी।

॥ साखी॥

नाथ मछंदर बांचे नहीं, गोरख दत्त औ व्यास।
कहहिं कबीर पुकारिकै, ई सभ परे काल के फांस॥

रमैनी-55

गए राम औ गए लछमना, संग न गई सीता अस धना।
जात कौरवहिं लागु न बारा, गए भोज जिन साजल धारा।
गए पांडु कुन्ती ऐसी रानी, गये सहदेव जिन बुधि मति ठानी।
सर्व सोने की लंक उठाई, चलत बार कछु संग न लाई।
जाकी कुरिया अंतरिछ छाई, सो हरिचन्द देखल नहिं जाई।
मुरुख मानुसा बहुत संजोवै, अपने मरे अवर लगि रोवै।
ई ना जानै अपनौं मरि जैबे, टका दस बढ़ै अवर लै खैबे।

॥ साखी॥

अपनी अपनी करि गए, लागि न काहु के साथ।
अपनी करि गो रावणा, अपनी दसरथ नाथ॥

रमैनी-56

दिन दिन जरै जलनी के पाऊं, गाढ़े जाय न उमंगे काऊं।
कंध न देइ मसखरी करई, कहु धौं कौनि भांति निस्तरई।
अकरम करै औ करम को धावै, पढ़ि गुनि वेद जगत समुझावै।
छूंछे परै अकारथ जाई, कहहिं कबीर चित्त चेतहु भाई।

रमैनी-57

क्रितिया सूत्र लोक एक अहई, लाख पचास कै आयू कहई।
विद्या वेद पढ़ै पुनि सोई, वचन कहत परतछै होई।
पैठी बात विद्या के पेटा, बाहूक भर्म भया संकेता।

॥ साखी॥

खग खोजन को तुम परे, पीछे अगम अपार।
बिनु परचै कस जानिहौ, कबीर झूठा है हंकार॥

रमैनी-58

तैं सुत मानु हमारी सेवा, तो कंह राज देइहों देवा।
अगम दूर्गम गढ़ देउं छुड़ाई, औरौ बात सुनहु कछु आई।
उतपति परले देउं देखाई, करहु राज सुख विलसहु जाई।
एकौ बार न होइहै बांको, बहुरि जन्म नहिं होइहै ताको।
जाई पाप सुख होइहैं घना, निस्चै वचन कबीर कै माना।

॥ साखी॥

साधु संत तेई जना, जिन्ह मानहिं वचन हमार।
आदि अंत उतपति प्रलय, देखहु दृष्टि पसार॥

रमैनी-59

चढ़त चढ़ावत भंड़हर फोरी, मन नहिं जानै केकर चोरी।
चोर एक मूसै संसारा, बिरला जन कोइ बूझनि हारा।
स्वर्ग पताल भूमि लै बारी, एकै राम सकल रखवारी।

॥ साखी॥

पाहन होय होय सब गए, बिनु भितियन के चित्र।
जासों कियहु मिताईया, सो धन भया न हित्त॥

रमैनी-60

छांड़हु पति छांड़हु लबराई, मन अभिमान टूटि तब जाई।
जिन ले चोरी भिच्छा खाहीं, सो बिरवा पलुहावन जाहीं।
पुनि सम्पति औ पति को धावै, सो बिरवा संसार लै आवै।

॥ साखी॥

झूठ-झूठ के डारहु, मिथ्या यह संसार।
तेहि कारन मैं कहत हौं, जाते होय उबार॥

रमैनी-61

धर्म कथा जो कहतै रहई, लाबरी उठि जो प्रातै कहई।
लाबरि बिहाने लाबरि संझा, इक लाबरि बसे हिरदया मंझा।
रामहुं केर मरमु नहिं जाना, लै मति ठानिन्हि वेद पुराना।
वेदहु केर कहल नहिं करई, जरतहिं रहै सुस्त नहिं परई।

॥ साखी॥

गुनातीत के गावते, आपुहिं गए गंमाय।
माटी का तन माटी मिलिगौ, पवनहिं पवन समाय॥

रमैनी-62

जो तू करता वरन विचारा, जन्मत तीनि दण्ड अनुसारा।
जन्मत सूद्र मुए पुनि सूद्रा, कृतम जनेउ डारि जग धन्धा।
जो तू ब्राह्मन ब्रह्मनी को जाया, और राह ते काहे न आया।
जो तू तुरुक तुरुकिनी जाया, पेटे काहे न सुन्नति कराया।
कारी पियरी दुहहू गाई, ताकर दूध देहु बिलगाई।
छाड्डु कपट नर अधिक सयानी, कहहिं कबीर भजु सारंगपानी।

रमैनी-63

नाना रूप वरन एक कीन्हा, चारि वरन उन्ह काहु न चीन्हा।
नष्ट गए करता नहिं चीन्हा, नष्ट गए औरहिं मन दीन्हा।

नष्ट गए जिन्ह वेद बखाना, वेद पढ़ै पै भेद न जाना।
विमलख करै नैन नहिं सूझा, भया अयान तब कछुवौ न बूझा।

॥ साखी॥

नाना नाच नचाय के, नाचै नट के भेख।
घट घट अविनासी बसै, सुनहु तकी तुम सेख॥

रमैनी-64

काया कंचन जतन कराया, बहुत भांति कै मन पलटाया।
जौ सौ बार कहौं समुझाई, तैयो धरो छोरि नहीं जाई।
जन के कहे जनै रहि जाई, नवौ निद्धि सिद्धि तिन पाई।
सदा धर्म जाकै हृदया बसई, राम कसौटी कसतै रहई।
जौ रे कसावै अनतै जाई, सो बाउर आपुहि बौराई।

॥ साखी॥

तातै परी काल की फांसी, करहु आपनो सोच।
जहां संत तहां संत सिधाये, मिलि रहा पोचहि पोच॥

रमैनी-65

अपने गुण को अवगुण कहहू, इहै अभाग जो तुम न विचारहू।
तूं जियरा बहुतै दुख पावा, जल बिनु मीन कौन संच पावा।
चातृक जलहल आसै पासा, स्वांग धरै भवसागर की आसा।
चातृक जलहल भरै जो पासा, मेघ न बरसे चले उदासा।
राम नाम इहै निजु सारा, औरो झूठ सकल संसारा।
हरि उतंग तुम जाति पतंगा, यम घर कियहु जीव को संगा।
किंचित है सपने निधि पाई, हिय न समाय कहां धरौं छिपाई।
हिय न समाय छोरि नहिं पारा, झूठा लोभ किछउ न विचारा।
सुमृति कीन्ह आपु नहिं माना, तरुवर तर छर छार हो जाना।
जिव दुर्मति डोले संसारा, ते नहिं सूझे वार न पारा।

॥ साखी॥

अन्ध भया सब डोलै, कोई न करै विचार।
कहा हमार मानै नहीं, कैसे छूटै भ्रम जार॥

रमैनी-66

सोई हित बंधु मोहि भावै, जात कुमारग मारग लावै।
सो सयान मारग रहि जाई, करै खोज कबहुं न भुलाई।
सो झूठा जो सुत को तजई, गुर की दया राम ते भजई।
किंचित है एक तेज भुलाना, धन सुत देखि भया अभिमाना।

॥ साखी॥

दिया न खताना किया पयाना, मन्दिर भया उजार।
मरि गए सो मरि गए, बांचे बांचनिहार॥

रमैनी-67

देह हलाय भक्ति नहिं होई, स्वांग धरे नर बहु विधि जोई।
धींगी धींगा भलो न माना, जो काहू मोहि हृदया जाना।
मुख कछु और हृदय कछु आना, सपनेहु काहु मोहि नहिं जाना।
ते दुख पइहैं ई संसारा, जो चेतहु तो होय उबारा।
जो गुरु किंचित निन्दा करई, सूकर श्वान जन्म ते धरई।

॥ साखी॥

लख चौरासी जीव जन्तुमें, भटकि भटकि दुख पाव।
कहहिं कबीर जो रामहिं जानै, सो मोहिं नीके भाव॥

रमैनी-68

तेहि वियोगते भयउ अनाथा, परेउ कुंज बन पावै न पन्था।
वेदो नकल कहै जो जाने, जो समझै सो भलो न माने।
नटवट विद्या खेलै जो जानै, तेहि गुण को ठाकुर भल मानै।
उहै जो खेलै सब घट माहीं, दूसर कै कछु लेखा नाहीं।
भलो पोच जो अवसर आवै, कैसहु कै जन पूरा पावै।

॥ साखी॥

जेकर शर तेहि लागे, सोइ जानेगा पीर।
लागे तो भागे नहीं, सुख सिन्धु निहार कबीर॥

रमैनी-69

ऐसा योग न देखा भाई, भूला फिरै लिये गफिलाई।
महादेव को पन्थ चलावै, ऐसो बड़ो महन्त कहावै।
हाट बजारे लावै तारी, कच्चा सिद्ध माया प्यारी।
कब दत्ते मावासी तोरी, कब शुकदेव तोपची जोरी।
नारद कब बन्दूक चलाया, ब्यासदेव कब बम्ब बजाया।
करहिं लराई मति के मन्दा, ई अतीत की तरकसबन्दा।
भये विरक्त लोभ मन ठाना, सोना पहिरि लजावै बाना।
घोरा घोरी कीन्ह बटोरा, गांव पाय जस चले करोरा।

॥ साखी॥

सुन्दरी न सोहै, सनकादिक के साथ।
कबहुंक दाग लगावै, कारी हांड़ी हाथ॥

रमैनी-70

बोलना कासों बोलिय (रे) भाई, बोलत ही सब तत्तु नसाई।
बोलत बोलत बाढ़ विकारा, सो बोलिये जो परै विचारा।
मिलै जु संत वचन दुइ कहिए, मिलै असंत मौन होय रहिए।
पण्डित सो बोलिये हितकारी, मूरुख ते रहिये झख मारी।
कहहिं कबीर अर्ध घट डोले, पूरा होय विचार लै बोले।

रमैनी-71

सोग बधावा जिन्ह सम कै माना, ताकि बात इन्द्रहु नहिं जाना।
जटा तोरि पहिरावैं सेली, जोग जुक्ति की गर्व दुहेली।
आसन उड़ाये कौन बड़ाई, जैसे कौवा चील्ह मंड़राई।
जैसी भीत तैसि है नारी, राजपाट सब गनै उजारी।
जस नरक तस चंदन जाना, जस बाउर तस रहै सयाना।
लपसी लौंग गनै एक सारा, खांड़ छाड़ि मुख फांकै छारा।

॥ साखी॥

इहै विचार विचारते, गये बुद्धि बल चेत।
दुइ मिलि एकै होय रहा, (मैं) काहि लगावौं हेत॥

रमैनी-72

नारि एक संसारहि आई, माय न बाके बापहिं जाई।
गोड़ न मूड न प्रान अधारा, तामंह भरमि रहा संसारा।
दिना सात लौं उनकी सही, बुद अदबुद अचरज का कही।
बाकी बंदन करे सब कोई, बुद अदबुद अचरज बड़ होई।

॥ साखी॥

मूस बिलाई एक संग, कहु कैसे रहि जाय।
अचरज एक देखो हो संतो, हस्ती सिंघहि खाय॥

रमैनी-73

चली जात देखी एक नारी, तर गागरि ऊपर पनिहारी।
चली जात वह बाटहिं बाटा, सोवनहार के ऊपर खाटा।
जाड़न मरै सफेदी सौरी, खसम न चीन्है घरनि भौ बौरी।
सांझ सकार दिया लै बारै, खसम छोंडि संबरे लगवारै।
वाही के रस निसु दिन राची, पिय सो बात कहै नहिं सांची।
सोवत छांड़ि चली पिय अपना, ई दुःख अबधौं कहै केहि सना।

॥ साखी॥

अपनी जांघ उघारि कै, अपनी कही न जाय।
की चित जानै आपना, की मेरो जन गाय॥

रमैनी-74

तहिया होते गुप्त अस्थूल न काया, न ताके सोग ताकि पै माया।
कंवल पत्र तरंग एक माहीं, संगहिं रहै लिप्त पै नाहीं।

आस ओस अण्ड मा रहई, अगणित अण्ड न कोई कहई।
निराधार आधार ले जानी, राम नाम ले उचरी बानी।
धर्म कहै सब पानी अहई, जाती के मन पानी अहई।
ढोर पतंग सरे घरियारा, तेहि पानी सब करै अचारा।
फन्द छोड़ि जो बाहर होई, बहुरि पन्थ नहिं जोहै सोई।

॥ साखी॥

भरम का बांधा यह जग, कोई न करै विचार।
एक हरि की भक्ति जाने बिना, भौ बूड़ि मुवा संसार॥

रमैनी-75

तेहि साहेब के लागहु साथा, दुइ दुख मेटि के होहु सनाथा।
दशरथ कुल अवतरि नहिं आया, नहिं लंका के राव सताया।
नहिं देवकी के गर्भहि आया, नहीं यशोदा गोद खेलाया।
पृथ्वी रवन धवन नहिं करिया, पैठि पताल नहीं बलि छलिया।
नहिं बलिराजा सो मांड़ल रारी, नहिं हरणाकुश बंधल पछारी।
बराह रूप धरणी नहिं धरिया, क्षत्री मारि निक्षत्री नहिं करिया।
नहिं गोबर्धन कर गहि धरिया, नहिं ग्वालन संग बन बन फिरिया।
गण्डुकी शालिग्राम नहिं कूला, मच्छ कच्छ होय नहिं जल डोला।
द्वारावती शरीर नहिं छाड़ा, ले जगन्नाथ पिंड नहिं गाड़ा।

॥ साखी॥

कहहिं कबीर पुकारि के, वै पन्थे मति भूल।
जेहि राखेउ अनुमान कै, सो थूल नहीं अस्थूल॥

रमैनी-76

माया मोह सकल संसारा, इहै विचार न काहु विचारा।
माया मोह कठिन है फन्दा, करे विवेक सोई जन बन्दा।
राम नाम ले बेरा धारा, सो तो ले संसारहि पारा।

॥ साखी॥

राम नाम अति दुर्लभ, औरे ते नहिं काम।
आदि अन्त औ युग-युग, मोहि रामहि ते संग्राम॥

रमैनी-77

एकै काल सकल संसारा, एक नाम है जगत पियारा।
त्रिया पुरुष कछु कथ्यो न जाई, सर्बरूप जग रहा समाई।
रूप निरूप जाय नहिं बोली, हलुका गरुवा जाय न तौली।
भूख न तृषा धूप नहिं छाहीं, दुख सुख रहित रहै तेहि माहीं।

।साखी॥

अपरं परं रूप मगुरंगी, आगे रूप निरूप न भाय।
बहुत ध्यान कै खोजिया, नहिं तेहि संख्या आय॥

रमैनी-78

मानुष जन्म चूकेहु अपराधी, एहि तन केर बहुत हैं सांझी।
तात जननी कहै पुत्र हमारा, स्वारथ लागि कीन्ह प्रतिपाला।
कामिनि कहै मोर पिय आही, बाघिनि रूप गरासन चाही।
पुत्र कलत्र रहैं लौ लाई, यम की नाईं रहैं मुंह बाई।
काग गीध दोउ मरन बिचारैं, सूकर स्वान दोउ पंथ निहारैं।
अगिनि कहै मैं ई तन जारौं, पानि कहै मैं जरत उबारौं।
धरती कहै मोहिं मिलि जाई, पौन कहै संग लेहुं उड़ाई।
तेहि घर को घर कहै गंवारा, सो बैरी होय गले तुम्हारा।
सो तन तुम आपन करि जानी, विषय स्वरूप भूले अग्यानी।

॥साखी॥

इतने तनके साझिया, जन्मौ भरि दुख पाव।
चेतत नाहीं मुग्ध नर बौरे, मोर मोर गोहराव॥

रमैनी-79

बढ़वत बढ़ी घटावत छोटी, परखत खरी परखावत खोटी।
केतिक कहौं कहां लौ कही, औरौ कहौं परै जो सही।
कहे बिना मोहि रहा न जाई, बिरही लै लै कूकुर खाई।

॥ साखी॥

खाते खाते जुग गया, बहुरि न चेतहु आय।
कहहिं कबीर पुकारिकै, ये जिब अचेतहि जाय॥

रमैनी-80

बहुतक साहस करु जिय अपना, तेहि साहब सों भेंट न सपना।
खरा खोट जिन नहिं परखाया, चहत लाभ तिन्ह मूल गमाया।
समुझि न परै पातरी मोटी, ओछी गांठि सबै भौ खोटी।
कहै कबीर केहिं देहौ खोरी, जब चलिहौ झिझि आसा तोरी।

॥ साखी॥

झीं झीं आसा मंह लगे, ज्ञानी पंडित दास।
पार न पावहिं बापुरे, भरमत फिरहिं उदास॥

रमैनी-81

देव चरित्र सुनहु रे भाई, सो तो ब्रह्मा घियेऊ नसाई।
ऊ जे सुनी मंदोदरि तारा, जेहि घर जेठ सदा लगबारा।
सुरपति जाय अहिल्या छरी, सुरगुरु घरनि चंद्रमै हरी।
कहै कबीर हरि के गुन गाया, कुंती कर्ण कुंवारहिं जाया।

रमैनी-82

सुख के वृक्ष एक जगत उपाया, समुझि न परै बिषै कछु माया।
छव छत्री पत्री जुग चारी, फल दुइ पाप पुन्य अधिकारी।
स्वाद अनन्त कछु बरनि न जाई,ी करि चरित्र सो ताहि समाई।
नटवर सारे साज साजिया, जो खेलै सो देख बाजिया।
मोहा बपुरा जुक्ति न देखा, सिव सक्ति बिरंचि नहिं पेखा।

॥ साखी॥

परदे परदे चलि गए, समुझि परी नहिं बानि।
जो जानहि सो बांचिहै, नहीं तो होत सकल की हानि॥

रमैनी-83

क्षत्री करे क्षत्रिया धर्मा, सवाई वाके बाढ़े कर्मा।
जिन अवधू गुरु ज्ञान लखाया, ताकर मन ताही ले धाया।
क्षत्री सो जो कुटुम सो जूझै, पांचौ मेटि एक कै बूझै।
जीव मारि जीव प्रतिपारे, देखत जन्म आपनो हारे।
हाले करे निशाने घाऊ, जूझि परे तहां मन्मथ राऊ।

॥ साखी॥

मन्मथ मरै न जीवै, जीवहि मरण न होय।
शून्य-सनेही राम बिनु, चले अपन पौ खोय॥

रमैनी-84

ये जियरा तैं अपने दुखहिं सम्हार, जेहि दुख व्यापि रहा संसार।
माया मोह बंधा सब लोई, अल्प लाभ मूल गौ खोई।
मोर तोर में सबै बिगुर्चा, जननी गर्भ वोद्र मा सूता।
बहुतक खेल खेलें बहु रूपा, जन भंवरा अस गये बहूता।
उपजि बिनशि फिर जुइनी आवै, सुख को लेश सपनेहु नहिं पावै।
दुख सन्ताप कष्ट बहु पावै, सो न मिला जो जरत बुझावै।
मोर तोर में जरे जग सारा, धृग स्वारथ झूठा हंकारा।
झूठी आस रही जग लागी, इन्हते भागि बहुरि पुनि आगी।
जेहि हित के राखेउ सब लोई, सो सयान बांचा नहिं कोई।

॥ साखी॥

आपु आपु चेते नहीं, कहौं तो रुसवा होय।
कहहिं कबीर जो आपु न जागे, निरास्ति अस्ति न होय॥

❀ इति प्रथम प्रकरण—रमैनी ❀
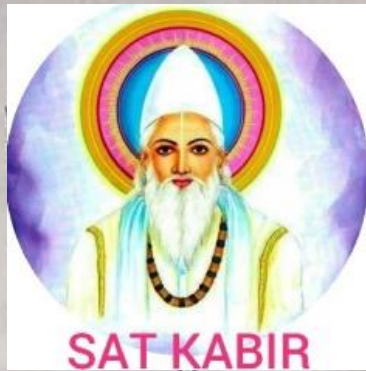
मूल बीजक

द्वितीय प्रकरण : सबद

सबद-1

संतो भक्ती सतगुर आनी।
नारी एक पुरुष दुइ जाए, बूझो पंडित ज्ञानी॥
पाहन फोरि गंग एक निकरी, चहुं दिसि पानी पानी।
तेहि पानी दुइ पर्वत बूड़े, दरिया लहरि समानी॥
उड़ि माखी तरवर को लागी, बोलै एकै बानी।
वहि माखी को माखा नाहीं, गर्भ रहा बिनु पानी॥
नारी सकल पुरुष वहि खायो, ताते रहेउं अकेला।
कहहिं कबीर जो अबकी, बूझै, सोई गुरु हम चेला॥

सबद-2

संतो जागत नींद न कीजै।
काल न खाय कल्प नहिं ब्यापै, देह जरा नहिं छीजै॥
उलटी गंग समुद्रहि सोखै, शशि औ सूरहि ग्रासै।
नौग्रह मारि रोगिया बैठो, जल में बिम्ब प्रकासै॥
बिनु चरणन को दहुंदिश धावै, बिनु लोचन जग सूझै।
संशय उलटि सिंह को ग्रासे, ई अचरज कोई बूझै॥

औंधे घड़ा नहीं जल बूड़े, सीधे सो जल भरिया।
जेहि कारण नर भिन्न भिन्न करें, सो गुरु प्रसादै तरिया॥
बैठि गुफा में सब जग देखे, बाहर किछउ न सूझै।
उलटा बाण पारिधिहि लागै, सूरा होय सो बूझै॥
गायन कहै कबहुं नहिं गावै, अनबोला नित गावै।
नटवट बाजा पेखनी पेखै, अनहद हेत बढ़ावै॥
कथनी बदनी निजु कै जोवै, ई सब अकथ कहानी।
धरती उलटि अकाशहि बेधै, ई पुरुषन की बानी॥
बिना पियाला अमृत अंचवै, नदी नीर भरि राखै।
कहहिं कबीर सो युग-युग जीवै, जो राम सुधारस चाखै॥

सबद-3

संतो घर में झगरा भारी।
राति दिवस मिलि उठि उठि लागै, पांच ढोटा एक नारी॥
न्यारो न्यारो भोजन चाहैं, पांचौ अधिक सवादी।
कोई काहु को हटा न मानै, आपुहि आप मुरादी॥
दुर्मति केर दोहागिनि मेटै, ढोटहि चांप चपेरे।
कहै कबीर सोई जन मेरा, जो घर की रारि निबेरे॥

सबद-4

संतो देखत जग बौराना।
सांच कहौं तो मारन धावै, झूठे जग पतियाना॥
नेमी देखा धरमी देखा, प्रातः करै असनाना।
आतम मारि पखानहि पूजै, उनमें कछु नहिं ज्ञाना॥
बहुतक देखा पीर औलिया, पढ़ै कितेब कुराना।
कै मुरीद तदबीर बतावैं, उनमें उहै जो ज्ञाना॥
आसन मारि डिंभ धरि बैठे, मन में बहुत गुमाना।
पीतर पाथर पूजन लागे, तीरथ गर्व भुलाना॥

टोपी पहिरे माला पहिरे, छाप तिलक अनुमाना।
साखी सब्दहि गावत भूले, आतम खबरि न जाना॥
हिन्दू कहै मोहि राम पियारा, तुर्क कहै रहिमाना।
आपस में दोउ लरि लरि मूए, मर्म न काहू जाना॥
घर घर मन्तर देत फिरत हैं, महिमा के अभिमाना।
गुरु सहित सिष्य सब बूड़े, अंत काल पछिताना॥
कहै कबीर सुनो हो संतो, ई सब भर्म भुलाना।
केतिक कहौं कहा नहिं मानै, सहजै सहज समाना॥

सबद-5

संतो अचरज एक भौ भारी, कहौं तो को पतियाई।
एकै पुरुष एक है नारी, ताकर करहु बिचारा।
एकै अंड सकल चौरासी, भर्म भुला संसारा॥
एकै नारी जाल पसारा, जग महं भया अंदेसा।
खोजत खोजत अंत न पाया, ब्रह्मा विष्णु महेसा॥
नाग फांस लीये घट भीतर, मूसिन सब जग झारी।
ग्यान खडग बिनु सब जग जूझै, पकरि न काहू पाई॥
आपुहि मूल फूल फुलवारी, आपुहि चुनि चुनि खाई।
कहहिं कबीर तेई जन उबरे, जेहि गुरु लिया जगाई॥

सबद-6

संतो अचरज एक भौ भारी, पुत्र धइल महतारी।
पिता के संगहि भई बावरी, कन्या रहलि कुंवारी।
खसमहिं छोड़ि ससुर संग गौनी, सो किन लेहु बिचारी॥
भाई के संग सासुर गौनी, सासुहि सावत दीन्हा।
ननद भौज परपंच रच्यौ है, मोर नाम कहि लीन्हा॥
समधी के संग नाहीं आई, सहज भई घरबारी।
कहै कबीर सुनो हो संतो, पुरुष जन्म भौ नारी॥

सबद-7

संतो कहौं तो को पतियाई, झूठ कहत, सांच बनि आई।
लौके रतन अबेध अमोलिक, नहिं गाहक नहिं सांई।
चिमिकि चिमिकि चिमिकै दृग दुहु दिस, अर्ब रहा छिरिआई॥
आपै गुरु कृपा कछु कीन्हा, निर्गुन अलख लखाई।
सहज समाधि उनमुनी जागै, सहज मिलै रघुराई॥
जहं जहं देखौ तहं तहं सोई, मन मानिक बेध्यो हीरा।
परम तत्व गुरु सो पावै, कहै उपदेश कबीरा॥

सबद-8

संतो आवै जाय सो माया।
है प्रतिपाल काल नहिं वाके, ना कहूं गया न आया॥
का मकसूद न मच्छ कच्छ न होई, संखासुर न संहारा।
है दयाल द्रोह नहिं वाके, कहहु कौन को मारा॥
वै करता नहिं बराह कहाये, धरनि धरो नहिं भारा।
ई सब काम साहेब के नाहीं, झूठ कहै संसारा॥
खंभ फोरि जो बाहर होई, तेहि पतिजै सब कोई।
हिरनाकुस नख उदर बिदारे, सो कर्त्ता नहिं होई॥
बावन रूप न बलि को जांचे, जो जांचै सो माया।
बिना विवेक सकल जग भरमै, माया जग भरमाया॥
परसुराम छत्री नहिं मार्‌यो, ई छल माया कीन्हा।
सतगुरु भक्ति भेद नहिं जाने, जीवहिं मिथ्या कीन्हा॥
सिरजनहार न ब्याही सीता, जल पषान नहिं बंधा।
वै रघुनाथ एक कै सुमिरै, जो सुमिरै सो अंधा॥
गोपी ग्वाल न गोकुल आए, करते कंस न मारा।
है मेहरबान सबहिन को साहेब, ना जीता ना हारा॥

वै करता नहिं बौद्ध कहावै, नहीं असुर संहारा।
ज्ञानहीन कर्ता के (सब) भर्मे, माया जग भरमाया।।
वै करता नहिं भये निकलंकी, नहीं कलिंगहि मारा।
ई छलबल सब माया कीन्हा, यतिन सतिन सब टारा।।
दस अवतार ईश्वरी माया, कर्त्ता कै जिन पूजा।
कहै कबीर सुनो हो संतो, उपजै खपै सो दूजा।।

सबद-9

संतो बोले ते जग मारै।
अनबोले ते कैसक बनिहै, सब्दहिं कोइ न विचारै।।
पहिले जन्म पूत को भयऊ, बाप जनमिया पाछे।
बाप पूत की एकै नारी, ई अचरज को काछे।।
दुंदुर राजा टीका बैठे, बिखहर करै खवासी।
स्वान बापुरो धरनि ढाकनो, बिल्ली घर की दासी।।
कार दुकार कारकरि आगे, बैल करै पटवारी।
कहैं कबीर सुनो हो संतो, भैंसे न्याव निवारी।।

सबद-10

संतो राह दुनौ हम दीठा।
हिन्दू तुरुक हटा नहिं मानैं, स्वाद सबनि को मीठा।।
हिन्दू बरत एकादसि साधैं, दूध सिधारा सेती।
अन्न को त्यागैं मन को नहिं हटकैं, पारन करैं सगोती।।
तुरुक रोजा निमाज गुजारैं, बिसमिल बांग पुकारैं।
इनको भिस्त कहां ते होइहै, जो सांझै मुरगी मारैं।।
हिन्दु कि दया मेहर तुरकन की, दूनो घट से त्यागी।
ई हलाल वै झटका मारैं, आगि दुनौ घर लागी।।
हिन्दू तुरुक की एक राह है, सतगुरु सोई लखाई।
कहहिं कबीर सुनहु हो संतो, राम न कहेउ खुदाई।।

सबद-11

संतो पांडे निपुन कसाई।
बकरा मारि भैंसा पर धावैं, दिल में दर्द न आई॥
करि अस्नान तिलक दै बैठे, बिधि से देवि पुजाई।
आतम राम पलक में बिनसे, रुधिर कि नदी बहाई॥
अति पुनीत ऊंचे कुल कहिए, सभा मांहि अधिकाई।
इन्हते दीक्षा सब कोई मांगै, हंसि आवै मोहि भाई॥
पाप कटन को कथा सुनावहिं, कर्म करावहिं नीचा।
हम तो दोउ परस्पर देखा, जम लाए हैं खींचा॥
गाय बधे तेहि तुरुक कहिए, इन्हते वै क्या छोटे।
कहहिं कबीर सुनहु हो संतो, कलि में ब्राह्मन खोटे॥

सबद-12

संतो मते मातु जन रंगी।
पियत पियाला प्रेम सुधारस, मतवाले सतसंगी॥
अरध उरध ले भट्ठी रोपिनि, लेत कसारस गारी।
मूंदे मदन काटि कर्म कस्मल, संतत चुवत अगारी॥
गोरखदत्त वसिष्ट व्यास कपि, नारद सुक मुनि जोरी।
बैठे सभा संभु सनकादिक, तहं फिरे अधर कटोरी॥
अंबरीष और याज्ञ जनक जड़, शेष सहस मुख पाना।
कहं लौं गनौं अनंत कोटि लौं, अमहल महल दिवाना॥
ध्रुव प्रहलाद बिभीखन माते, माती सेवरी नारी।
निर्गुन ब्रह्म माते बिन्द्राबन, अजहूं लागि खुमारी॥
सुर नर मुनि यति पीर औलिया, जिन रे पिया तिन्ह जाना।
कहहिं कबीर गूंगे की सक्कर, क्यों करि करै बखाना॥

सबद-13

राम तेरी माया दुंद मचावै।
गति मति वाकी समुझि परै नहिं, सुर नर मुनिहिं नचावै।।
क्या सेमर तेरी साखा बढ़ाए, फूल अनूपम मानी।
केतिक चातृक लागि रहे हैं, चाखत रुवा उड़ानी।।
काह खजूर बड़ाई तेरी, फल कोई नहिं पावै।
ग्रीसम ऋतु जब आइ तुलानी, छाया काम न आवै।।
अपना चतुर और को सिखवै, कनक कामिनी स्यानी।
कहैं कबीर सुनो हो संतो, रामचरन ऋतु मानी।।

सबद-14

रामुरा संसै गांठि न छूटै, तातै पकरि पकरि जम लूटै।।
होय कुलीन मिसकीन कहावै, तूं जोगी संन्यासी।
ज्ञानी गुनी सूर कवि दाता, या मति किनहु न नासी।।
सुम्रिति वेद पुरान पढ़ै सब, अनुभौ भाव न दरसै।
लोह हिरन्य होय धौं कैसे, जो नहिं पारस परसै।।
जियत न तरेउ मुए का तरिहौ, जियतहि जो न तरे।
गहि परतीत कीन्ह जिन्ह जासो, सोइ तहां अमरे।।
जो कछु कियो ग्यान अग्याना, सोई समुझ सयाना।
कहै कबीर तासों का कहिए, जो देखत दृष्टि भुलाना।।

सबद-15

रामुराय चली बिनांवन माहो, घर छोड़ै जात जुलाहा हो।।
गज नव गज दस गज उनइस की, पुरिया एक तनाई।
सात सूत नौ गंड बहत्तरि, पाट लागु अधिकाई।।
ता पट तुला तुलै नहिं गजन अमाई, पैसन सेर अढ़ाई।
तामें घटे बढ़े रतियो नहीं, करकच करै घरहाई।।

नित उठि बैठि खसम सो बरबस, तापर लगी तिहाई।
भींगी पुरिया काम न आवै, जुलाहा चला रिसाई॥
कहहिं कबीर सुनो हो संतो, जिन यह सृष्टि बनाई।
छांडि पसार रांम भजु बउरे, भवसागर कठिनाई॥

सबद-16

रामुरा झीं झीं जंतर बाजै, कर चरन बिहूना नाचै॥
कर बिनु बाजै सुनै स्त्रवन बिनु, स्त्रवन सरोता सोई।
पाट न सुवस सभा बिनु अवसर, बूझहु मुनि जन लोई॥
इन्द्री विनु भोग स्वाद जिभ्या बिनु, अक्षय पिंड बिहूना।
जागत चोर मंदिर तहं मूसै, खसम अछत घर सूना॥
बीज बिनु अंकुर पेड़ बिनु तरवर, बिन फूले फल फरिया।
बांझ के कोख पुत्र अवतरिया, बिनु पग तरवर चढ़िया॥
मसि बिनु द्वात कलम बिनु कागद, बिनु अक्षर सुधि होई।
सुधि बिनु सहज ज्ञान बिनु ज्ञाता, कहैं कबीर जन सोई॥

सबद-17

रामहि गावै औरहि समझावै, हरि जाने बिनु बिकल फिरे॥
जेहि मुख वेद गायत्री उचरे, ताके बचन संसार तरे।
जाके पांव जगत उठि लागे, सो ब्राह्मण जीव बद्ध करे॥
आपन ऊंच नीच घर भोजन, घीन कर्म हठि वोद्र भरे।
ग्रहण-अमावस ढुकि-ढुकि मांगे, कर दीपक लिये कूप परे॥
एकादशी ब्रत नहिं जाने, भूत-प्रेत हठि हृदय धरे।
तजि कपूर गांठी विष बांधे, ज्ञान गवांये मुग्ध फिरे॥
छीजै साहु चोर प्रतिपाले, सन्त जना की कूटि करे।
कहहिं कबीर जिभ्या के लम्पट, यहि विधि प्राणी नर्क परे॥

सबद-18

राम गुन न्यारो न्यारो न्यारो।
अबुझा लोग कहां लौं बूझे, बूझनहार बिचारो॥
केतेहि रामचन्द्र तपसी से, जिन यह ज़ग बिटमाया।
केतेहि कान्ह भए मुरलीधर, तिन्ह भी अंत न पाया॥
मच्छ कच्छ औ ब्राह सरूपी, बावन नाम धराया।
केतेहि बौद्ध भए निकलंकी, तिन्ह भी अंत न पाया॥
केतेहि सिध साधक सन्यासी, जिन्ह बनवास बसाया।
केतेहि मुनिजन गोरख कहिए, तिन भी अंत न पाया॥
जाकी गति ब्रह्मै नहिं जाना, सिव सनकादिक हारे।
ताके गुन नर कैसेक पैहौ, कहहिं कबीर पुकारे॥

सबद-19

ये तत्तु राम जपो हो प्रानी, तुम बूझहु अकथ कहानी।
जाके भाव होत हरि ऊपर, जागत रैनि बिहानी॥
डाइनि डारे स्वनहा डोरे, सिंह रहै बन घेरे।
पांच कुटुम मिलि जूझन लागे, बाजन बाजु घनेरे॥
रेहु मृगा संशय बन हांके, पारथ बाणा मेलै।
सायर जरे सकल बन डाहे, मच्छ अहेरा खेलै॥
कहहिं कबीर सुनो हो सन्तो, जो यह पद अर्थावै।
जो यह पद को गाय विचारे, आप तरे और तारै॥

सबद-20

कोई राम रसिक रस पियहुगे, पियहुगे युग जियहुगे।
फल लंकृत बीज नहिं बोकला, शुक पंछी तहां रस खायो।
चुवै न बूंद अंग नहिं भीजै, दास भंवर सब संग लायो॥

निगम रसाल चारि फल लागे, तामे तीन समाई।
एक दूरि चाहै सभ कोई, जतन जतन कहु बिरले पाई॥
गए बसंत ग्रीषम ऋतु आई, बहुरि न तरुवर तर आवै।
कहै कबीर स्वामी सुख सागर, राम मगन होय सो पावै॥

सबद-21

राम न रमसि कौन डंड लागा, मरि जैबे का करिबे अभागा।
कोई तीरथ कोई मुंडित केसा, पाषंड मंत्र भर्म उपदेसा।
बिद्या वेद पढ़ि करै हंकारा, अंत काल मुख फांकै छारा।
दुखित सुखित होइ कुटुंब जेंवावै, मरण बेर एकसर दुख पावै।
कहै कबीर यह कलि है खोटी, जो रहै करवा सो निकसै टोटी॥

सबद-22

अवधू छाड़हू मन विस्तारा।
सो पद गहौ जाहिते सदगति, पारब्रह्म सो न्यारा॥
नहीं महादेव नहीं मोहम्मद, हरि हजरत कछु नाहीं।
आदम ब्रह्मा कछु नहिं होते, नहीं धूप नहिं छांही॥
असी सहस पैगम्बर नाहीं, सहस अठासी मूनी।
चन्द्र सूर्य तारागन नाहीं, मच्छ कच्छ नहिं दूनी॥
बेद कितेब सुम्रिति नहिं संजम, जीव नहीं परछाई।
बंग निमाज कलिमा नहिं होते, रामहु नाहिं खोदाई॥
आदि अन्त मन मध्य न होते, आतस पवन न पानी।
लख चौरासी जीव जंतु नहिं, साखी सबद न बानी॥
कहैं कबीर सुनो हो अवधू, आगे करहु बिचारा।
पूरन ब्रह्म कहां ते प्रगटे, किरतम किन उपचारा॥

सबद-23

अवधू कुदरति को गति न्यारी।
रंक निवाज करै वै राजा, भूपति करै भिखारी॥

यातै लौंगहिं हरफ ना लागै, चंदन फूल न फूलै।
मच्छ सिकारी रमै जंगल मैं, सिंघ समुन्दर झूलै॥
एरंड रूख करै मलयागिरि, चहुं दिसि फूटी बासा।
तीनि लोक ब्रह्माण्ड खण्ड मैं, अंधरा देख तमासा॥
पंगुला मेर सुमेर उलंघै, त्रिभुवन मुकुता डोलै।
गूंगा ग्यान बिग्यान प्रकासै, अदहद बांनी बोलै॥
अकासहि बांधि पतालिहि पठावै, शेष स्वर्ग पर राजै।
कहै कबीर राम हैं राजा, जो कछु करैं सो छाजै॥

सबद-24

अवधू सो योगी गुरु मेरा, जो यह पद का करे निबेरा॥
तरिवर एक मूल बिनु ठाढ़ा, बिनु फूले फल लागा।
शाखा पत्र किछू नहिं वाके, अष्ट गगन मुख गाजा॥
पौ बिनु पत्र करह बिनु तुम्बा, बिनु जिभ्या गुण गावै।
गावनहार के रूप न रेखा, सतगुरु होय लखावै॥
पन्छिक खोज मीन को मारग, कहैं कबीर दोउ भारी।
अपरम पार पार पुरुषोत्तम, मूरति की बलिहारी॥

सबद-25

अवधू वो तत्तु रावल राता, नाचै बाजन बाजु बराता।
मौर के माथे दुलहा दीन्हा, अकथ जोरि कहाता।
मड़ए के चारन समधी दीन्हा, पुत्र बिबाहल माता॥
दुलहिन लीपि चौक बैठारे, निरभय पद परगाशा।
भातै उलटि बरातै खायो, भली बनी कुसलाता॥
पानीग्रहन भयो भव मंडन, सुखमनि सुरति समानी।
कहैं कबीर सुनो हो संतो, बूझौ पंडित ज्ञानी॥

सबद-26

भाई रे बहोत बहोत क्या कहिये, कोइ बिरले दोस्त हमारे।
गढ़न भंजन संवारन आपै, ज्यों राम रखे त्यों रहिये॥
आसन पवन योग श्रुति सुमृति, जोतिष पढ़ि बैलाना।
छौ दर्शन पाखण्ड छियान्नवे, ये कल काहु न जाना॥
आलम दुनिया सकल फिरि आये, ये कल उहै न आना।
तजि करिगह जगत्र उचाये, मन मों मन न समाना॥
कहहिं कबीर योगी औ जंगम, फीकी उनकी आशा।
रामहि नाम रटै ज्यों चातक, निश्चय भक्ति निवासा॥

सबद-27

भाई रे अद्भुत रूप अनूप कथो है, कहौं तो को पतियाई।
जहं जहं देखौं तहं तहं सोई, सब घट रहा समाई॥
लछि बिनु सुख दरिद्र बिनु दुख है, नींद बिना सुख सोवै।
जस बिनु ज्योति रूप बिनु आसिक, ऐसो रत्न बिहूना रोवै॥
भ्रम बिनु गंजन मनि बिनु निरख, रूप बिना बहु रूपा।
थिति बिनु सुरति रहस बिनु आनंद, ऐसो चरित अनूपा॥
कहहिं कबीर जगत हरि मानिक, देखहु चित अनुमानी।
परिहरि लाख लोभ कुटुंब तजि, भजहु न सारंगपानी॥

सबद-28

भाई रे गइया एक बिरंचि दियो है, गइया भार अभार भौ भारी।
नौ नारी को पानि पियतु है, तृखा तेउ न बुझाई॥
कोठा बहत्तर औ लौ लावै, बज्र केंवार लगाई।
खूंटा गाड़ि डोरि दृढ़ बांधे, तइयों तोरि पराई॥
चारि वृक्ष छव साखा वाके, पत्र अठारह भाई।
एतिक लै गम कीहिस गइया, गइया अति रे हरहाई॥

ई सातो औरो हैं सातो, नौ औ चौदह भाई।
एति कले गइया खाय बढ़ायो, गइया तहुं न अघाई॥
पुरता में राती है गइया, स्वेत सींग है भाई।
अबरन बरन कछू नहिं वाके, खाद्य अखाद्यै खाई॥
ब्रह्मा विष्णु खोजि ले आए, सिव सनकादिक भाई।
सिद्ध अनंत वाके खोजि परे है, गइया किनहु न पाई॥
कहैं कबीर सुनो हो संतो, जो यह पद अर्थावै।
जो यहि पद को गाय बिचारै, आगे होय निरवाहै॥

सबद-29

भाई रे नयन रसिक जो जागै।
पारब्रह्म अविगत अविनासी, कैसेहु के मन लागै॥
अमली लोग खुमारी तृष्ना, कतहुं संतोष न पावै।
काम क्रोध दूनो मतवारे, माया भरि भरि आवै॥
ब्रह्म कुलाल चढ़ाइन भट्ठी, लै इन्द्री रस चाखै।
संगहि पोच है ज्ञान पुकारै, चतुरा होय सो पावै॥
संकट सोच पोच यह कलिमहं, बहुतक ब्याधि सरीरा।
जहंवा धीर गंभीर अति निस्चल, तहं उठि मिलहु कबीरा॥

सबद-30

भाई रे दुइ जगदीश कहां ते आया, कहु कौने बौराया।
अल्लाह राम करीमा केशव, हरि-हजरत नाम धराया॥
गहना एक कनक ते गहना, यामें भाव न दूजा।
कहन सुनन को दुई कर थापे, एक निवाज एक पूजा॥
वोही महादेव वोही मुहम्मद, ब्रह्मा आदम कहिये।
को हिन्दू को तुरुक कहावै, एक जिमी पर रहिये॥
वेद-कितेब पढ़ै वै कुतबा, वै मोलना वै पांड़े।
बेगर-बेगर नाम धराये, एक मिट्टी के भांड़े॥

कहहिं कबीर वै दूनों भूले, रामहि किनहु न पाया।
ये खसी वै गाय कटावै, बादिहि जन्म गमाया॥

सबद-31

हंसा संसय छूरी कुहिया, गइया पिवै बछरुवै दुहिया।
घर घर साउज खेलै अहेरा, पारथ ओटा लेई।
पानी मांहि तलफि गौ भूभुरि, धूरि हिलोरा देई॥
धरती बरसै बादर भीजै, भींट भए पौराऊं।
हंस उड़ाने ताल सुखाने, चहले बिंदा पांऊं॥
जौलों कर डोलै पगु चालै, तौलौं आस न कीजै।
कहै कबीर जेहि चलत न दीसै, तासु बचन क्या लीजै॥

सबद-32

हंसा हो चित चेतु सबेरा, इन्ह परपंच करल बहुतेरा।
पाषंड रूप रचो इन तिरगुन, तेहि पाषंड भूलल संसारा।
घर के खसम बधिक वै राजा, परजा का धौं करै विचारा॥
भगति न जानै भगत कहावै, तजि अमृत विष कैलिन सारा।
आगे बड़े ऐसही बूड़े, तिनहूं न मानल कहा हमारा॥
कहा हमार गांठि दृढ़ बांधे, निसि बासर रहियो हुसियारा।
ये कलि गुरु बड़े परपंची, डारि ठगौरी सब जग मारा॥
बेद कितेब दुइ फंद पसारा, तेहि फंदे परु आप बिचारा।
कहै कबीर ते हंस न बिसरै, जेहिमा मिले छुड़ावनहारा॥

सबद-33

हंसा प्यारे सरवर तजि कहं जाय।
जेहि सरवर बिच मोतिया चुगत होते, बहुबिधि केलि कराय॥
सूखे ताल पुरइन जल छांड़े, कमल गए कुम्हिलाय।
कहैं कबीर जो अबकी बिछुरे, बहुरि मिलो कब आय॥

सबद-34

हरिजन हंस दशा लिये डोले, निर्मलनाम चुनी चुनि बोले।
मुक्ताहल लिये चोंच लोभावै, मौन रहे कि हरि यश गावै।
मान सरोवर तट के बासी, राम चरण चित अन्त उदासी।
कागा कुबुधि निकट नहिं आवै, प्रतिदिन हंसा दर्शन पावै।
नीर-क्षीर का करे निबेरा, कहहिं कबीर सोई जन मेरा।

सबद-35

हरि मोर पिउ मैं राम की बहुरिया, राम बड़ो मैं तन की लहुरिया।
हरि मोर रहंटा मैं रतन पिउरिया, हरि का नाम ले कतति बहुरिया।
छौ मास तागा बरस दिन कुकुरी, लोग कहैं भल कातल बपुरी।
कहहिं कबीर सूत भल काता, चरखा न होय मुक्ति का दाता।

सबद-36

हरि ठग-ठगत ठगौर लाई, हरि के वियोग कैसे जियहु रे भाई।
को काको पुरुष कौन काकी नारी, अकथ कथा यम दृष्टि पसारी।
को काको पुत्र कौन काको बाप, को रे मरै को सहै सन्ताप।
ठगि-ठगि मूल सबन का लीन्हा, राम ठगौरी काहु न चीन्हा।
कहहिं कबीर ठग सो मन माना, गई ठगौरी जब ठग पहिचाना।

सबद-37

हरि ठग ठगत सकल जग डोलै, गौन करत मोसे मुखहु न बोले।
बालापन के मीत हमारे, हमहिं तजि कहां चलेउ सकारे।
तुमहिं पुरुष मैं नारि तुम्हारी, तुम्हरी चाल पाहनहु ते भारी।
माटि को देह पवन को शरीरा, हरिठग ठग सों डरें कबीरा।

सबद-38

हरि बिनु भर्म बिगुर्चनि गन्दा।
जहां-जहां गयउ अपनपौ खायेउ, तेहि फन्दे बहु फन्दा॥
योगी कहैं योग है नीका, दुतिया और न भाई।
नुंचित मुण्डित मौनि जटाधारी, तिन कहु कहां सिधि पाई॥
ज्ञानी गुणी सूर कवि दाता, ई जो कहैं बड़ हमहीं।
जहां से उपजे तहां समाने, छूटि गये सब तबहीं॥
बायें दहिने तजू बिकारा, निजु कै हरिपद गहिया।
कहैं कबीर गूंगे गुर खाया, पूछे सो क्या कहिया॥

सबद-39

ऐसो हरि सो जगत लरतु है, पांडुर कतहूं गरुड़ धरतु है।
मूस बिलाई कैसन हेतू, जंबुक करै केहरि सों खेतू।
अचरज एक देखो संसारा, सोनहा खेदे कुंजर असवारा।
कहै कबीर सुनो संतो भाई, इहै संधि काहु बिरलै पाई।

सबद-40

पण्डित बाद बदे सो झूठा।
राम के कहै जगत गति पावै, खांड़ कहै मुख मीठा॥
पावक कहै पांव जो डाहै, जल कहै तृषा बुझाई।
भोजन कहै भूख जो भाजै, तो दुनिया तरि जाई॥
नर के संग सुवा हरि बोलै, हरि परताप न जानै।
जो कबहीं उड़ि जाय जंगल में, तो हरि सुरति न आनै॥
बिनु देखे बिनु अर्स-पर्स बिनु, नाम लिये क्या होई।
धन के कहै धनिक जो होवै, निर्धन रहै न कोई॥
सांची प्रीति विषय माया सो, हरि भक्तन की फांसी।
कहहिं कबीर एक राम भजे बिनु, बांधे यमपुर जासी॥

सबद-41

पंडित देखहु मन में जानी।
कहु धौं छूति कहां से उपजी, तबहिं छूति तुम मानी॥
नादे बिंदे रुधिर के संगे, घटही में घट सपचै।
अस्ट कमल होइ पुहमी आया, छूति कहां से उपजै॥
लख चौरासी नाना बहु वासन, सो सब सरि भौ माटी।
एकहि पाट सकल बैठाए, छूति लेत धौं काकी॥
छूतिहि जेवन छूतिहि अंचवन, छूतिहि जगत उपजाया।
कहैं कबीर ते छूति विवरजित, जाके संग न माया॥

सबद-42

पंडित सोधि कहहु समुझाई, जाते आवागमन नसाई।
अर्थ धर्म औ काम मोक्ष कहु, कवन दिसा बसे भाई॥
उतर के दच्छिन पुरुब कि पच्छिम, सरग पाताल कि मांही।
बिनु गोपाल ठौर नहिं कतहूं, नरक जात धौं कांही॥
अनजाने को सरग नरक है, हरि जाने कौ नांहीं।
जेहि डर से सब लोग डरत हैं, सो डर हमरे नांही॥
पाप पुन्न की संका नाहीं, सरग नरक नहिं जाहीं।
कहै कबीर सुनो हो संतो, जहां का पद तहां समाहीं॥

सबद-43

पंडित मिथ्या करहु बिचारा, ना वहां सृष्टि न सिरजनहारा।
थूल अस्थूल पवन नहिं पावक, रबि ससि धरनि न नीरा।
जोति सरूप काल नहिं तहंवा, बचन न आहि सरीरा॥
कर्म धर्म कछु नाहीं उहवां, ना वहं मंत्र न पूजा।
संजम सहित भाव नहिं उहवां, सो धौं एक कि दूजा॥
गोरख राम एकौ नहिं उहवां, ना वह बेद बिचारा।
हरि हर ब्रह्मा नहिं सिव सक्ती, तीर्थउ नाहिं अचारा॥

माय बाप गुरु जहवां नाहीं, सो धौं दूजा कि अकेला।
कहैं कबीर जो अब की बूझै, सोई गुरु हम चेला॥

सबद-44

बुझ बुझ पंडित करहु विचारा, पुरुषा है कि नारी।
ब्राह्मण के ब्राह्मणी होती, योगी के घर चेली।
कलमा पढ़ि-पढ़ि भई तुरुकनी, कलि में रहत अकेली।
बर नहीं बरें ब्याह नहीं करे, पुत्र जन्मावनहारी।
कारे मूंड़ को एकहु न छाड़ों, अजहूं आदि कुमारी।
मैके रहे जाय नहीं ससुरे, साईं संग न सोवों।
कहैं कबीर मैं युग युग जीवों, जाति पांति कुल खोवों।

सबद-45

को न मुवा कहु पंडित जनां, सो समुझाइ कहहु मोहि सनां।
मूए ब्रह्मा बिस्नु महेसा, पारबती सुत मुए गनेसा।
मूए चंद मुए रबि शेषा, मुए हनुमत जिन्हि बांधल सेता।
मूए कृष्ण मुए करतारा, एक न मुवा जो सिरजनहारा।
कहै कबीर मुवा नहिं सोई, जाकै आवागवन न होई।

सबद-46

पंडित एक अचरज बड़ होई।
एक मरे मुए अन्न नहिं खाई, एक मरे सीझै रसोई॥
करि अस्नान देवन की पूजा, नवगुन कांध जनेऊ।
हंड़िया हाड़ हाड़ थरिया मुख, अब षट कर्म बनेऊ॥
धरम करे जहां जीव बधतु है, अकरम करे मोरे भाई।
जो तोहरा को ब्राह्मन कहिए, तो काको कहिए कसाई॥
कहैं कबीर सुनो हो संतो, भर्म भुली दुनियाई।
अपरमपार पार पुरुषोतम, या गति बिरलै पाई॥

सबद-47

पांड़े बूझि पियहु तुम पानी।
जेहि मटिया के घर मंह बैठै, तामे सृष्टि समानी।
छपन कोटि जादव जंह भीजे, मुनि जन सहस अठासी।
पैग पैग पैगम्बर गाड़े, सो सब सरि भो माटी।
तेहि मटिया के भंड़े पाड़े, बझि पियहु तुम पानी।
मच्छ कच्छ घरियार बियाने, रुधिर नीर जल भरिया।
नदिया नीर नरक बहि आवै, पशु मानुष सब सरिया।
हाड़ झरी झरि गूद गलीगल, दूध कहां ते आया।
सो लै पांडे जेंवन बैठे, मटियहि छूति लगाया।
बेद कितेब छांडि देहु पांड़े, ई सब मन के भर्मा।
कहैं कबीर सुनो हो पांड़े, ई सब तुम्हरे कर्मा।

सबद-48

पंडित देखहु हृदय बिचारी, को पुरुषा को नारी।
सहज समाना घट घट बोलै, वाको चरित अनूपा।
वाको नाम काह कहि लीजै, वाके बरन न रूपा।।
तै मैं काह करसि नर बौरे, क्या तेरा क्या मेरा।
राम खोदाय सक्ति सिव एकै, कहु धौं काहि निहोरा।।
बेद पुरान कितेब कुराना, नाना भांति बखाना।
हिन्दू तुरुक जैन औ जोगी, ये कल काहु न जाना।।
छौ दरसन महं जो परमाना, तासु नाम मन माना।
कहैं कबीर हमहीं पै बौरे, ये सब खलक सयाना।।

सबद-49

बुझ बुझ पंडित पद निरबान, सांझ परे कहवां बसे भान।
उंच निच परबत ढेला न ईंट, बिनु गायन तहंवा उठे गीत।

ओस न प्यास मंदिर नहिं जंहवा, सहसौं धेनु दुहावैं तहंवा।
नित्त अमावस नित संक्रान्ति, नित नित नवग्रह बैठे पांति।
मैं तोहि पूछौं पंडित जना, हृदया ग्रहन लागु केहि खना।
कहैं कबीर इतनो नहिं जान, कवन सबद गुरु लागा कान।

सबद-50

बुझ बुझ पंडित बिरवा न होय, आधा बसे पुरुष आधा बसे जोय।
बिरवा एक सकल संसारा, सरग सीस जड़ गई पताला।
बारह पखुरीया चौबिस पात, घने बरोह लागे चहुं पास।
फूलै न फलै वाकी है बानी, रैनि दिवस विकार चुवै पानी।
कहैं कबीर कछु अछलो न तहिया, हरि बिरवा प्रतिपालि न जहिया।

सबद-51

बुझ बुझ पंडित मन चित लाय, कबहुं भरल बहै कबहुं सुखाय॥
खन ऊबै खन डूबै खन औगाह, रतन न मिलै पावै नहिं थाह॥
नदिया नहीं सांसरि बहै नीर, मच्छ न मरै केवट रहै तीर॥
पोहकर नहिं बांधल तहं घाट, पुरइन नांहि कवंल मंह बांट॥
कहै कबीर ई मन का धोख, बैठा रहै चलन चह चोख॥

सबद-52

बूझि लीजै ब्रह्म ज्ञानी।
घूरि घूरि बरखा बरसावै, परिया बूंद न पानी॥
चिंउटी के पग हस्ती बांधे, छेरी बीग रखावै।
उदधि मांह ते निकरि छांछरी, चौड़े ग्रह करावै॥
मेढ़क सर्प रहत एक संगे, बिलैया स्वान बियाही।
नित उठि सिंह सियार सों डरपे, अद्भुत कथो न जाई॥
कौने संसय मिरगा बन घेरे, पारथ बाना मेलै।
उदधि भूप ते तरुवर डाहै, मच्छ अहेरा खेलै॥
कहैं कबीर यह अद्‌भुत ज्ञाना, जो यहि ज्ञानहि बूझै।
बिनु पंखै उड़ि जाइ अकासै, जीवहिं मरन न सूझै॥

सबद-53

वै बिरवा चीन्है जो कोई, जरा मरन रहिते तन होई।
बिरवा एक सकल संसारा, पेड़ एक फूटल तिनि डारा।
मध्य कि डार चारि फल लागा, साखा पत्र गिनै को वाका।
बेलि एक त्रिभुवन लपटानी, बांधे ते छूटहिं नहिं ज्ञानी।
कहैं कबीर हम जात पुकारा, पंडित होय सो लेइ बिचारा।

सबद-54

साांई के संग सासुर आई।
संग न सूती स्वाद नहिं मानी, गयो जौवन सपने की नाांई।
जना चारि मिलि लगन सुधाये, जना पांच मिलि मांड़ौ छाए।
सखी सहेली मंगल गावैं, दुख सुख माथे हलदी चढ़ावे।
नाना रूप परी मन भांवरि, गांठि जोरि भाई पतिआई।
अरघा दे लै चली सुवासिनि, चौके रांड़ भई संग सांई।
भयो विवाह चली बिनु दुलहा, बाट जात समधी समुझाई।
कहै कबीर हम गौने जैबे, तरब कंत लै तूर बजैवै।

सबद-55

नर को ढाढ़स देखहु आई, कछु अकथ कथो है भाई।
सिंह सार्दुल एक हर जोतिन, सीकस बोइन धानै।
बनकि भलुइया चाखुर फेरै, छागर भये किसाने।
छेरी बाधै ब्याह होत है मंगल गावै गाई।
बन के रोझ धरि दायज दीन्हों, गोह लो कंधे जाई।
कागा कापर धोवन लागे, बकुला किरपहिं दांते।
मांखी मूंड़ मुंड़ावन लागी, हमहूं जाब बराते।
कहहिं कबीर सुनो हो सन्तो, जो यह पद अर्थावै।
सोई पंडित सोई ज्ञाता, सोई भक्त कहावै।

सबद-56

नर को नहिं परतीति हमारी।
झूठा बनिज कियो झूठे सो, पूंजी सबन मिली हारी॥
षट दरसन मिलि पंथ चलायो, तिरदेवा अधिकारी।
राजा देस बड़ो परपंची, रइयत रहत उजारी॥
इतते उत उतते इत रहहीं, जम की सांड़ सवारी।
क्यों कपि डोरि बांधि बाजीगर, अपनी खुसी परारी॥
इहै पेड़ उतपति परलय का, बिषया सबै बिकारी।
जैसे स्वान अपावन राजी, त्यौं लागी संसारी॥
कहैं कबीर यह अद्भुत ज्ञाना, को मानै बात हमारी।
अजहूं लेउं छुड़ाय काल सो, जो करै सुरति संभारी॥

सबद-57

ना हरि भजसि न आदति छूटी।
शब्दहिं समुझि सुधारत नाहीं, आंधर भए हियेहु की फूटी॥
पानी मंह पखान की रेखा, ठोंकत उठै भभूका।
सहस घड़ा नित उठि जल ढारै, फिर सूखे का सूखा॥
सेतहि सेत सितंगन्न भौ, सैन बाढ़ि अधिकाई।
जो सन्निपात रोगिया मारै, सो साधुन सिधि पाई॥
अनहद कहत कहत जग विनसै, अनहद सृष्टि समानी।
निकट पयाना जमपुर धावै, बोलै एकै बानी॥
सतगुरु मिलै बहुत सुख लहिए, सतगुरु सब्द सुधारै।
कहहिं कबीर ते सदा सुखी हैं, जो यह पदहिं बिचारै॥

सबद-58

नरहरि लागी दौ विकार बिनु ईंधन, मिलै न बुझावनहारा।
मैं जानौं तोही सो ब्यापै, जरत सकल संसारा॥

पानी मांही अगिनि को अंकुर, जरत बुझावै पानी।
एक न जरै जरै नव नारी, जुक्ति न काहू जानी॥
शहर जरै पहरू सुख सोवै, कहै कुसल घर मेरा।
पुरिया जरै वस्तु निज उबरै, बिकल राम रंग तेरा॥
कुबुजा पुरुष गले एक लागा, पूजि न मन की सरधा।
करत विचार जनम गौ सीखै, ई तन रहल असाधा॥
जानि बूझि जो कपट करतु है, तेहि अस मंद न कोई।
कहैं कबीर तेहि मूढ़ को, भला कवन बिधि होई॥

सबद-59

माया महा ठगिनि हम जांनीं।
तिरगुन फांसि लिए कर डोलै, बोलै मधुरी बानी॥
केसव कै कंमला होइ बैठी, सिव के भवन भवांनीं।
पंडा कै मूरति होइ बैठी, तीरथ हू में पांनी॥
जोगी कै जोगिनि होइ बैठी, राजा कै घर रानीं।
काहू के हीरा होइ बैठी, काहू कै कौड़ी कानी॥
भगतां कै भगतिनि होई बैठी, ब्रह्मा के ब्रह्मनी।
कहहिं कबीर सुनो हो संतो, ई सब अकथ कहानी।

सबद-60

माया मोह मोहित कीन्हा, ताते ज्ञान रतन हरि लीन्हा।
जीवन ऐसो सपना जैसो, जीवन सपन समाना।
शब्द गुरु उपदेश दीन्हों, तैं छाडु परम निधाना।
ज्योति देखि पतंग हुलसै, पशू न पेखै आगि।
काल फांस नर मुग्ध न चेतहु, कनक कामिनी लागि।
शेख सैय्यद कितेब निरखें, सुमृति शास्त्र विचार।
सतगुरु के उपदेश बिनु तैं, जानि के जीव मार।
कर विचार विकार परिहरि, तरण तारण सोय।
कहहिं कबीर भगवन्त भजु नर, दुतिया और न कोय।

सबद-61

मरिहो रे तन का ले करिहो, प्रान छुटे बाहर लै डरिहो।
काया बिगुरचनि अनबनि भांति, कोई जारै कोई गाड़ै माटी।
हिन्दू ले जारैं तुरुक ले गाड़ैं, यहि विधि अंत दुनो घर छांड़ै।
करम फांस जम जाल पसारा, जस धीमर मछरी गहि मारा।
राम बिना नर होइहैं कैसा, बाट मांझ गोबरौरा जैसा।
कहहिं कबीर पीछे पछितैहो, या घर से जब वा घर जैहो।

सबद-62

माई मैं दूनौ कुल उजियारी।
सासु ननद पटिया मिलि बंधलौं, भसुरहिं परलौं गारी॥
जारौं मांग मैं तासु नारि की, जिन सरवर रचल धमारी।
जना पांच कोखिया मिलि रखलों, और दुई औ चारी॥
पार परोसिनि करौं कलेवा, संगहि बुधि महतारी।
सहजहिं बपुरे सेज बिछावल, सुतलौं मैं पांव पसारी॥
आवों न जावों मरौं नहिं जीवों, साहेब मेटल गारी।
एक नाम मैं निज कै गहिलौं, तो छूटल संसारी।
एक नाम मैं बदि के लेखौं, कहहिं कबीर पुकारी॥

सबद-63

मैं कासे कहौं को सुने को पतिआय, फुलवा के छुअत भंवर मरि जाय।
जोतिये न बोइये सिंचिये न सोई, बिनु डार बिनु पात फूल एक होई।
गगन मंडल बिच फुल एक फूला, तर भौ डार ऊपर भौ मूला।
फुल भल फुलल मलिनि भल गांथल, फुलवा बिनसि गो भवंर निरासल।
कहहिं कबीर सुनो संतो भाई, पंडित जन फुल रहल लोभाई।

सबद-64

जोलहा बीनहु हो हरिनामा, जाके सुर नर मुनि धरैं ध्याना।
ताना तनै को अहुठा लीन्हा, चरखी चारो वेदा।
सर कुंडी एक राम नरायन, पूरन प्रगटे कामा।
भवसागर एक कठवत कीन्हा, तामें मांड़ी साना।
मांड़ी का तन माड़ि रहे है, माड़ी बिरलै जाना॥
चांद सुरुज दुइ गोड़ा कीन्हा, मांझदीप कियो मांझा।
त्रिभुवननाथ जो मांजन लागे, स्याम मुररिया दीन्हा॥
पाई के जब भरना लीन्हो, बै बांधन को रामा।
बै भरा तिहु लोकहि बांधे, कोइ न रहत उबाना॥
तीनि लोक एक करिगह कीन्हे, दिगमग कीन्हों ताना।
आदि पुरुष बैठावन बैठे, कबिरा जोति समाना॥

सबद-65

जोगिया फिरि गयौ नगर मंझारी, जाय समान पांच जहां नारी।
गयौ देशान्तर कोई न बतावै, जोगिया बहुरि गुफा नहिं आवै।
जरि गौ कंथा धजा गयौ टूटी, भजि गौ डंड खपर गयौ फूटी।
कहहिं कबीर यह कलि है खोटी, जो रहे करवा सो निकरे टोटी।

सबद-66

योगिया के नगर बसो मति कोई, जो रे बसे सो योगिया होई।
ये योगिया के उलटा ज्ञान, काला चोला नहिं वाके म्यान।
प्रगट सो कंथा गुप्ता धारी, तामें मूल सजीवन भारी।
वो योगिया की युक्ति जो बूझै, राम रमै तेहि त्रिभुवन सूझै।
अमृत बेली छिन छिन पीवै, कहैं कबीर योगी युग युग जीवै।

सबद-67

जो पै बीज रूप भगवान, तो पण्डित का पूछो आन।
कहां मन कहां बुधि कहां हंकार, सत रज तम गुण तीन प्रकार।

विष अमृत फल फले अनेका, बहुधा वेद कहै तरबे का।
कहहिं कबीर तै मैं क्या जान, को धौं छूटल को अरुझान।

सबद-68

जो चरखा जरि जाय बढ़ैया ना मरै।
मैं कातों सूत हजार, चरखुला जिन जरै॥
बाबा मोर बियाह कराव, अच्छा बरहिं तकाय।
जौ लौं अच्छा वर ना मिलै, तौ लौं तुमहिं बिहाय॥
प्रथमें नगर पहुंचते, परिगौ सोग सन्ताप।
एक अचम्भव हम देखा, जो बिटिया ब्याहिल बाप॥
समधी के घर लमधी आये, आये बहू के भाय।
गोड़े चूल्हा दै दै, चरखा दियो दृढ़ाय॥
देव लोक मरि जायंगे, एक न मरे बढ़ाय।
यह मनरंजन कारणे, चरखा दियो दृढ़ाय॥
कहहिं कबीर सुनो हो सन्तो, चरखा लखै जो कोय।
जो यह चरखा लखि परे, ताको आवागवन न होय॥

सबद-69

जन्त्री जन्त्र अनूपम . बाजे, वाके अष्ट गगन मुख गाजे।
तू ही बाजे तू ही गाजे, तूहि लिये कर डोले।
एक शब्द मों राग छतीसों, अनहद बानी बोले।
मुख कै नाल श्रवण कै तुम्बा, सतगुरु साज बनाया।
जिभ्या के तार नाशिका चरई, माया का मोम लगाया।
गगन मण्डल में भया उजियारा, उल्टा फेर लगाया।
कहहिं कबीर जन भये विवेकी, जिन जन्त्री सो मन लाया।

सबद-70

जस मांसु पशु की तस मांसु नर की, रुधिर रुधिर एक सारा जी।
पशु के मांसु भखै सब कोई, नरहि न भखै सियारा जी।

ब्रह्म कुलाल मेदिनी भइया, उपजि बिनसि कित गइया जी।
मासु मछरिया तैं पै खइये, ज्यों खेतन में बोइया जी॥
माटी के करि देवी देवा, काटि काटि जिव देइया जी।
जो तोहरा है सांचा देवा, खेत चरत क्यों न लेइया जी॥
कहहिं कबीर सुनो हो संतो, राम नाम नित लेइया जी।
जो कछु किएउ जीभ क्या के स्वारथ, बदला पराया देइया जी॥

सबद-71

चातृक कहां पुकारै दूरी, सो जल जगत रहा भरपूरी।
जेहि जल नाद विंदु को भेदा, षट कर्म सहित उपानेउ बेदा।
जेहि जल जीव सीव को बासा, सो जल धरणी अमर परगासा।
जेहि जल उपजल सकल सरीरा, सो जल भेद न जानु कबीरा।

सबद-72

चलहु का टेढ़ो-टेढ़ो-टेढ़ो।
दशहूं द्वार नरक भरि बूड़े, तूं गन्धी को बेड़ो॥
फूटै नैन हृदय नहिं सूझे, मति एकौ नहिं जानी।
काम क्रोध तृष्णा के माते, बूड़ि मुये बिनु पानी॥
जो जारे तन भस्म होय धुरि, गाड़े किरमिटी खाई।
सीकर श्वान काग का भोजन, तन की इहै बढ़ाई॥
चेति न देखु मुग्ध नर बौरे, तोहि ते काल न दूरी।
कोटिन यतन करो यह तन की, अन्त अवस्था धूरी॥
बालू के घरवा में बैठे, चेतत नाहिं अयाना।
कहहिं कबीर एक राम भजे बिनु, बूड़े बहुत सयाना॥

सबद-73

फिरहु का फूले-फूले-फूले।
जब दश मास ऊर्ध्व मुख होते, सो दिन काहेक भूले॥
ज्यों माखी सहते नहिं बिहुरे, सोचि सोचि धन कीन्हा।
मुये पीछे लेहु-लेहु करें सब, भूत रहनि कस दीन्हा॥

देहरि लों बर नारि संग है, आगे संग सुहेला।
मृतक थान लों संग खटोला, फिर पुनि हंस अकेला॥
जारे देह भस्म होय जाई, गाड़े माटी खाई।
कांचे कुम्भ उदक ज्यों भरिया, तन की इहै बड़ाई॥
राम न रमसि मोह के माते, परेहु काल वश कूवा।
कहहिं कबीर नर आप बंधायो, ज्यों ललनी भ्रम सूवा॥

सबद-74

ऐसो जोगिया है बदकर्मी, जाके गमन अकाश न धरनी।
हाथ न वाके पांव न वाके, रूप न वाके रेखा।
बिना हाट हटवाई लावै, करै बयाई लेखा॥
करम न वाके, धरम न वाके, जोग न वाके जुक्ती।
सींगी पात्र कछु नहीं वाके, काहे को मांगै भुक्ती॥
मैं तोहि जाना तैं मोहि जाना, मैं तोहि मांह समाना।
उतपति परलय किछवौ न होते, तब कहु कौन ब्रह्म को ध्याना॥
जोगिआन एक ठाठ कियो है, राम रहा भरपूरी।
औषध मूल कछु नहिं वाके, राम सजीवन मूरी॥
नटवट बाजा पेखनि पेखै, बाजीगर की बाजी।
कहहिं कबीर सुनौ हो संतो, भई सो राज बिराजी॥

सबद-75

ऐसो भरम बिगुर्चन भारी।
वेद कितेब दीन औ दोजख, को पुरुषा को नारी॥
माटी का घट साज बनाया, नादे बिन्द समाना।
घट विनसे क्या नाम धारहुगे, अहमक खोज भुलाना॥
एकै त्वचा हाड़ मल मूत्रा, एक रुधिर एक गूदा।
एक बुन्द से सृष्टि रची है, को ब्राह्मण को शूद्रा॥
रजोगुण ब्रह्मा तमोगुण शंकर, सतोगुणी हरि होई।
कहहिं कबीर राम रमि रहिये, हिन्दू तुरुक न कोई॥

सबद-76

आपन पौ आपुहि बिसर्यो।
जैसे श्वान कांच मन्दिर में, भरमित भूसि मर्यो।।
ज्यों केहरि बपु निरखि कूप जल, प्रतिमा देखि पर्यो।
वैसे ही गज फटिक शिला में, दशनन आनि अर्यो।।
मर्कट मूठि स्वाद नहिं बिहुरे, घर-घर रटत फिर्यो।
कहहिं कबीर ललनी के सुवना, तोहि कवने पकर्यो।।

सबद-77

आपन आस किये बहुतेरा, काहु न मरम पावल हरि केरा।
इन्द्री कहां करै बिसरामा, सो कहं गए जो कहत होते रामा।
सो कहं गए जो होत सयाना, होय म्रितक वह पदहिं समाना।
रामानंद रामरस माते, कहैं कबीर हम कहि कहि थाके।

सबद-78

अब हम जनिया हो, हरि बाजी का खेल।
डंक बजाय देखाय तमासा, बहुरि सो लेत सकेल।।
हरि बाजी सुरनर मुनि जहंडे, माया चाटक लाया।
घर में डारिं सकल भरमाया, हिरदय ग्यांन न आया।।
बाजी झूठ बाजीगर सांचा, साधुन की मति ऐसी।
कहहिं कबीर जिन जैसी समुझी, ताकी मति भई तैसी।।

सबद-79

कहहु हो अम्मर कासों लागा, चेतनहारा चेत सुभागा।
अम्मर मध्ये दीसे तारा, एक चेता एक चेतवनहारा।
जो खोजो सो उहवां नाहीं, सो तो आहि अमरपद माहीं।
कहहिं कबीर पद बूझै सोई, मुख हृदया जाके एकै होई।

सबद-80

बंदे करिले आपु निबेरा।
आपु जियत लखु आपु ठौर करु, मुए कहां घर तेरा॥
यहि अवसर नहिं चेतहु प्रानी, अंत कोई नहिं तेरा।
कहहिं कबीर सुनो हो संतो, कठिन काल का घेरा॥

सबद-81

ऊतो रहु ररा ममा की भांति हो, सब सन्त उधारन चूनरी।
बालमीक बन बोइया, चुनि लीन्हा शुकदेव।
कर्म बिनौरा होइ रहा हो, सूत काते जयदेव।
तीन लोक ताना तनो है, ब्रह्मा विष्णु महेश।
नाम लेत मुनि हारिया, सुरपति सकल नरेश।
विष्णु जिभ्या गुण गाइया, बिनु बस्ती का देश।
सूने घर का पाहुना, तासों लाइनि हेत।
चारि वेद कैंड़ा कियो, निराकार कियो राछ।
बिने कबीरा चूनरी, मैं नहिं बांधल बारि।

सबद-82

तुम यहि बिधि समुझहु लोई, गोरी मुख मंदर बाजै।
एक सर्गुन षट चक्रहि बेधै, बिन वृषभ कोल्हू माचा।
ब्रह्महि पकरि अगिनि महं होमै, मच्छ गगन चढ़ि गाजा॥
सुरभी भच्छन करत वेद मुख, घन बरिसै तन छीजै।
नित्त अमावस नित्त ग्रहन है, राहु ग्रास नित दीजै॥
त्रिकुटि कुंडल मधे मंदिर बाजै, औघट अंमर छीजै।
पुहुमी का पानी अंमर भरिया, ई अचरज कोई बूझै॥
कहहिं कबीर सुनो हो संतो, यागिन सिद्धि प्यारी।
सदा रहे सुख संयम अपने, बसुधा आदि कुमारी॥

सबद-83

भूला बे अहमक नादाना, जिन्ह हरदम रामहिं ना जाना।
बरबस आनि कै गाय पछारिन, गला काटि जिव आपु लिया।
जियत जीव मुर्दा करि डारे, ताको कहत हलाल हुआ॥
जाहि मासु को पाक कहत हो, ताकी उतपति सुनु भाई।
रज बीरज सो मांस उपानी, सो मांस नपाकी जो तुम खाई॥
अपनी देखि कहत नहिं अहमक, कहत हमारे बड़न किया।
उसकी खून तुम्हारी गर्दन, जिन्ह तुमको उपदेस दिया॥
स्याही गई सपेदी आई, दिल सपेद अजहूं न हुआ।
रोजा बांग निमाज का कीजै, हुजरे भीतर पैठि मुआ॥
पंडित बेदं पुरान पढ़तु है, मुसलमान कुराना।
कहहिं कबीर दोउ गए नरक महं, जिन्ह हरदम रामहि ना जाना॥

सबद-84

काजी तुम कौन कितेब बखानी।
झंखत बकत रहुहु निशि-बासर, मति एकौ नहिं जानी॥
शक्ति अनुमाने सुन्नति करतु हो, मैं न बदोंगा भाई।
जो खुदाय तेरी सुन्नति करतु है, आपुहि कटि क्यों न आई॥
सुन्नति कराय तुरुक जो होना, औरत को क्या कहिये।
अर्ध शरीरी नारि बखानी, ताते हिन्दू रहिये॥
पहिरि जनेऊ जो ब्राह्मण होना, मेहरी क्या पहिराया।
वो जन्म की शूद्रिन परसे, तुम पांड़े क्यों खाया॥
हिन्दू तुरुक कहां ते आया, किन्ह यह राह चलाया।
दिल में खोजि देखु खोजादे, बिहिस्त कहां ते आया॥
कहहिं कबीर सुनो हो सन्तो, जोर करतु हैं भाई।
कबिरन ओट राम की पकरी, अन्त चले पछिताई॥

सबद-85

भूला लोग कहैं घर मेरा।
जा घर में तू भूला डोले, सो घर नाहीं तेरा॥
हाथी घोड़ा बैल बाहना, संग्रह कियो घनेरा।
बस्ती मासे दियो खदेरा, जंगल कियो बसेरा॥
गांठी बांधि खर्च नहिं पठयो, बहुरि न कीयो फेरा।
बीबी बाहर हरम महल में, बीच मियां का डेरा॥
नौ मन सूत अरुझि नहिं सुरझे, जन्म-जन्म उरझेरा।
कहहिं कबीर सुनो हो सन्तो, यह पद का करहु निबेरा॥

सबद-86

कबिरा तेरो घर कंदला में, यह जग रहत भुलाना।
गुरु की कही करत नहिं कोई, अमहल महल दिवाना॥
सकल ब्रह्म मंह हंस कबीरा, कागान चोंच पसारा।
मनमथ कर्म धरै सब देही, नाद बिंदु बिस्तारा॥
सकल कबीरां बोलै बानी, पानी में घर छाया।
होत अनंत लूट घट भीतर, घट का मर्म न पाया॥
कामिनि रूपी सकल कबीरा, मृगा चरिन्दा होई।
बड़ बड़ ज्ञानी मुनिवर थाके, पकरि सकै नहिं कोई॥
ब्रह्मा बरुन कुबेर पुरन्दर, पीपा औ प्रहलादा।
हिरनाकुस नख उदर बिदारा, तिनहुं को काल न राखा॥
गोरख ऐसे दत्त दिगम्बर, नामदेव जयदेव दासा।
तिनकी खबर कहत नहिं कोई, उन्ह कहां कियो है बासा॥
चौपर खेल होत घट भीतर, जनम का पासा डारा।
दम दम की कोइ खबरि न जानै, कोई करि न सकै निरुआरा॥
चारि दृग महि मंडल रचो है, रूम साम बिच डिल्ली।
तेहि ऊपर कछु अजब तमासा, मारो है जम किल्ली॥

सकल अवतार जाके महि मंडल, अनंत खड़ा कर जोरे।
अद्भुत अगम अगाह रचौ है, ई सब सोभा तोरे॥
सकल कबीरा बोलै बीरा, अजहुं हो हुसियारा।
कहहिं कबीर गुरु सिकली दर्पन, हरदम करहु पुकारा॥

सबद-87

कबिरा तेरो बन कंदला में, मानु अहेरा खेलै।
बफु बारी आनंद मीरगा, रुचि रुचि सर मेलै॥
चेतत रावल पावन खेड़ा, सहजै मूलहि बांधै।
ध्यान धनुष धरि ज्ञान बान, जोगेश्वर साधै॥
षट चक्र बेधि कमल बेधि, जाय उजियारी कीन्हा।
काम क्रोध मद लोभ मोह को, हांकि सावज दीन्हा॥
गगन मध्ये रोकिनि द्वारा, जहां दिवस नहिं राती।
दास कबीरा जाय पहूंचे, बिछुरे संग औ साथी॥

सबद-88

सावज न होइ भाई सावज न होई, वाकी मांसु भखै सब कोई।
सावज एक सकल संसारा, अविगति वाकी बाता।
पेट फारि जो देखिये रे भाई, आहि करेजे न आंता॥
ऐसी वाकी मांसु रे भाई, पल-पल मांसु बिकाई।
हाड़-गोड़ ले घूर पवांरिनि, आगि धुवां नहिं खाई॥
शिर सींगी किछुवो नहिं वाके, पूंछ कहां वे पावै।
सब पण्डित मिलि धन्धे परिया, कबिरा बनौरी गावै॥

सबद-89

सुभागे केहि कारन लोभ लागे, रतन जनम खोयो।
पूरब जनम भूमि के कारन, बीज काहे को बोयो॥
बुंद से जिन्ह पिंड संजोयो, अग्नि कुंड रहाया।
जब दस मास माता के गर्भे, बहुरि लागल माया॥

बारहु ते पुनि बृद्ध हुवा, होनिहार सो होया।
जब जम ऐहैं बांधि चले हैं, नैनन भरी भरि रोया॥
जीवन की जनि राखहु आसा, काल धरे है स्वासा।
बाजी है संसार कबीरा, चित्त चेति डारो पासा॥

सबद-90

संतो मंहतो सुमिरो सोई, काल फांस ते बांचा होई।
दत्तात्रेय मर्म नहिं जाना, मिथ्या साधु भुलाना।
सलिल मथिकै घृत को काढ़िनि, ताहि समाधि समाना॥
गोरख पवन राखि नहिं जाना, जोग जुक्ति अनुमाना।
रिधि सिधि संजम बहुतेरा, पार ब्रह्म नहिं जाना॥
बसिष्ठ स्रेष्ठ विद्या सम्पूरन, राम ऐसे सिख साखा।
जाहि राम को कर्ता कहिए, तिनहु को काल न राखा॥
हिन्दू कहैं हमहि लै जारो, तुर्क कहैं हमारो पीर।
दोऊ आय दीन में झगरैं, ठाढ़े देखिहिं हंस कबीर॥

सबद-91

तन धरि सुखिया कोइ न देखा, जो देखा सो दुखिया हो।
उदै अस्त की बात कहतु हौ, सबका किया बिबेका हो॥
घाटे बाटे सब जग दुखिया, क्या गिरही बैरागी हो।
सुकदेव अचारज दुःख कै कारनि, गरभ सौं माया त्यागी हो॥
जोगी दुखिया जंगम दुखिया, तपसी को दुःख दूनां हो।
आसा त्रिसनां सब कौं ब्यापै, कोई महल न सूनां हो॥
सांच कहौं तौ सब जग खीजे, झूठ कहा नहिं जाई हो।
ब्रह्मां बिस्नु महेसर दुखिया, जिन यहु राह चलाई हो॥
अवधू दुखिया भूपति दुखिया, रंक दुखी बिपरीती हो।
कहै कबीर सकल जग दुखिया, संत सुखी मन जीती हो॥

सबद-92

ता मन को चीन्हो मोरे भाई, तन छूटे मन कहां समाई।
सनक सनन्दन जयदेव नामा, भक्ति सही मन उनहुं न जाना।
अम्बरीष प्रहलाद सुदामा, भक्ति हेतु मन उनहुं न जाना।
भरथरि गोरख गोपीचन्दा, ता मन मिलि-मिलि कियो अनन्दा।
जा मन को कोइ जान न भेवा, ता मन मगन भये शुकदेवा।
शिव सनकादिक नारद शेषा, तनके भीतर मन उनहुं न पेखा।
एकल निरंजन सकल शरीरा, तामहं भ्रमि-भ्रमि रहल कबीरा।

सबद-93

बाबू ऐसो है संसार तिहारो, ई है कलि ब्यौहारो।
को अब अनुख सहै प्रतिदिन को, नाहिन रहनि हमारो।।
सुमृति सुहाय सबै कोई जानै, हृदया तत्व न बूझै।
निरजिव आगे सरजिव थापै, लोचन कछू न सूझै।।
तजि अमृत बिष काहे को अंचवैं, गांठी बांधिन खोटा।
चोरन दीन्हा पाट सिंहासन, साहुन से भयो ओटा।।
कहहिं कबीर झूठे मिलि झूठा, ठगही ठग ब्यौहारा।
तीनि लोक भरपूर रहो है, नाहिन है पतियारा।।

सबद-94

कहहु निरंजन कौने बानी।
हाथ पांव मुख स्त्रवन जीभ बिनु, का कहि जपहु हो प्रानी।।
ज्योतिहि ज्योति ज्योति जो कहिए, ज्योति कवन सहिदानी।
ज्योतिहि ज्योति ज्योति दै मारै, तब कहां ज्योति समानी।।
चारि बेद ब्रह्मै जो कहिया, उनहुं न या गति जानी।
कहहिं कबीर सुनो हो संतो, बूझो पंडित ज्ञानी।।

सबद-95

को अस करे नगर कोटवलिया, मांसु फैलाय गिद्ध रखवरिया।
मूस भौ नाव मंजारि कंड़िहरिया, सोवै दादुर सर्प पहरिया।
बैल बियाय गाय भइ बंझा, बछरू दुहिये तिन-तिन संझा।
नित उठि सिंह सियार सों जूझै, कबिरा का पद जन बिरला बूझै।

सबद-96

का को रोउं गैल बहुतेरा, बहुतक मुअल फिरल नहिं फेरा।
हम रोया तब तुम न संभारा, गर्भ बास की बात बिचारा।
अब तैं रोया क्या तैं पाया, केहि कारन तैं मोहि रोवाया।
कहैं कबीर सुनहु नर लोई, काल के बसहि परै मति कोई।

सबद-97

अल्लाह राम जियो तेरी नांई, जिन्ह पर मेहर होहु तुम सांई।
क्या मुण्डी भूईं शिर नाये, क्या जल देह नहाये।
खून करे मिस्कीन कहाये, अवगुण रहे छिपाये॥
क्या वजू जप मंजन कीये, क्या महजिद शिर नाये।
हृदया कपट निमाज गुजारे, क्या हज मक्के जाये॥
हिन्दू बरत एकादशी चौबीस, तीस रोजा मुसलमाना।
ग्यारह मास कहो किन टारे, एक महीना आना॥
जो खुदाय महजीद बसतु है, और मुलुक केहि केरा।
तीरथ मूरत राम निवासी, दुइमा किनहुं न हेरा॥
पूरब दिशा हरी को बासा, पश्चिम अल्लह मुकामा।
दिल में खोजि दिलहि मां खोजो, इहै करीमा रामा॥
वेद कितेब कहा किन झूठा, झूठा जो न विचारे।
सब घट एक-एक कै लेखे, भय दूजा के मारे॥
जेते औरत मर्द उपाने, सो सब रूप तुम्हारा।
कबीर पोंगरा अल्लह राम का, सो गुरु-पीर हमारा॥

सबद-98

आब वे आब मुझे हरि को नाम, और सकल तजु कौने काम।
कहं तब आदम कहं तब हव्वा, कहं तब पीर पैगम्बर हुवा।
कहं तब जिमीं कहं असमान, कहं तब वेदकितेब कुरान।
जिन दुनिया में रची मसीद, झूठा रोजा झूठी ईद।
सांचा एक अलह को नाम, जाको नै नै करहु सलाम।
कहु धौं भिस्त कहां ते आई, किसके कहे तुम छुरी चलाई।
करता किरतम बाजी लाई, हिन्दू तुरुक की राह चलाई।
कहं तब दिवस कहं तब राती, कहं तब किरतम किन उतपाती।
नहिं वाके जाति नहीं वाके पांती, कहहिं कबीर वाके दिवस न राती।

सबद-99

अब कहां चलेउ अकेले मीता, उठहु न करहु घरहु की चिन्ता।
खीर खांड घृत पिण्ड संवारा, सो तन लै बाहर कर डारा।
जो शिर रचि-रचि बांध्यो पागा, सो शिर रतन बिडारत कागा।
हाड़ जरै जस जंगल लकड़ी, केश जरै जस घास की पूली।
आवत संग न जात संधाती, काह भये दल बांधल हाथी।
माया के रस लेइ न पाया, अन्तर यम बिलारि होइ धाया।
कहहिं कबीर नर अजहुं न जागा, यमका मुगदर मांझ सिर लागा।

सबद-100

देखहु लोगो हरि केर सगाई, माय धरी पूत धियऊ संग जाई।
सासु ननद मिलि अचल चलाई, मंदरिया गृह बैठी जाई।
हम बहनोई राम मोर सारा, हमहि बाप हरि पूत हमारा।
कहहिं कबीर ई हरि के बूता, राम रमे ते कुकरि के पूता।

सबद-101

देखि देखि जिय अचरज होई, यह पद बूझै बिरला कोई।
धरती उलटि अकासै जाई, चिउंटी के मुख हस्ति समाई।
बिना पवन सो पर्वत उड़ै, जीव जंतु सब बिरछा चढ़ै।
सूखे सरवर उठै हिलोरा, बिनु जल चकवा करत किलोरा।
बैठा पंडित पढ़ै पुरान, बिनु देखे का करत बखान।
कहैं कबीर यह पद को जान, सोई संत सदा परमान।

सबद-102

हो दारी के ले देउं तोहि गारी, तैं समुझु सुपंथ बिचारी।
घरहू के नाह जो अपना, तिनहू से भेंट न सपना।
ब्राह्मन छत्री बानी, तिनहू कहल नहिं मानी।
जोगी जंगम जेते, आपु गहे हैं तेते।
कहहिं कबीर एक जोगी, वे तो भरमि भरमि भौ भोगी।

सबद-103

लोगा तुमहीं मति के भोरा।
ज्यों पानी-पानी मिलि गयऊ, त्यों धुरि मिला कबीरा।
जो मैथिल को सांचा ब्यास, तोहर मरण होय मगहर पास।
मगहर मरै, मरै नहिं पावै, अन्तै मरै तो राम लजावै।
मगहर मरे सो गदहा होय, भल परतीत राम सो खोय।
क्या काशी क्या मगहर ऊसर, जो पै हृदय राम बसै मोरा।
जो काशी तन तजै कबीरा, तो रामहि कहु कौन निहोरा।

सबद-104

कैसे तरो नाथ कैसे तरो, अब बहु कुटिल भरो।
कैसी तेरी सेवा पूजा, कैसो तेरो ध्यान।
ऊपर उजर देखो बक अनुमान॥
भाव तो भुवंग देखो, अति बिबिचारी।
सुरति सचान तेरी मति तौ मंजारी॥
अति रे बिरोध देखो अति रे अयाना।
छव दर्शन देखो भेष लपटाना॥
कहहिं कबीर सुनो नर बन्दा।
डाइनि डिम्भ सकल जग खन्दा॥

सबद-105

यह भ्रम भूत सकल जग खाया, जिन जिन पूजा तिन जहंड़ाया।
अंड न पिंड प्रान नहिं देही, कोटि कोटि जिव कौतुक देही।
बकरी मुर्गी कीन्हेउ छेवा, अगिले जनम उन औसर लेवा।
कहहिं कबीर सुनहु नर लोई, भुतवा के पूजे भुतवै होई।

सबद-106

भंवर उड़े बग बैठे आई, रैन गई दिवसो चलि जाई।
हल-हल कांपे बाला जीव, ना जानों का करिहैं पीव।
कांचे बासन टिके न पानी, उड़ि गये हंस काया कुम्हिलानी।
काग उड़ावत भुजा पिरानी, कहहिं कबीर यह कथा सिरानी।

सबद-107

खसम बिनु तेली को बैल भयो।
बैठत नाहिं साधु की संगति, नाधे जनम गयो॥
बहि बहि मरहु पचहु निज स्वारथ, जम कौ दंड सह्यो।
धन दारा सुत राज काज हित, माथे भार गह्यो॥

खसमहि छांड़ि विषय रंग राते, पाप के बीज बोयो।
झूठि मुक्ति नर आस जिवन की, उन प्रेत को जूठन खायो॥
लख चौरासी जीव जन्तु में, सायर जात बह्यो।
कहहिं कबीर सुनहु हो संतो, स्वान की पूंछ गह्यो॥

सबद-108

अब हम भयल बहुरि जलमीना, पुरब जनम तप का मद कीन्हा।
तहिया मैं अछलों मन वैरागी, तजलों मैं लोग कुटुम राम लागी।
तजलों मैं कासी मति भई भोरी, प्राननाथ कहु का गीत मोरी।
हमहि कुसेवक कि तुमहि अयाना, दुइमा दोष काहि भगवाना।
हम चलि अइलीं तुहरे सरना, कतहुं न देखौं हरि के चरना।
हम चलि अइलीं तुहरे पासा, दास कबीर भल कैल निरासा।

सबद-109

लोग बोलैं दूरि गए कबीर, या मति कोइ कोइ जानै धीर।
दसरथ सुत तिहुं लोकहिं जाना, राम नाम का मरम है आना।
जेहि जिव जानि परा जस लेखा, रजु को कहे उरग सम पेखा।
जद्यपि फल उत्तम गुन जाना, हरि छोड़ि मन मुक्ति अनुमाना।
हरि अधार जस मीनहि नीरा, और जतन कछु कहै कबीरा।

सबद-110

आपन कर्म न मेटो जाई।
कर्म का लिखा मिटै धौं कैसे, जो युग कोटि सिराई॥
गुरु वशिष्ठ मिलि लगन सुधायो, सूर्य मन्त्र एक दीन्हा।
जो सीता रघुनाथ बिवाही, पल एक संच न कीन्हा॥
तीन लोक के कर्ता कहिये, बालि बधो बरियाई।
एक समय ऐसी बनि आई, उनहूं औसर पाई॥
नारद मुनि को बदन छिपायो, कीन्हों कपि को स्वरूपा॥
शिशुपाल की भुजा उपारी, आपु भये हरि ठूठा॥

पार्वती को बांझ न कहिये, ईश्वर न कहिये भिखारी।
कहहिं कबीर कर्ता की बातें, कर्म की बात निनारी।

सबद-111

है कोई गुरु ज्ञानी, जगत उलटि बेद बूझै।
पानी में पावक बरै, अन्धहि आंखि न सूझै॥
गाई तो नाहर खायो, हरिन खायो चीता।
काग लंगर फांदि के, बटेर बाज जीता॥
मूस तो मंजारि खायो, स्यार खायो श्वाना।
आदि को उदेश जाने, तासु बेस बाना॥
एकहिं दादुर खायो, पांचहिं भुवंगा।
कहहिं कबीर पुकारि के, हैं दोऊ एकै संगा॥

सबद-112

झगरा एक बढ़ो राजाराम, जो निरुवारे सो निर्बान।
ब्रह्म बड़ा कि जहां से आया, बेद बड़ा कि जिन्ह उपजाया।
ई मन बड़ा कि जेहि मन माना, राम बड़ा कि रामहि जाना।
भ्रमि-भ्रमि कबिरा फिरे उदास, तीर्थ बड़ा कि तीर्थ का दास।

सबद-113

झूठे जनि पतियाहु हो, सुनु संत सुजाना।
तेरे घट में ही ठग पूर हैं, मति खोवहु अपाना॥
झूठहि की मंडान है, धरती असमाना।
दसहुं दिसा वाके फंद हैं, जीव घेरिन आना॥
जोग जप तप संजमा, तीरथ व्रत दाना।
नौधा वेद कितेब है, झूठे का बाना॥
काहू के बचनहि फुरे, काहू के करामाती।
मान बड़ाई ले रहे, हिन्दू तुरुक दोऊ जाती॥

बात ब्यौंते असमान की, मुद्दति नियरानी।
बहुत खुदी दिल राखते, बूड़े बिनु पानी॥
कहैं कबीर कासों कहौं, सकलो जग अंधा।
सांचा सों भागा फिरै, झूठे का बंदा॥

सबद-114

सार शब्द से बांचिहो, मानहु इतबारा हो।
आदि पुरुष एक वृक्ष है, निरंजन डारा हो।
तिरदेवा शाखा भये, पत्र संसारा हो।
ब्रह्मा वेद सही कियो, शिव योग पसारा हो।
विष्णु माया उत्पति कियो, ई उरले ब्यौहारा हो।
तीन लोक दशहूं दिशा, यम रोकिन द्वारा हो।
कीर भये सब जीयरा, लिये विष का चारा हो।
ज्योति स्वरूपी हाकिमा, जिन्ह अमल पसारा हो।
कर्म की बन्शी लाय के, पकरो जग सारा हो।
अमल मिटावो तासु का, पठवों भव पारा हो।
कहहिं कबीर तोहि निर्भय करों, परखों टकसारा हो।

सबद-115

संतो ऐसि भूल जग माहीं, जाते जीव मिथ्या में जाहीं।
पहिले भूले ब्रह्म अखंडित, झांई आपुहि मानी।
झांई में भूलत इच्छा कीनी, इच्छा ते अभिमानी॥
अभिमानी कर्ता है बैठे, नाना ग्रन्थ चलाया।
वही भूल में सब जग भूला, भूल का मरम न पाया॥
लख चौरासी भूल ते कहिये, भूल ते जग बिटमाया।
जो है सनातन सोई भूला, अब सोइ भूलहि खाया॥
भूल मिटै गुरु मिलै पारखी, पारख देहिं लखाई।
कहहिं कबीर भूल की औषध, पारख सबकी भाई॥

❀इति द्वितीय प्रकरण—सबद❀
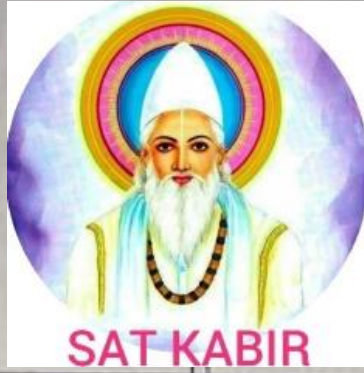
मूल बीजक

तृतीय प्रकरण : ज्ञान चौंतीसा

ज्ञान चौंतीसा

ॐकार आदि जो जानै, लिख कै मेटै ताहि सो मानै।
ॐकार कहैं सब कोई, जिन्ह यह लखा सो बिरला होई।
कका कंवल किर्ण में पावै, शशि ब्रिगसित सम्पुट नहिं आवै।
तहां कुसुम रंग जो पावै, औगह गहि के गगन रहावै।
खखा चाहै खोरि मनावै, खसमहिं छांड़ि दहूं दिशि धावै
खसमहि छाड़ि छिमा हो रहिये, होय न खीन अक्षयपद लहिये।
गगा गुरु के बचनहिं मान, दूसर शब्द करो नहिं कान।
तहां बिहंगम कबहु न जाई, औगह गहि के गगन रहाई।
घघा घट बिनसै घट होई, घटही में घट राखु समोई।
जो घट घटै घटहि फिरि आवै, घट ही में फिर घटहि समावै।
ङङा निरखत निशिदिन जाई, निरखत नैन रहे रतनाई।
निमिष एक जो निरखै पावै, ताहि निमिष में नैन छिपावै।
चचा चित्र रचो बड़ा भारी, चित्र छोड़ि तैं चेतु चित्रकारी।
जिन्ह यह चित्र बिचित्र है खेला, चित्र छोड़ि तैं चेतु चितेला।

छछा आहि छत्रपति पासा, छकि किन रहहु मेटि सब आसा।
मैं तोहीं छिन-छिन समुझावा, खसम छाड़ि कस आपु बंधावा।
जजा ई तन जियत न जारो, जोबन जारि युक्ति तन पारो।
जो कुछ युक्ति जानि तन जरै, ई घट ज्योति उजियारी करै।
झझा अरुझि-सरुझि कित जान, अरुझनि हींड़त जाय परान।
कोटि सुमेरु ढूंढ़ि फिरि आवै, जो गढ़ गढ़ै गढ़ैया सो पावै।
ञञा निग्रह सनेहू, करु निरुवार सन्देहू।
नहिं देखे नहिं भाजिया, परम सयानप येहू।
जहां न देखि तहां आपु भजाऊ, जहां नहीं तहां तन मन लाऊ।
जहां नहीं तहां सब कुछ जानी, जहां है तहां ले पहिचानी।
टटा बिकट बाट मन माहीं, खोलि कपाट महल मों जाहीं।
रही लटापटि जुटि तेहि माहीं, होहि अटल तब कतहुं न जाहीं।
ठठा ठौर दूर ठग नियरे, नित के निठुर कीन्ह मन घेरे।
जे ठग ठगे सब लोग सयाना, सो ठग चीन्ह ठौर पहिचाना।
डडा डर उपजे डर होई, डर ही में डर राखु समोई।
जो डर डरै डरहि फिर आवै, डरही में फिर डरहि समावै।
ढढा हींड़त ही कित जान, हींड़त ढूंढ़त जाय परान।
कोटि सुमेरु ढूंढ़ि फिरि आवै, जेहि ढूंढ़ा सो कतहुं न पावै।
णणा दुई बसाये गाऊं, रेणा ढूंढ़े तेरी नाऊं।
मूये एक जाय तजि धना, मरे इत्यादिक केते को गना।
तता अति त्रियो नहिं जाई, तन त्रिभुवन में राखु छिपाई।
जो तन त्रिभुवन माहिं छिपावै, तत्त्वहि मिलि तत्त्व सो पावै।
थथा अति अथाह थाहो नहिं जाई, 'ई' थिर 'ऊ' थिर नाहिं रहाई।
थोरे-थोरे थिर होउ भाई, बिन थम्बे जस मन्दिर थंभाई।
ददा देखहु बिनशनहारा, जस देखहु तस करहु विचारा।
दशहू द्वारे तारी लावै, तब दयाल के दर्शन पावै।
धधा अर्ध माहिं अंधियारी, अर्ध छोड़ि ऊर्ध मन तारी।
अर्ध छोड़ि ऊर्ध मन लावै, आपा मेटि के प्रेम बढ़ावै।
चौथे वो ना महं जाई, राम का गद्धा होय खर खाई।

पपा पाप करें सब कोई, पाप के करे धर्म नहिं होई।
पपा कहै सुनहु रे भाई, हमरे से इन किछुवो न पाई।
फफा फल लागे बड़ दूरी, चाखे सतगुरु देइ न तूरी।
फफा कहे सुनहु रे भाई, स्वर्ग पताल की खबरि न पाई।
बबा बरबर करें सब कोई, बरबर करे काज नहिं होई।
बबा बात कहै अर्थाई, फल का मर्म न जानहु भाई।
भभा भभरि रहा भरपूरी, भभरे ते है नियरे दूरी।
भभा कहै सुनहु रे भाई, भभरे आवै भभरे जाई।
ममा के सेये मर्म नहिं पाई, हमरे से इन मूल गंमाई।
माया मोह रहा जग पूरी, माया मोहहि लखहु बिचारी।
यया जगत रहा भरपूरी, जगतहु ते है जाना दूरी।
यया कहै सुनहु रे भाई, हमहीं ते इन जै जै पाई।
ररा रारि रहा अरुझाई, राम के कहै दुख दारिद्र जाई।
ररा कहै सुनहु रे भाई, सतगुरु पूंछि के सेवहु आई।
लला तुतुरे बात जनाई, तुतुरे आय तुतुरे परिचाई।
आप तुतुरे और की कहई, एकै खेत दूनों निर्बहई।
ववा वह वह कहैं सब कोई, वह वह कहै काज नहिं होई।
वह तो कहै सुनै जो कोई, स्वर्ग पताल न देखै जोई।
शशा सर नहिं देखे कोई, सर शीतलता एकै होई।
शशा कहै सुनहु रे भाई, शून्य समान चला जग जाई।
षषा खरा करे सब कोई, खर खर करे काज नहिं होई।
षषा कहै सुनहु रे भाई, राम नाम ले जाहु पराई।
ससा सरा रचो बरियाई, सर बेधे सब लोग तवाई।
ससा के घर सुन गुण होई, इतनी बात न जाने कोई।
हहा हाय हाय में सब जग जाई, हर्ष सोग सब माहिं समाई।
हंकरि हंकरि सब बड़ बड़ गयऊ, हाहा मर्म न काहू पयऊ।
क्षक्षा क्षिनमें परलय सबमिटि जाई, छेवपरे तब को समुझाई।
छेवपरे काहु अन्त न पाया, कहहिं कबीर अगमन गोहराया।

❀इति तृतीय प्रकरण—ज्ञान चौंतीसा❀
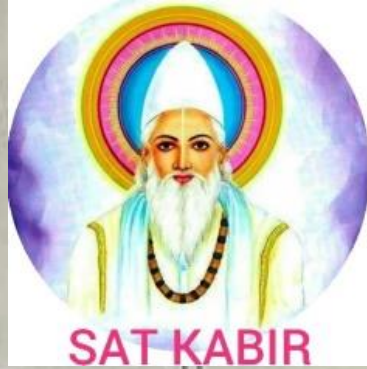
मूल बीजक

चतुर्थ प्रकरण : विप्रमतीसी

विप्रमतीसी

सुनहु सभन्हि मिलि विप्रमतीसी, हरि बिनु बूड़ी नाव भरी सी।
ब्राह्मन होय कै ब्रह्म न जानै, घर महं यज्ञ प्रतिग्रह आनै।
जे सिरजा तेहि नहिं पहिचानै, करम धरम मति बैठि बखानै।
ग्रहन अमावस और दूईजा, सांती पाठ प्रयोजन पूजा।
प्रेत कनक मुख अंतर बासा, आहुति सत्य होम की आसा।
कुल उत्तिम जग मांहि कहावैं, फिरि फिरि मध्य करम करावैं।
सुत दारा मिलि जूठो खाई, हरि भक्तों के छूति लगाई।
करम असौच उचिष्टा खाहीं, मतिभरिष्ट जम लोकहि जाहीं।
नहाय खोरि उत्तिम ह्वै आये, विस्नु भगत देखे दुख पाये।
स्वारथ लागि रहै बेकाजा, नाम लेत पावक जिमि डाजा।
राम कृस्न की छोडिन्हि आसा, पढि गुनि भए कृतिम के दासा।
करम पढ़ैं औ करमहिं कौं धावैं, जेहि पूंछे तेहि करम दिढावैं।
निहकरमी कै निंदा कीजै, करम करै ताही चित दीजै।
भक्ति भगवंत की हृदया लावैं, हिरनाकुस को पंथ चलावैं।
देखहु सुमति केर परगासा, बिनु अभिअंतर भये किरतिम के दासा।

जाके पूजे पाप न ऊड़ै, नाम सुमिरिनी भव मंह बूड़ै।
पाप पुन्नि के हाथहि पासा, मारि जगत का कीन्ह बिनासा।
ई बहनी कुल बहनि कहावै, ई गृह जारैं वा गृह मारैं।
बैठे ते घर साहु कहावैं, भितर भेद मन मुखहिं लखावैं।
ऐसी बिधि सुर विप्र भनीजै, नाम लेत पीठासन दीजै।
बूड़ि गए नहिं आपु संभारा, ऊंच नीच कहु काहि जोहारा।
ऊंच नीच है मध्य की बानी, एक पवन एक है पानी।
एकै मटिया एक कुम्हारा, एक सभन का सिरजनहारा।
एक चाक सब चित्र बनाई, नाद-विंद के मध्य समाई।
व्यापक एक सकल की जोती, नाम धरे का कहिये भौती।
राछस करनी देव कहावैं, बाद करैं गोपाल न भावैं।
हंस देह तजि न्यारा होई, ताकर जाति कहैं धौं कोई।
स्याह सफेद की राता पियरा, अबरन बरन की ताता सियरा।
हिंदू तुरक की बूढ़ो वारा, नारि पुरख का करहु विचारा।
कहिये काहि कहा नहिं माना, दास कबीर सोई पै जाना।

॥साखी॥

बहा है बहि जात है, कर गहि चंहु ओर।
जो कहा नहिं मानै, तो दे धक्का दुई और।

❀इति चतुर्थ प्रकरण—विप्रमतीसी❀
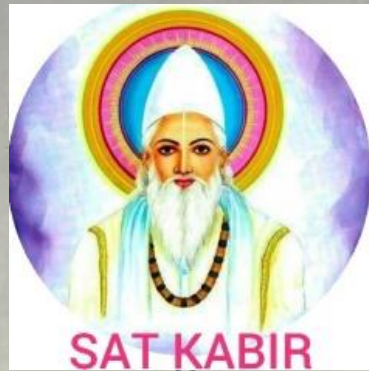
मूल बीजक

पंचम प्रकरण : कहरा

कहरा-1

सहज ध्यान रहु सहज ध्यान रहु, गुरु के बचन समाई हो।
मेली सृष्टि चराचित राखहु, रहहु दृष्टि लौ लाई हो।
जस दुख देखि रहहु यह औसर, अस सुख होइहैं पाये हो।
जो खुटकार बेगि नहिं लागे, हृदय निवारहु कोहू हो।
मुक्ति की डोरि गाढ़ि जनि खैंचहु, तब बझिहैं बड़ राहू हो।
मनुवहि कहहु रहहु मन मारे, खिजुवा खीजि न बोले हो।
मानू मीत मितैयो न छोड़े, कमऊं गांठि न खोले हो।
भोगउ भोग भुक्ति जनि भूलहु, योग युक्ति तन साधहु हो।
जो यह भांति करहु मतवलिया, ता मत को चित बांधहु हो।
नहिं तो ठाकुर हैं अति दारुण, करिहैं चाल कुचाली हो।
बांधि मारि डण्ड सब लेहीं, छूटहिं तब मतवाली हो।
जबहीं सावत आनि पहुंचे, पीठ सांटि भल टुटिहैं हो।
ठाढ़े लोग कुटुम सब देखें, कहै काहू के न छुटहैं हो।
एक तो निहुरि पांव परि बिनवै, बिनती किये नहिं माने हो।
अनचीन्हे रहेउ न कियेहु चिन्हारी, सो कैसे पहिचनबेउ हो।

लीन्ह बुलाय बात नहिं पूछै, केवट गर्भ तन बोले हो।
जाकर गांठि समर कछु नाहीं, सो निर्धनिया होय डोले हो।
जिन सम युक्ति अगमन कै राखिन, धरिन मच्छ भरि डेहरि हो।
जेकर हाथ पांव कछु नाहीं, धरन लागि तेहि सोहरि हो।
पेलना अछत पेलि चलु बौरे, तीर-तीर का टोवहु हो।
उथले रहहु परहु जनि गहिरे, मति हाथहु की खोवहु हो।
तर कै घाम ऊपर कै भुंभुरी, छांह कतहुं नहिं पायहु हो।
ऐसेनि जानि पसीझेहु सीझेहु, कस न छतुरिया छायहु हो।
जो कछु खेड़ कियहु सो कियहु, बहुरि खेड़ कस होई हो।
सासु-ननद दोउ देत उलाटन, रहहु लाज मुख गोई हो।
गुरु भौ ढील गोनी भइ लचपच, कहा न मानेहु मोरा हो।
ताजी तुर्की कबहुं न साधेहु, चढ़ेहु काठ के घोरा हो।
ताल झांझ भल बाजत आवै, कहरा सब कोई नाचे हो।
जेहि रंग दुलहा ब्याहन आये, दुलहिनि तेहि रंग रांचे हो।
नौका अछत खेवै नहिं जाने, कैसे कै लगबेहु तीरा हो।
कहहिं कबीर राम रस माते, जोलहा दास कबीरा हो।

कहरा-2

मत सुनु मानिक मत सुनु मानिक, हृदया बन्द निवारहु हो।
अटपट कुम्हरा करै कुम्हरैया, चमरा गांव न बांचे हो।
नित उठि कोरिया पेट भरतु है, छिपिया आंगन नांचे हो।
नित उठि नौवा नाव चढ़तु है, बेरहि बेरा बोरे हो।
राउर की कछु खबरि न जानहु, कैसे कै झगरा निबेरहु हो।
एक गांव में पांच तरुनि बसे, जेहिमा जेठ जेठानी हो।
आपन आपन झगरा प्रकासिनि, पिया सों प्रीति नसाइनि हो।
भैसिन माहिं रहत नित बकुला, तिकुला ताकि न लीन्हा हो।
गाइन मांहि बसेउ नहिं कबहूं, कैसेक पद पहिचनबेउ हो।
पन्थी पन्थ बूझि नहिं लीन्हा, मूढ़हि मूढ़ गंवारा हो।
घाट छोड़ि कस औघट रेंगहु, कैसे कै लगबेहु तीरा हो।

जतइत के धन हेरिन ललचिन, कोदइत के मन दौरा हो।
दुई चकरी जनि दरर पसारहु, तब पैहौ ठीक ठौरा हो।
प्रेम बाण एक सतगुरु दीन्हों, गाढ़ो तीर कमाना हो।
दास कबीर कीन्ह यह कहरा, महरा मांहि समाना हो।

कहरा-3

राम नाम का सेवहु बीरा, दूरि नाहिं दूरि आशा हो।
और देव का सेवहु बौरे, ई सब झूठी आशा हो।
ऊपर ऊजर कहा भौ बौरे, भीतर अजहूं कारो हो।
तन के वृद्ध कहा भौ बौरे, मनुवा अजहूं बारो हो।
मुख के दांत गये कहा भौ बौरे, भीतर दांत लोहे के हो।
फिर-फिर चना चबाय विषय के, काम क्रोध मद लोभ के हो।
तन की सकल संज्ञा घटि गयऊ, मनहि दिलासा दूना हो।
कहहिं कबीर सुनो हो सन्तो, सकल सयाना पहुंना हो।

कहरा-4

ओढ़न मोरा राम नाम, मैं रामहि का बनजारा हो।
राम नाम का करहु बनिजिया, हरि मोरा हटवाई हो।
सहस्त्र नाम का करों पसारा, दिन-दिन होत सवाई हो।
जाके देव वेद पछ राखा, ताके होत हटवाई हो।
कानि तराजू सेर तिनि पउवा, तुकिनी ढोल बजाई हो।
सेर पसेरी पूरा कैले, पासंग कतहुं न जाई हो।
कहहिं कबीर सुनो हो सन्तो, जोर चला जहंड़ाई हो।

कहरा-5

राम नाम भजु राम नाम भजु, चेति देखु मन माहीं हो।
लक्ष करोरि जोरि धन गाड़े, चलत डोलावत बांही हो।
दादा-बाबा औ परपाजा, जिन्हके यह भुइं भांड़े हो।
आंधर भये हियहु की फूटी, तिन्ह काहे सब छांड़े हो।

ई संसार असार को धन्धा, अन्तकाल कोइ नाहीं हो।
उपजत बिनसत बार न लागे, ज्यों बादर की छांहीं हो।
नाता-गोता कुल-कुटुम्ब सब, इन्ह कर कौन बड़ाई हो।
कहहिं कबीर एक राम भजे बिनु, बूड़ी सब चतुराई हो।

कहरा-6

राम नाम बिनु राम नाम बिनु, मिथ्या जन्म गमायो हो।
सेमर सेइ सुवा ज्यों जहंड़े, ऊन परे पछिताई हो।
जैसे मदपी गांठि अर्थ दै, घरहु कि अकिल गमाई हो।
स्वादे वोद्र भरे धौं कैसे, ओसै प्यास न जाई हो।
दर्ब हीन जैसे पुरुषारथ, मन ही मांहि तवाई हो।
गांठी रतन मर्म नहिं जाने, पारख लीन्हा छोरी हो।
कहहिं कबीर यह औसर बीते, रतन न मिले बहोरी हो।

कहरा-7

रहहु संभारे राम बिचारे, कहता हौं जे पुकारे हो।
मूंड़ मुंड़ाय फूलि के बैठे, मुद्रा पहिर मंजूसा हो।
तेहि ऊपर कछु छार लपेटे, भितर-भितर घर मूसा हो।
गांव बसतु हैं गर्भ भारती, बाम काम हंकारा हो।
मोहन जहां तहां लै जइहैं, नहिं पत रहल तुम्हारा हो।
मांझ मंझरिया बसै सो जानै, जन होइहैं सो थीरा हो।
निर्भय भये तहां गुरु की नगरिया, सुख सोवै दास कबीरा हो।

कहरा-8

क्षेम कुशल औ सही सलामत, कहहु कौन को दीन्हा हो।
आवत जात दोऊ विधि लूटे, सर्वतंग हरि लीन्हा हो।
सुर नर मुनि जति पीर औलिया, मीरा पैदा कीन्हा हो।
कहां लों गनों अनन्त कोटि लों, सकल पयाना कीन्हा हो।
पानी पवन अकाश जायंगे, चन्द्र जायंगे सूरा हो।

ये भि जायंगे वो भि जायंगे, परत न काहू के पूरा हो।
कुशल कहत-कहत जग बिनसे, कुशल काल की फांसी हो।
कहहिं कबीर सारी दुनिया बिनसे, रहे राम अविनाशी हो।

कहरा-9

ऐसनि देह निरालप बौरे, मुवल छुवे नहिं कोई हो।
डण्डवा की डोरिया तोरि लराइनि, जो कोटिन धन होई हो।
उर्ध निश्वासा उपजि तरासा, हंकराइनि परिवारा हो।
जो कोइ आवै बेगि चलावै, पल एक रहन न पाई हो।
चन्दन चीर चतुर सब लेपैं, गरे गजमुक्ता के हारा हो।
चौसठ गीध मुये तन लूटै, जम्बुकन वोद्र बिदारा हो।
कहहिं कबीर सुनो हो सन्तो, ज्ञान हीन मति हीना हो।
एक-एक दिना याहि गति सबकी, कहा राव कहा दीना हो।

कहरा-10

हौं सबहिन में हौं ना हौं, मोहि बिलग-बिलग बिलगाइल हो।
ओढ़न मोरा एक पिछौरा, लोग बोलैं एकताई हो।
एक निरन्तर अन्तर नाहीं, ज्यों शशि घट जल झांई हो।
एक समान कोइ समुझत नाहीं, जाते जरा-मरण भ्रम जाई हो।
रैन दिवस ये तहवां नाहीं, नारि-पुरुष समताई हो।
हौं मैं बालक बूढ़ो नाहीं, ना मोरे चिलकाई हो।
त्रिविधि रहौं सभनि मां बरतों, नाम मोर रमुराई हो।
पठये न जाऊं आने नाहिं आवों, सहज रहौं दुनियाई हो।
जोलहा तान बान नहिं जाने, फाटि बिने दश ठांई हो।
गुरु परताप जिन्हें जस भाष्यो, जन बिरले सो पाई हो।
अनन्त कोटि मन हीरा बेधो, फिटकी मोल न पाई हो।
सुर-नर-मुनि जाके खोज परे है, कछु-कछु कबिरन पाई हो।

कहरा-11

ननदी गे तैं बिषम सोहागिनि, तैं निन्दले संसारा गे।
आवत देखि मैं एक संग सूती, तैं औ खसम हमारा गे।
मोरे बाप के दुइ मेहररुआ, मैं अरु मोर जेठानी गे।
जब हम रहलि रसिक के जग में, तबहि बात जग जानी गे।
माई मोरि मुवलि पिता के संगे, सरा रचि मुवल संगाती गे।
आपुहि मुवलि और ले मुवली, लोग कुटुम संग साथी गे।
जौं लौं श्वास रहै घट भीतर, तौं लौं कुशल परी हैं गे।
कहहिं कबीर जब श्वास निकरि गौ, मन्दिर अनल जरी हैं गे।

कहरा-12

ई माया रघुनाथ कि बौरी, खेलन चली अहेरा हो।
चतुर चिकनियां चुनि-चुनि मारे, कोइ न राखेउ न्यारा हो।
मौनी बीर दिगम्बर मारे, ध्यान धरन्ते योगी हो।
जंगल में के जंगम मारे, माया किनहुं न भोगी हो।
वेद पढ़न्ते वेदुवा मारे, पूजा करन्ते स्वामी हो।
अर्थ विचारत पण्डित मारे, बांधेउ सकल लगामी हो।
शृंगी ऋषि बन भीतर मारे, शिर ब्रह्मा का फोरी हो।
नाथ मछन्दर चले पीठ दै, सिंघल हूं में बोरी हो।
साकट के घर करता-धरता, हरि भक्तों के चेरी हो।
कहहिं कबीर सुनो हो सन्तो, ज्यों आवै त्यों फेरी हो।

❀इति पंचम प्रकरण—कहरा❀
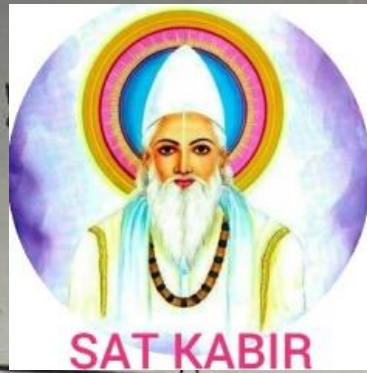
मूल बीजक

षष्ठम प्रकरण : बसन्त

बसन्त-1

जाके बारह मास बसन्त होय, ताके परमारथ बूझे बिरला कोय।
बरसै अगिन अखण्ड धार, हरियर भौ बन अठारह भार।
पनिया आदर धरनि लोय, पौन गहै कसमलिन धोय।
बिनु तरिवर फूले आकाश, शिव विरंचि तहां लेई बास।
सनकादिक भूले भंवर बोय, लख चौरासी जोइनि जोय।
जो तोहि सतगुरु सत्त लखाव, ताते न छूटे चरण भाव।
अमर लोक फल लावै चाव, कहहिं कबीर बूझै सो पाव।

बसन्त-2

रसना पढ़ि लेहु श्री बसन्त, बहुरि जाय परबेहु यम के फन्द।
मेरुडण्ड पर डंक दीन्ह, अष्ट कंवल परचारि लीन्ह।
ब्रह्म अगिन कियो परकाश, अर्ध ऊर्ध तहां बहै बतास।
नौ नारी परिमल सो गांव, सखी पांच तहां देखन धाव।
अनहद बाजा रहल पूरि, तहं पुरुष बहत्तर खेलैं धूरि।
माया देखि कस रह्यो है भूलि, जस बनस्पति रहि है फूलि।
कहहिं कबीर यह हरि के दास, फगुआ मांगे बैकुण्ठ बास।

बसन्त-3

मैं आयों मेस्तर मिलन तोहिं, ऋतु बसन्त पहिरावहु मोहिं।
लम्बी पुरिया पाई छीन, सूत पुराना खूंटा तीन।
सर लागै तेहि तिनसै साठ, कसनि बहत्तर लागु गांठ।
खुरखुर-खुरखुर चालै नारि, बैठि जोलाहिन पल्थी मारि।
ऊपर नचनियां करत कोड़, करिगहमा दुइ चलत गोड़।
पांच पचीसों दशहूं द्वार, सखी पांच तहां रची धमार।
रंग बिरंगी पहिरे चीर, हरि के चरण धै गावैं कबीर।

बसन्त-4

बुढ़िया हंसि बोलि मैं नितही बार, मोसे तरुनि कहो कवनि नार।
दांत गये मोरे पान खात, केश गये मोरे गंग नहात।
नैन गये मोरे कजरा देत, बैस गये पर पुरुष लेत।
जान पुरुषवा मोर अहार, अनजाने का करौं सिंगार।
कहहिं कबीर बुढ़िया आनन्द गाय, पूत भतारहिं बैठी खाय।

बसन्त-5

तुम बुझ-बुझ पण्डित कौनि नारि, काहु न ब्याहलि है कुमारि।
सब देवन मिलि हरिहि दीन्ह, चारिउ युग हरि संग लीन्ह।
प्रथम पदुमिनी रूप आहि, है सांपिनि जग खेदि खाहि।
ई बर जोवत ऊ बर नाहिं, अति रे तेज त्रिय रैनि ताहि।
कहहिं कबीर ये जग पियारि, अपने बलकवहिं रहल मारि।

बसन्त-6

माई मोर मनुसा अतिरे सुजान, धन्धा कुटि-कुटि करत बिहान।
बड़ी भोर उठि आंगन बाढु, बड़ो खांच ले गोबर काढु।
बासी भात मनुसे लिहल खाय, बड़ो घैल लिये पानी को जाय।
अपने सैयां की मैं बांधूंगी पाट, लै बेचूंगी हाटो हाट।
कहहिं कबीर ये हरि के काज, जोइया के ढिग रहि कौनि लाज।

बसन्त-7

घरहि में बाबुल बाढ़लि रारि, उठि-उठि लागलि चपल नारि।
एक बड़ी जाके पांच हाथ, पांचों के पचीस साथ।
पचीस बतावैं और-और, और बतावैं कइ एक ठौर।
अन्तर मध्ये अन्त लेइ, झकझोरि झोरा जीवहिं देइ।
आपन-आपन चाहैं भोग, कहु कैसे कुशल परिहैं योग।
विवेक-विचार न करे कोय, सब खलक तमाशा देखें लोय।
मुख फारि हंसे राव रंक, ताते धरे न पावैं एको अंक।
नियरे न खोजै बतावै दूरि, चहुंदिश बागुलि रहलि पूरि।
लच्छ अहेरी एक जीव, ताते पुकारै पीव-पीव।
अबकी बार जो होय चुकाव, कहहिं कबीर ताकी पूरी दाव।

बसन्त-8

कर पल्लव केवल खेले नारि, पंडित होय सो लेइ बिचारि।
कपरा न पहिरे रहै उघारि, निर्जिव से धनि अति रे पियारि।
उलटी पलटी बाजु तार, काहू मारै काहू उबार।
कहै कबीर दासन के दास, काहू सुख दै काहु निरास।

बसन्त-9

ऐसो दुर्लभ जात शरीर, राम नाम भजु लागू तीर।
गये बेनु बलि गये कंश, दुर्योधन को बूड़ो बंश।
पृथु गये पृथिवी के राव, त्रिविक्रम गये रहे न काव।
छौ चकवै मण्डली के झारि, अजहूं हो नर देखु बिचारि।
हनुमत कश्यप जनक बालि, ई सब छेंकल यम के द्वारि।
गोपीचन्द भल कीन्ह योग, जस रावण मारयो करत भोग।
ऐसी जात देखि नर सबहिं जान, कहहिं कबीर भजु राम नाम।

बसन्त-10

सबहीं मद माते कोई न जाग, संगहि चोर घर मूसन लाग।
योगी माते योग ध्यान, पण्डित माते पढ़ि पुरान।
तपसी माते तप के भेव, संन्यासी माते कर हंमेव।
मोलना माते पढ़ि मुसाफ, काजी माते दै निसाफ।
संसारी माते माया के धार, राजा माते करि हंकार।
माते शुकदेव उद्धव अक्रूर, हनुमत माते लै लंगूर।
शिव माते हरि चरण सेव, कलि माते नामा जयदेव।
सत्य-सत्य कहैं सुमृति-वेद, जस रावण मारेउ घर के भेद।
चंचल मन के अधम काम, कहहिं कबीर भजु राम नाम।

बसन्त-11

शिवकाशी कैसी भई तुम्हारि, अजहूं हो शिव लेहु विचारि।
चोवा चन्दन अगर पान, घर घर सुमृति होत पुरान।
बहु विधि भवने लागू भोग, ऐसो नग्र कोलाहल करत लोग।
बहु विधि परजा लोग तोर, तेहि कारण चित ढीठे मोर।
हमरे बलकवा के इहै ज्ञान, तोहरा को समुझावै आन।
जो जेहि मन से रहल आय, जिव का मरण कहु कहां समाय।
ताकर जो कछु होय अकाज, ताहि दोष नहिं साहेब लाज।
हर हर्षित सो कहल भेव, जहां हम तहां दुसरा न केव।
दिना चारि मन धरहू धीर, जस देखैं तस कहहिं कबीर।

बसन्त-12

हमरे कहलक नहिं पतियार, आप बूड़े नर सलिल धार।
अन्धा कहै अन्धा पतियाय, जस बिश्वा के लगन धराय।
सो तो कहिये ऐसो अबूझ, खसम ठाढ़ ढिग नाहीं सूझ।
आपन-आपन चाहैं मान, झूठ प्रपंच सांच करि जान।
झूठा कबहुं न करिहैं काज, हौं बरजों तोहि सुनु निलाज।
छाड़हु पाखण्ड मानो बात, नहिं तो परबेहु यम के हाथ।
कहहिं कबीर नर किया न खोज, भटकि मुवा जस बन के रोझ।

❀ इति षष्ठम् प्रकरण—बसन्त ❀
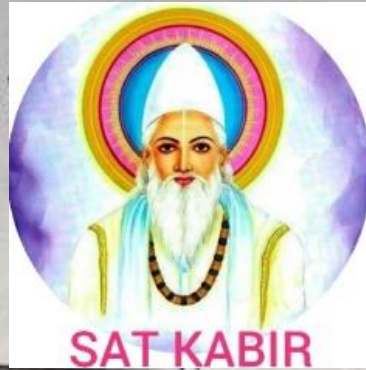
मूल बीजक

सप्तम प्रकरण : चांचर

चांचर-1

खेलति माया मोहनी, जिन्ह जेर कियो संसार।
रचेउ रंगते चूनरी, कोइ सुन्दरि पहिरे आय।
शोभा अद्भुत रूप वाकी, महिमा बरणि न जाय।
चन्द्र बदनि मृगलोचनी, माया बुन्दका दियो उघार।
जती सती सब मोहिया, गजगति ऐसी जाकी चाल।
नारद को मुख मांड़ि के, लीन्हों बसन छोड़ाय।
गर्भ गहेली गर्भ ते, उलटि चली मुसकाय।
शिव सन ब्रह्मा दौरि के, दूनों पकरे धाय।
फगुआ लीन्ह छुड़ाय के, बहुरि दियो छिटकाय।
अनहद धुनि बाजा बजै, श्रवण सुनत भौ चाव।
खेलनहारा खेलि है, जैसी वाकी दांव।
ज्ञान ढाल आगे दियो, टारे टरै न पांव।
खेलनहारा खेलि हैं, बहुरि न वाकी दांव।
सुर नर मुनि औ देवता, गोरख दत्त और ब्यास।
सनक-सनन्दन हारिया, और की केतिक बात।

छिलकत थोथे प्रेम सों, मारे पिचकारी गात।
कै लीन्हों बसि आपने, फिर फिर चितवत जात।
ज्ञान डांग ले रोपिया, त्रिगुण दियो है साथ।
शिवसन ब्रह्मा लेन कहो है, और की केतिक बात।
एक ओर सुन नर मुनि ठाड़े, एक अकेली आप।
दृष्टि परे उन काहु न छाड़े, कै लीन्हों एकै धाप।
जेते थे तेते लिए, घूंघट माहिं समोय।
कज्जल वाकी रेख है, अदग गया नहिं कोय।
इन्द्र कृष्ण द्वारे खड़े, लोचन ललचि लजाय।
कहहिं कबीर ते ऊबरे, जाहि न मोह समाय।

चांचर-2

जारो जग का नेहरा, मन बौरा हो।
जामें सोग सन्ताप, समुझि मन बौरा हो।
तन धन से क्या गर्भ सी, मन बौरा हो।
भस्म कीन्ह जाके साज, समुझि मन बौरा हो।
बिना नेव का देव घरा, मन बौरा हो।
बिन कहगिल की ईंट, समुझि मन बौरा हो।
कालबूत की हस्तिनी, मन बौरा हो।
चित्र रचो जगदीश, समुझि मन बौरा हो।
काम अन्ध गज बशि परे, मन बौरा हो।
अंकुश सहियो सीस, समुझि मन बौरा हो।
मर्कट मूठी स्वाद की, मन बौरा हो।
लीन्हों भुजा पसारि, समुझि मन बौरा हो।
छूटन की संशय परी, मन बौरा हो।
घर घर नाचेउ द्वार, समुझि मन बौरा हो।
ऊंच नीच समझेउ नहीं, मन बौरा हो।
घर घर खायो डांग, समुझि मन बौरा हो।
ज्यों सुवना ललनी गुह्यो, मन बौरा हो।

ऐसो भरम विचार, समुझि मन बौरा हो।
पढ़े गुने क्या कीजिये, मन बौरा हो।
अन्त बिलैया खाय, समुझि मन बौरा हो।
सूने घर का पाहुना, मन बौरा हो।
ज्यों आवैं त्यों जाय, समुझि मन बौरा हो।
नहाने को तीरथ घना, मन बौरा हो।
पुजबे को बहु देव, समुझि मन बौरा हो।
बिनु पानी नर बूड़हीं, मन बौरा हो।
तुम टेकेउ राम जहाज, समुझि मन बौरा हो।
कहहिं कबीर जग भर्मिया, मन बौरा हो।
तुम छाड़हु हरि की सेव, समुझि मन बौरा हो।

❀ इति सप्तम प्रकरण—चांचर ❀
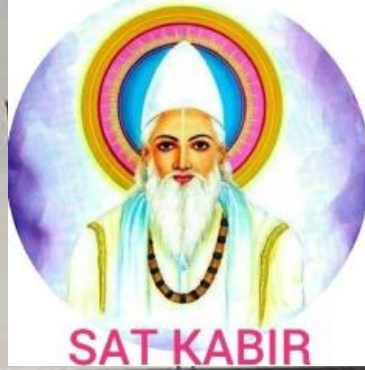
मूल बीजक

अष्टम प्रकरण : बेलि

बेलि-1

हंसा सरवर शरीर में, हो रमैया राम।
जागत चोर घर मूसहिं, हो रमैया राम।
जो जागल सो भागल, हो रमैया राम।
सोवत गैल बिगोय, हो रमैया राम।
आजु बसेरा नियरे, हो रमैया राम।
काल बसेरा बड़ि दूर, हो रमैया राम।
जइहों बिराने देश, हो रमैया राम।
नैन भरोगे दूर, हो रमैया राम।
त्रास मथन दधि मथन कियो, हो रमैया राम।
भवन मथेउ भरपूरि, हो रमैया राम।
फिरिके हंसा पाहुन भयो, हो रमैया राम।
बेधिन पद निर्बान, हो रमैया राम।
तुम हंसा मन मानिक, हो रमैया राम।
हटलो न मानेहु मोर, हो रमैया राम।
जस रे कियेहु तस पायेउ, हो रमैया राम।

हमरे दोष का देहु, हो रमैया राम।
अगम काटि गम कियेहु, हो रमैया राम।
सहज कियेहु विश्वास, हो रमैया राम।
राम नाम धन बनिज कियो, हो रमैया राम।
लादेउ बस्तु अमोल, हो रमैया राम।
पांच लदनुवां लादि चले, हो रमैया राम।
नौ बहियां दश गोनि, हो रमैया राम।
पांच लदनुवां खांगि परे, हो रमैया राम।
खाखर डारिनि फोरि, हो रमैया राम।
शिर धुनि हंसा उड़ि चले, हो रमैया राम।
सरवर मीत जो हारि, हो रमैया राम।
आगि जो लागी सरवर में, हो रमैया राम।
सरवर जरि भौ धूरि, हो रमैया राम।
कहहिं कबीर सुनो सन्तो, हो रमैया राम।
परखि लेहु खरा खोट, हो रमैया राम।

बेलि-2

भल सुमृति जहंड़ायेउ, हो रमैया राम।
धोखे कियेउ विश्वास, हो रमैया राम।
सो तो है बन्सी कसी, हो रमैया राम।
सो रे कियेहु विश्वास, हो रमैया राम।
ई तो है वेद शास्त्र, हो रमैया राम।
गुरु दीहल मोहि थापि, हो रमैया राम।
गोबर कोट उठायेउ, हो रमैया राम।
परिहरि जैबेहु खेत, हो रमैया राम।
मन बुधि जहवां न पहुंचे, हो रमैया राम।
तहां खोज कैसे होय, हो रमैया राम।
यह सुनि के मन धीरज धरहु, हो रमैया राम।
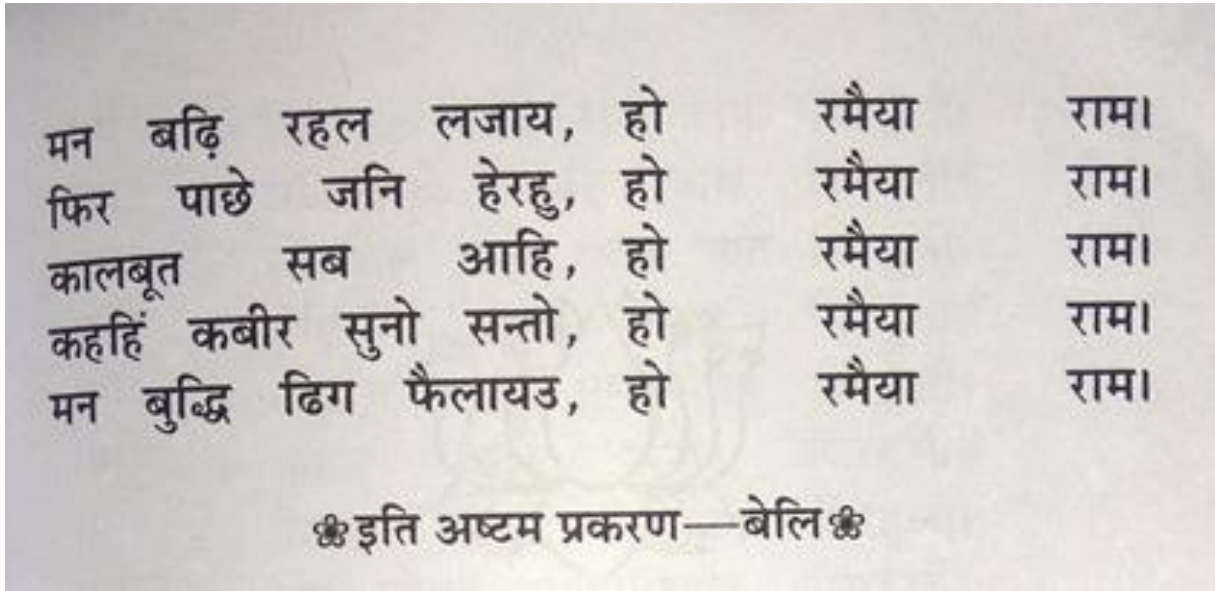
मन बढ़ि रहल लजाय, हो रमैया राम।

फिर पाछे जनि हेरहु, हो रमैया राम।

कालबूत सब आहि, हो रमैया राम।

कहहिं कबीर सुनो सन्तो, हो रमैया राम।

मन बुद्धि ढिग फैलायउ, हो रमैया राम।

❀इति अष्टम प्रकरण—बेलि❀
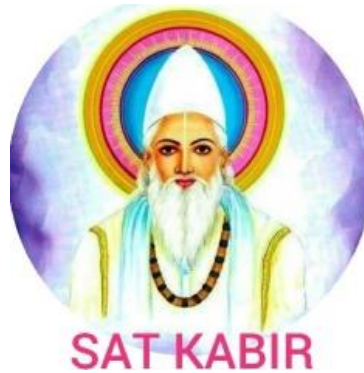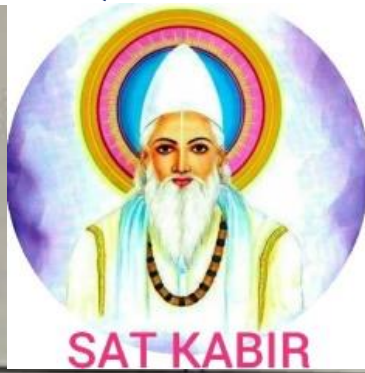
मूल बीजक

नवम प्रकरण : बिरहुली

बिरहुली-1

आदि अन्त नहिं होते बिरहुली।
नहिं जर पल्लव डार बिरहुली॥
निशि-बासर नहिं होते बिरहुली।
पौन पानि नहिं मूल बिरहुली॥
ब्रह्मादिक सनकादिक बिरहुली।
कथि गये योग अपार बिरहुली॥
मास असारे शीतल बिरहुली।
बोइनि सातों बीज बिरहुली॥
नित गोड़ै नित सींचै बिरहुली।
नित नव पल्लव डार बिरहुली॥
छिछिलि बिरहुली छिछिलि बिरहुली।
छिछिलि रहल तिहुंलोक बिरहुली॥
फूल एक भल फुलल बिरहुली।
फूलि रहल संसार बिरहुली॥

सो फुल लोढ़े सन्त जना बिरहुली।
बन्दि के राउर जाय बिरहुली॥
सो फल बन्दे भक्त जना बिरहुली।
डसिगौ बैतल सांप बिरहुली॥
विष की क्यारी तुम बोयहु बिरहुली।
गारुड़ बोले अपार बिरहुली॥
विषहर मन्त्र न मानै बिरहुली।
अब लोढ़त का पछिताहु बिरहुली॥
जन्म-जन्म यम अन्तरे बिरहुली।
फल एक कनयर डार बिरहुली॥
कहहिं कबीर सच पाव बिरहुली।
जो फल चाखहु मोर बिरहुली॥

❀इति नवम् प्रकरण—बिरहुली❀
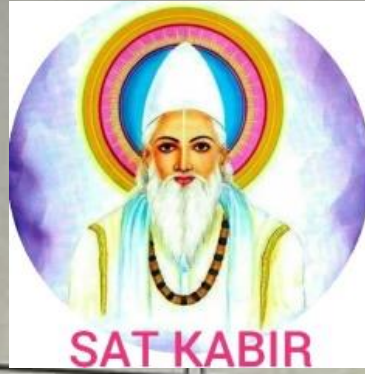
मूल बीजक

दशम प्रकरण : हिण्डोला

हिण्डोला-1

भरम हिण्डोला झूले, सब जग आय।
पाप-पुण्य के खम्भा दोऊ, मेरु माया मांहि।
लोभ भंवरा विषय मरुवा, काम कीला ठानि॥
शुभ अशुभ बनाये डांड़ी, गहे दूनों पानि।
कर्म पटरिया बैठि के, को-को न झूले आनि॥
झूलत गण गन्धर्व मुनिवर, झूलत सुरपति इन्द्र।
झूलत नारद शारदा, झूलत ब्यास फणिन्द्र॥
झूलत बिरंचि महेश शुक मुनि, झूलत सूरज चन्द्र।
आप निर्गुण-सगुण होय, झूलिया गोबिन्द॥
छौ चारि चौदह सात एकइस, तीनिउ लोक बनाय।
खानी बानी खोजि देखहु, अस्थिर कोइ न रहाय॥
खण्ड-ब्रह्माण्ड खोजि देखहु, छूटत कितहूं नाहिं।
साधु संगति खोजि देखहु, जीव निस्तरि कित जाहिं॥
शशि सूर रैनि शारदी, तहां तत्त्व परलय नाहिं।
काल अकाल परलय नहीं, तहां सन्त बिरले जाहिं॥

तहां से बिछुरे बहु कल्प बीते, भूमि परे भुलाय।
साधु संगति खोजि देखहु, बहुरि न उलटि समाय॥
ये झुलबे को भय नहीं, जो होय सन्त सुजान।
कहहिं कबीर सत सुकृत मिलै, तो बहुरि न झूले आन॥

हिण्डोला-2

बहु बिधि चित्र बनाय के, हरि रचिन क्रीड़ा रास।
जाहि न इच्छा झूलबे की, ऐसी बुधि केहि पास॥
झूलत-झूलत बहुकल्प बीते, मन नहिं छाड़े आस।
रच्यो रहस हिण्डोरवा, निशि चरिउ युग चौमास॥
कबहुंक ऊंचे कबहुंक नीचे, स्वर्ग भूत ले जाय।
अति भरमित भरम हिण्डोरवा, नेकु नहीं ठहराय॥
डरपत हौं यह झूलबे को, राखु यादव राय।
कहैं कबीर गोपाल बिनती, शरण हरि तुम आय॥

हिण्डोला-3

लोभ मोह के खम्भा दोऊ, मन से रच्यो है हिण्डोर।
झूलहिं जीव जहान जहां लगि, कितहुं न देखों थित ठौर॥
चतुर झूलहिं चतुराइया, झूलहिं राजा शेष।
चांद सूर्य दोउ झूलहीं, उनहुं न आज्ञा भेष॥
लख चौरासी जीव झूलहीं, रविसुत धरिया ध्यान।
कोटि कल्प युग बीतिया, अजहुं न माने हारि॥
धरति अकाश दोउ झूलहीं, झूलहिं पौना नीर॥
देह धरे हरि झूलहीं, ठाढ़े देखहिं हंस कबीर॥

❀ इति दशम प्रकरण—हिण्डोला ❀
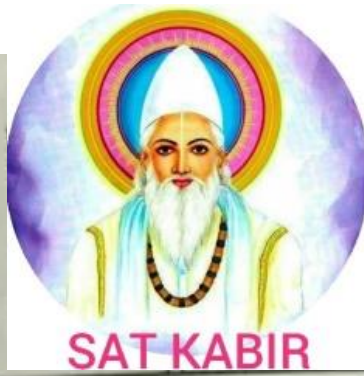
मूल बीजक

एकादश प्रकरण : साखी

साखी

जहिया जन्म मुक्ता हता, तहिया हता न कोय।
छठी तुम्हारी हौं जगा, तू कहां चला बिगोय॥1॥
शब्द हमारा तू शब्द का, सुनि मति जाहु सरक।
जो चाहो निज तत्त्व को, तो शब्दहि लेहु परख॥2॥
शब्द हमारा आदि का, शब्दै पैठा जीव।
फूल रहन की टोकरी, घोरे खाया घीव॥3॥
शब्द बिना सुरति आंधरी, कहो कहां को जाय।
द्वार न पावै शब्द का, फिर-फिर भटका खाय॥4॥
शब्द-शब्द बहु अन्तरे, सार शब्द मथि लीजै।
कहहिं कबीर जहां सार शब्द नहिं, धृग जीवन सो जीजै॥5॥
शब्दै मारा गिर परा, शब्दै छोड़ा राज।
जिन्ह-जिन्ह शब्द विवेकिया, तिनका सरिगौ काज॥6॥
शब्द हमारा आदि का, पल-पल करहू याद।
अन्त फलेगी मांहली, ऊपर की सब बाद॥7॥

जिन्ह जिन्ह सम्मल ना कियो, अस पुर पाटन पाय।
झालि परे दिन आथये, सम्मल कियो न जाय॥8॥
यहां ई सम्मल करिले, आगे विषई बाट।
स्वर्ग बिसाहन सब चले, जहां बनियां ना हाट॥9॥
जो जानहु जिव आपना, करहु जीव को सार।
जियरा ऐसा पाहुना, मिले न दूजी बार॥10॥
जो जानहु जग जीवना, जो जानहु सो जीव।
पानि पचावहु आपना, तो पानी मांगि न पीव॥11॥
पानि पियावत क्या फिरो, घर-घर सायर बारि।
तृषावन्त जो होयगा, पीवेगा झख मारि॥12॥
हंसा मोति बिकानिया, कंचन थार भराय।
जो जाको मरम न जाने, सो ताको काह कराय॥13॥
हंसा तू सुवर्ण वर्ण, क्या वर्णों मैं तोहिं।
तरिवर पाय पहेलिहो, तबै सराहौं तोहिं॥14॥
हंसा तू तो सबल था, हलुकी अपनी चाल।
रंग कुरंगे रंगिया, तैं किया और लगवार॥15॥
हंसा सरवर तजि चले, देही परिगौ सून।
कहहिं कबीर पुकारि के, तेहि दर तेही थून॥16॥
हंस बकु देखा एक रंग, चरें हरियरे ताल।
हंस क्षीर ते जानिये, बकुहिं धरेंगे काल॥17॥
काहे हरिनी दूबरी, यही हरियरे ताल।
लक्ष अहेरी एक मृग, केतिक टारों भाल॥18॥
तीन लोक भौ पींजरा, पाप पुण्य भौ जाल।
सकल जीव सावज भये, एक अहेरी काल॥19॥
लोभे जन्म गंमाइया, पापै खाया पून।
साधी सो आधी कहैं, तापर मेरा खून॥20॥

आधी साखी सिर खड़ी, जो निरुवारी जाय।
क्या पण्डित की पोथिया, जो राति दिवस मिलि गाय॥21॥
पांच तत्त्व का पूतरा, युक्ति रची मैं कीव।
मैं तोहि पूछौं पण्डिता, शब्द बड़ा की जीव॥22॥
पांच तत्व का पूतरा, मानुष धरिया नांव।
एक कला के बीछुरे, बिकल होत सब ठांव॥23॥
रंगहि ते रंग ऊपजे, सब रंग देखा एक।
कौन रंग है जीव का, ताका करहु विवेक॥24॥
जाग्रत रूपी जीव है, शब्द सोहागा सेत।
जर्द बुन्द जल कूकुही, कहहिं कबीर कोइ देख॥25॥
पांच तत्त्व ले या तन कीन्हा, सो तन ले काहि ले दीन्हा।
कर्महिं के वश जीव कहत हैं, कर्महिं को जिव दीन्हा॥26॥
पांच तत्त्व के भीतरे, गुप्त बस्तु अस्थान।
बिरला मर्म कोई पाइहैं, गुरु के शब्द प्रमान॥27॥
असुन्न तखत अड़ि आसना, पिण्ड झरोखे नूर।
जाके दिल में हौं बसा, सैना लिये हजूर॥28॥
हृदया भीतर आरसी, मुख देखा नहिं जाय।
मुख तो तबहीं देखिहो, जब दिल की दुबिधा जाय॥29॥
गांव ऊंचे पहाड़ पर, औ मोटा की बांह।
कबीर अस ठाकुर सेइये, उबरिये जाकी छांह॥30॥
जेहि मारग गये पंडिता, तेई गई बहीर।
ऊंची घाटी राम की, तेहि चढ़ि रहै कबीर॥31॥
ये कबीर तैं उतरि रहु, तेरो सम्मल परोहन साथ।
सम्मल घटे न पगु थके, जीव बिराने हाथ॥32॥
कबीर का घर शिखर पर, जहां सिलहली गैल।
पांव न टिके पपीलका, तहां खलकन लादै बैल॥33॥

बिन देखे वह देश की, बात कहै सो कूर।
आपुहि खारी खात है, बेंचत फिरै कपूर।।34।।
शब्द-शब्द सब कोई कहैं, वो तो शब्द विदेह।
जिभ्या पर आवै नहीं, निरखि परखि करि लेह।।35।।
पर्वत ऊपर हर बहै, घोड़ा चढ़ि बसै गांव।
बिना फूल भौंरा रस चाहै, कहु बिरवा को नांव।।36।।
चन्दन बास निवारहू, तुझ कारण बन काटिया।
जियत जीव जनि मारहू, मुये सबै निपातिया।।37।।
चन्दन सर्प लपेटिया, चन्दन काह कराय।
रोम रोम विष भीनिया, अमृत कहां समाय।।38।।
ज्यों मोदाद समसान शिल, सबै रूप समसान।
कहहिं कबीर वह सावज की गति, तबकी देखि भुकान।।39।।
गही टेक छोड़ै नहीं, जीभ चोंच जरि जाय।
ऐसो तप्त अंगार है, ताहि चकोर चबाय।।40।।
चकोर भरोसे चन्द्र के, निगलै तप्त अंगार।
कहैं कबीर डाहै नहीं, ऐसी वस्तु लगार।।41।।
झिलमिल झगरा झूलते, बाकी छूटि न काहु।
गोरख अटके कालपुर, कौन कहावै साहु।।42।।
गोरख रसिया योग के, मुये न जारी देह।
मांस गली माटी मिली, कोरो मांजी देह।।43।।
बन ते भागि बेहड़े परा, करहा अपनी बान।
बेदन करहा कासो कहै, को करहा को जान।।44।।
बहुत दिवस ते हींड़िया, शून्य समाधि लगाय।
करहा पड़ा गाड़ में, दूरि परा पछिताय।।45।।
कबीर भरम न भाजिया, बहुबिधि धरिया भेष।
साईं के परचावते, अन्तर रहि गइ रेष।।46।।

बिनु डांड़े जग डांड़िया, सोरठ परिया डांड़।
बाटनिहारे लोभिया, गुर ते मीठी खांड़॥47॥
मलयागिर की बास में, वृक्ष रहा सब गोय।
कहबे को चन्दन भया, मलयागिर ना होय॥48॥
मलयागिर की बास में, बेधा ढांक पलास।
बेना कबहुं न बेधिया, जुग-जुग रहिया पास॥49॥
चलते चलते पगु थका, नग्र रहा नौ कोस।
बीचहि में डेरा परा, कहहु कौन को दोष॥50॥
झालि परे दिन आथये, अन्तर पर गइ सांझ।
बहुत रसिक के लागते, बिस्वा रहि गइ बांझ॥51॥
मन कहै कब जाइये, चित्त कहै कब जाव।
छौ मास के हींड़ते, आध कोस पर गांव॥52॥
गृह तजि के भये उदासी, बन खंड तप को जाय।
चोली थाकी मारिया, बेरई चुनि-चुनि खाय॥53॥
राम नाम जिन चीन्हिया, झीना पिंजर तासु।
नैन न आवै नींदरी, अंग न जामें मांसु॥54॥
जो जन भीजै रामरस, बिगसित कबहुं न रूख।
अनुभव भाव न दरसे, ते नर सुख न दूख॥55॥
काटे आम न मौरसी, फाटे जुटै न कान।
गोरख पारस परसे बिना, कौने को नुकसान॥56॥
पारस रूपी जीव है, लोह रूप संसार।
पारस ते पारस भया, परख भया टकसार॥57॥
प्रेम-पाट का चोलना, पहिर कबीरू नाच।
पानिप दीन्हों तासु को, जो तन मन बोले सांच॥58॥
दर्पण केरी गुफा में, स्वनहा पैठा धाय।
देखि प्रतीमा आपनी, भूंकि-भूंकि मरि जाय॥59॥

ज्यों दर्पण प्रतिबिम्ब देखिये, आपु दुहुंनमा सोय।
यह तत्व से वह तत्व है, याही से वह होय॥60॥
जोबन सायर मूझते, रसिया लाल कराय।
अब कबीर पांजी परे, पन्थी आवहिं जाय॥61॥
दोहरा तो नौ तन भया, पदहि न चीन्हैं कोय।
जिन्ह यह शब्द विवेकिया, छत्र धनी है सोय॥62॥
कबीर जात पुकारिया, चढ़ि चन्दन की डार।
बाट लगाये ना लगे, पुनि का लेत हमार॥63॥
सब ते सांचा भला, जो सांचा दिल होय।
सांच बिना मुख नाहिना, कोटि करे जो कोय॥64॥
सांचा सौदा कीजिये, अपने मन में जानि।
सांचे हीरा पाइये, झूठे मूलहु हानि॥65॥
सुकृत बचन माने नहीं, आपु न करे विचार।
कहहिं कबीर पुकारि के, सपनेहु गया संसार॥66॥
आगि जो लागि समुद्र में, धुवां न परगट होय।
की जाने जो जरि मुवा, की जाकी लाई होय॥67॥
लाई लावनहार की, जाकी लाई पर जरे।
बलिहारी लावनहार की, छप्पर बांचे घर जरे॥68॥
बुन्द जो परा समुद्र में, सो जानत सब कोय।
समुद्र समाना बुंद में, सो जाने बिरला कोय॥69॥
जहर जिमी दै रोपिया, अमी सींचे सौ बार।
कबीर खलक ना तजै, जामें जौन विचार॥70॥
धौंकी डाही लाकड़ी, वो भी करे पुकार।
अब जो जाय लोहार घर, डाहै दूजी बार॥71॥
बिरह की ओदी लाकड़ी, सपचै औ धुंधुवाय।
दुख ते तबहीं बांचिहो, जब सकलो जरि जाय॥72॥

बिरह बाण जेहि लागिया, औषध लगे न ताहि।
सुसुकि-सुसुकि मरि-मरि जिवै, उठे कराहि कराहि॥73॥
सांचा शब्द कबीर का, हृदया देखु विचार।
चित्तहु दै समझै नहीं, मोहिं कहत भैल जुग चार॥74॥
जो तू सांचा बाणिया, सांची हाट लगाव।
अन्दर झारू देइके, कूरा दूरि बहाव॥75॥
कोठी तो है काठ की, ढिग-ढिग दीन्हीं आग।
पण्डित जरि झोली भये, साकट उबरे भाग॥76॥
सावन केरा सेहरा, बुंद परा असमान।
सारी दुनियां वैष्णव भई, गुरु नहिं लागा कान॥77॥
ढिग बूड़ा उतरा नहीं, याहि अंदेशा मोहिं।
सलिल मोह की धार में, क्या नींदरि आई तोहिं॥78॥
साखी कहै गहै नहीं, चाल नहिं जाय।
सलिल धार नदिया बहै, पांव कहां ठहराय॥79॥
कहन्ता तो बहुते मिला, गहन्ता मिला न कोय।
सो कहन्ता बहि जान दे, जो न गहन्ता होय॥80॥
एक-एक निरुवारिये, जो निरुवारी जाय।
दोय मुख का बोलना, घना तमाचा खाय॥81॥
जिभ्या केरे बंद दे, बहु बोलन निरुवार।
पारखी से संग करु, गुरुमुख शब्द विचार॥82॥
जाके जिभ्या बंद नहिं, हृदया नाहीं सांच।
ताके संग न लागिये, घाले बटिया मांझ॥83॥
प्राणी तो जिभ्या डिगा, छिन-छिन बोल कुबोल।
मन के घाले भरमत फिरे, कालहिं देत हिंडोल॥84॥
हिलगी भाल शरीर में, तीर रहा है टूट।
चुम्बक बिना न नीकरे, कोटि पाहन गये छूट॥85॥

आगे सीढ़ी सांकरी, पाछे चकनाचूर।
परदा तर की सुन्दरी, रही धका से दूर।।86।।
संसारी समय बिचारी, कोइ ग्रेही कोइ जोग।
औसर मारे जात है, तैं चेत बिराने लोग।।87।।
संशय सब जग खंडिया, संशय खंडे न कोय।
संशय खंडे सो जना, जो शब्द विवेकी होय।।88।।
बोलन है बहु भांति का, तेरे नैनन किछउ न सूझ।
कहहिं कबीर बिचारि के, तैं घट-घट बानी बूझ।।89।।
मूल गहे ते काम है, तैं मत भरम भुलाव।
मन सायर मनसा लहरि, बहै कतहुं मत जाव।।90।।
भंवर बिलंबे बाग में, बहु फूलन की बास।
ऐसे जीव बिलंबे विषय में, अंतहु चले निरास।।91।।
भंवरजाल बगुजाल है, बूड़े बहुत अचेत।
कहहिं कबीर ते बांचि हैं, जाके हृदय विवेक।।92।।
तीन लोक टीड़ी भया, उड़ा जो मन के साथ।
हरिजन हरि जाने बिना, परे काल के हाथ।।93।।
नाना रंग तरंग है, मन मकरन्द असूझ।
कहहिं कबीर पुकारि के, तैं अकिल कला ले बूझ।।94।।
बाजीगर का बांदरा, ऐसा जीव मन के साथ।
नाना नाच नचाय के, ले राखे अपने हाथ।।95।।
ई मन चंचल ई मन चोर, ई मन शुद्ध ठगहार।
मन-मन करते सुर-नर मुनि जहंड़े, मन के लक्ष दुवार।।96।।
बिरह भुवंगम तन डंसो, मंत्र न माने कोय।
राम बियोगी ना जिये, जिये तो बाउर होय।।97।।
राम बियोगी बिकल तन, इन्ह दुखवो मति कोय।
छूवत ही मरि जायंगे, तालाबेली होय।।98।।

बिरह भुवंगम पैठि के, कीन्ह करेजे घाव।
साधू अंग न मोरिहैं, ज्यों भावै त्यों खाव॥99॥
करक करेजे गड़ि रही, बचन बृक्ष की फांस।
निकसाये निकसे नहीं, रही सो काहू गांस॥100॥
काला सर्प शरीर में, खाइनि सब जग झारि।
बिरले ते जन बांचि हैं, जो रामहि भजे बिचारि॥101॥
काल खड़ा शिर ऊपरे, तैं जागु बिराने मीत।
जाका घर है गैल में, सो कस सोवे निश्चिन्त॥102॥
कल काठी कालू घुना, जतन-जतन घुन खाय।
काया मध्ये काल बसत है, मर्म न काहू पाय॥103॥
मन माया की कोठरी, तन संशय का कोट।
विषहर मन्त्र माने नहीं, काल सर्प की चोट॥104॥
मन माया तो एक है, माया मनहिं समाय।
तीन लोक संशय परी, मैं काहि कहौं समुझाय॥105॥
बेल्हा दीन्हों खेत को, बेल्हा खेतहिं खाय।
तीन लोक संशय परी, मैं काहि कहौं सुमुझाय॥106॥
मन सायर मनसा लहरि, बूड़े बहुत अचेत।
कहहिं कबीर ते बांचि हैं, जाके हृदय विवेक॥107॥
सायर बुद्धि बनाय के, बायें बिचक्षण चोर।
सारी दुनिया जहंड़े गई, कोई न लागा ठौर॥108॥
मानुष ह्वै के ना मुवा, मुवा सो डांगर ढोर।
एकौ जीव ठौर नहिं लागा, भया सो हाथी घोर॥109॥
मानुष तैं बड़ पापिया, अक्षर गुरुहि न मान।
बार बार बन कूकुही, गर्भ धरे और ध्यान॥110॥
मानुष बिचारा क्या करे, जाके कहै न खुलै कपाट।
स्वनहा चौक बैठाय के, फिर फिर ऐपन चाट॥111॥

मानुष बिचारा क्या करे, जाके शून्य शरीर।
जो जिव झांकि न ऊपजे, तो कहा पुकार कबीर॥112॥
मानुष जन्म नर पायके, चूके अबकी घात।
जाय परे भवचक्र में, सहे घनेरी लात॥113॥
रतन का जतन करु, मांड़ी का सिंगार।
आया कबीरा फिर गया, झूठा है हंकार॥114॥
मानुष जन्म दुर्लभ है, बहुरि न दूजी बार।
पक्का फल जो गिर पड़ा, बहुरि न लागै डार॥115॥
बांह मरोरे जात हो, मोहि सोवत लिये जगाय।
कहहिं कबीर पुकारि के, ई पिंडे होहु कि जाय॥116॥
साखी पुरन्दर ढहि परे, बिबि अक्षर युग चार।
कबीर रसनारम्भन होत है, कोइ कै न सकै निरुवार॥117॥
बेड़ा बांधिन सर्प का, भवसागर के मांहिं।
जो छोड़े तो बूड़े, गहै तो डंसे बांहिं॥118॥
हाथ कटोरा खोवा भरा, मग जोवत दिन जाय।
कबीर उतरा चित्त से, छांछ दियो नहिं जाय॥119॥
एक कहौं तो है नहीं, दोय कहौं तो गारि।
है जैसा रहै तैसा, कहहिं कबीर बिचारि॥120॥
अम्मृत केरी पूरिया, बहु विधि दीन्हा छोरि।
आप सरीखा जो मिलै, ताहि पियावहु घोरि॥121॥
अम्मृत केरी मोटरी, शिर से धरी उतार।
जाहि कहौं मैं एक है, सो मोहिं कहै दुइ चार॥122॥
जाके मुनिवर तप करें, वेद थके गुण गाय।
सोइ देउं सिखपना, कोई नहीं पतियाय॥123॥
एक ते अनंत भौ, अनंत एक है आय।
परिचय भई जब एकते, अब अनन्तो एकै माहि समाय॥ 124॥

एक शब्द गुरुदेव का, ताका अनन्त विचार।
थाके मुनिजन पंण्डिता, बेद न पावैं पार॥125॥
राउर के पिछवारे, गावैं चारिउ सैन।
जीव परा बहु लूट में, ना कछु लेन न देन॥126॥
चौगोड़ा के देखते, ब्याधा भागा जाय।
अचरज एक देखो हो संतो, मूवा कालहिं खाय॥127॥
तीन लोक चोरी भई, सबका सरबस लीन्ह।
बिना मूड़ का चोरवा, परा न काहू चीन्ह ॥128॥
चक्की चलती देख के, मेरे नैनन आया रोय।
दुइ पाट भीतर आय के, साबुत गया न कोय॥129॥
चार चोर चोरी चले, पगु पनहीं उतार।
चारिउ दर थूनी हनी, पंडित करहु बिचार॥130॥
बलिहारी वह दूध की, जामें निकरे घीव।
आधी साखी कबीर की, चारि वेद का जीव॥131॥
बलिहारी तेहि पुरुष की, जो परचित परखन हार।
साई दीन्हों खांड़ को, खारी बूझे गंवार॥132॥
विष के बिरवे घर किया, रहा सर्प लपटाय।
ताते जियरहिं डर भया, जागत रैनि बिहाय॥133॥
जो घर हैगा सर्प का, सो घर साध न होय।
सकल सम्पदा ले गये, विष भरि लागा सोय॥134॥
घुंघुंची भर के बोइये, उपजा पसेरी आठ।
डेरा परा काल का, सांझ सकारे जात॥135॥
मन भर के बोइये, घुंघंची भर नहिं होय।
कहा हमार माने नहीं, अन्तहु चले बिगोय॥136॥
आपा तजै हरि भजै, नख सिख तजै विकार।
सब जीवन से निर्बैर रहै, साधु मता है सार॥137॥

पछापछी के कारने, सब जग रहा भुलान।
निर्पक्ष होय के हरि भजै, सोई संत सुजान।।138।।

बड़े गये बड़ापने, रोम-रोम हंकार।
सतगुरु के परचै बिना, चारों बरन चमार।।139।।

माया तजे क्या भया, जो मान तजा नहिं जाय।
जेहि माने मुनिवर ठगे, सो मान सबन को खाय।।140।।

माया के झक जग जरे, कनक कामिनी लाग।
कहहिं कबीर कस बांचिहो, रुई लपेटी आग।।141।।

माया जग सांपिनि भई, विष ले पैठि पताल।
सब जग फन्दे फन्दिया, चले कबीरू काछ।।142।।

सांप बिच्छू का मंत्र है, माहुरहू झारा जाय।
विकट नारि के पाले परे, काढ़ि कलेजा खाय।।143।।

तामस केरे तीन गुण, भंवर लेइ तहां बास।
एकै डारी तीन फल, भांटा ऊख कपास।।144।।

मन मतंग गइयर हने, मनसा भई सचान।
जंत्र-मंत्र माने नहीं, लागी उड़ि-उड़ि खान।।145।।

मन गयंद माने नहीं, चले सुरति के साथ।
महावत बिचारा क्या करे, जो अंकुश नाहीं हाथ।।146।।

ई माया है चूहड़ी, औ चूहड़ों की जोय।
बाप पूत अरुझाय के, संग न काहु के होय।।147।।

कनक कामिनी देखि के, तू मत भूल सुरंग।
मिलन बिछुरन दुहेलरा, जस केंचुलि तजत भुवंग।।148।।

माया केरी बसि परे, ब्रह्मा-विष्णु महेश।
नारद शारद सनक सनन्दन, गौरी पूत गणेश।।149।।

पीपरि एक जो महागंभानि, ताकर मर्म कोइ नहिं जानि।
डारलंबायफल कोइ न पाय, खसम अछत बहुपीपरे जाय।। 150।।

साहू से भौ चोरवा, चोरहु से भौ हीत।
तब जानोगे जीयरा, जबरे परेगी तूझ॥151॥
ताकी पूरी क्यों परे, जाके गुरु न लखाई बाट।
ताके बेड़ा बूड़ि हैं, फिरि-फिरि औघट घाट॥152॥
जाना नहीं बूझा नहीं, समुझि किया नहिं गौन।
अंधे को अंधा मिला, राह बतावै कौन॥153॥
जाका गुरु है आंधरा, चेला काह कराय।
अंधे-अंधा पेलिया, दोऊ कूप पराय॥154॥
लोगों केरि अथाइया, मति कोइ पैठो धाय।
एकै खेत चरत हैं, बाघ गधेहरा गाय॥155॥
चारिमास घन बर्षिया, अति अपूर जल नीर।
पहिरे जड़ तन बखतरी, चुभै न एकौ तीर॥156॥
गुरु की भेली जिव डरे, काया सींचनहार।
कुमति कमाई मन बसे, लाग जुवा की लार॥157॥
तन-संशय मन-सोनहा, काल-अहेरी नीत।
एकै डांग बसेरवा, कुशल पूछो का मीत॥158॥
साहु चोर चीन्है नहीं, अंधा मति का हीन।
पारख बिना बिनाश है, कर बिचार होहु भीन॥159॥
गुरु सिकलीगर कीजिये, मनहि मस्कला देय।
शब्द छोलना छोलिके, चित दर्पण करि लेय॥160॥
मूरख के सिखलावते, ज्ञान गांठि का जाय।
कोइला होय न ऊजरा, जो सौ मन साबुन लाय॥161॥
मूढ़ कर्मिया मानवा, नख शिख पाखर आहि।
बाहनहारा क्या करै, जो बान न लागै ताहि॥162॥
सेमर केरा सूवना, छिवले बैठा जाय।
चोंच संवारे सिर धुनै, ई उसही को भाय॥163॥

सेमर सुवना बेगि तजु, तेरी घनी बिगुर्ची पांख।
ऐसा सेमर जो सेवै, जाके हृदया नाहीं आंख॥164॥

सेमर सुवना सेइया, दुइ ढेंढ़ी की आस।
ढेंढ़ी फूटि चनाक दै, सुवना चलै निरास॥165॥

लोग भरोसे कौन के, बैठ रहै अरगाय।
ऐसे जियरहिं जम लूटे, जस मटिया लुटे कसाय॥166॥

समुझि बूझि जड़ हो रहै, बल तजि निर्बल होय।
कहहिं कबीर ता संत का, पला न पकरै कोय॥167॥

हीरा सोइ सराहिये, सहै घनन की चोट।
कपट कुरंगी मानवा, परखत निकरा खोट॥168॥

हरि हीरा जन जौहरी, सबन पसारी हाट।
जब आवै जन जौहरी, तब हीरों की साट॥169॥

हीरा तहां न खोलिये, जहं कुंजरों की हाट।
सहजै मांठी बांधि के, लगिये अपनी बाट॥170॥

हीरा परा बजार में, रहा छार लपटाय।
केतेहिं मूरख पचि मुये, कोइ पारखि लिया उठाय॥171॥

हीरों की ओबरी नहीं, मलयागिरि नहिं पांत।
सिंहों के लेहंड़ा नहीं, साधु न चले जमात॥172॥

अपने-अपने शिरों का, सबन लीन्ह है मान।
हरि की बात दुरंतरी, परी न काहू जान॥173॥

हाड़ जरै जस लाकड़ी, बार जरै जस घास।
कबिरा जरे रामरस, जस कोठी जरै कपास॥174॥

घाट भुलाना बाट बिनु, भेष भुलाना कान।
जाकी माड़ी जगत में, सो न परा पहिचान॥175॥

मूरख सों क्या बोलिये, शठ सों काह बसाय।
पाहन में क्या मारिये, जो चोखा तीर नसाय॥176॥

जैसी गोली गुमज की, नीच परी ढहराय।
तैसा हृदया मूरख का, शब्द नहीं ठहराय।।177।।
ऊपर की दोऊ गईं, हियहु की गईं हेराय।
कहहिं कबीर जाकी चारिउ गईं, ताको काह उपाय।।178।।
केते दिन ऐसे गये, अनरूचे का नेह।
ऊषर बोय न ऊपजै, जो अति घन बरसे मेह।।179।।
मैं रोवों यह जगत को, मोको रोवे न कोय।
मोको रोवे सो जना, जो शब्द विवेकी होय।।180।।
साहेब साहेब सब कहैं, मोहिं अंदेशा और।
साहेब से परिचय नहीं, बैठोगे कहि ठौर।।181।।
जीव बिना जिव बांचे नहीं, जिव का जीव अधार।
जीव दया करि पालिये, पंडित करो विचार।।182।।
हम तो सबकी कही, मोको कोइ न जान।
तब भी अच्छा अब भी अच्छा, जुग जुग होउं न आन।। 183।।
प्रगट कहौं तो मारिया, परदा लखै न कोय।
सहना छिपा पयार तर, को कहि बैरी होय।।184।।
देश-विदेशे हौं फिरा, मनहीं भरा सुकाल।
जाको ढूंढ़त हौं फिरा, ताका परा दुकाल।।185।।
कलि खोटा जग आंधरा, शब्द न माने कोय।
जाहि कहौं हित आपना, सो उठि बैरी होय।।186।।
मसि कागज छूवों नहीं, कलम गहों नहिं हाथ।
चारिउ युग का महातम, कबीर मुखहि जनाई बात।।187।।
फहम आगे फहम पाछे, फहम दाहिने डेरि।
फहम पर जो फहम करै, फहम है मेरि।।188।।
हद चले सो मानवा, बेहद चले सो साध।
हद बेहद दोऊ तजे, ताकर मता अगाध।।189।।

समुझे की गति एक है, जिन्ह समुझा सब ठौर।
कहहिं कबीर ये बीच के, बलकहिं और कि और।। 190।।

राह बिचारी क्या करे, जो पंथि न चले बिचार।
आपन मारग छोड़ि के, फिरे उजार उजार।।191।।

मूवा है मरि जाहुगे, मुये कि बाजी ढोल।
सपन सनेही जग भया, सहिदानी रहिगौ बोल।।192।।

मूवा है मरि जाहुगे, बिन शिर थोथी भाल।
परेहु करायल वृक्ष तर, आज मरहु की काल।।193।।

बोली हमारी पूर्व की, हमें लखै नहिं कोय।
हमको तो सोई लखै, जो धुर पूरब का होय।।194।।

जाके चलते रौंदे परा, धरती होय बेहाल।
सो सावत घामें जरे, पंडित करहु विचार।।195।।

पायन पुहुमी नापते, दरिया करते फाल।
हाथन पर्वत तौलते, तेहि धरि खायो काल।।196।।

नौ मन दूध बटोरि के, टिपके किया बिनाश।
दूध फटि कांजी भया, हुवा घृत का नाश।।197।।

कितनो मनावो पांव परि, कितनो मनावो रोय।
हिन्दू पूजे देवता, तुरुक न काहू होय।।198।।

मानुष तेरा गुण बड़ा, मांसु न आवै काज।
हाड़ न होते आभरण, त्वचा न बाजन बाज।।199।।

जो मोहि जाने, ताहि मैं जानौं।
लोक वेद का, कहा न मानौं।।200।।

सबकी उत्पति धरती, सब जीवन प्रतिपाल।
धरती न जानै आप गुण, ऐसा गुरू विचार।।201।।

धरती जानति आप गुण, कधी न होती डोल।
तिल तिल गरुवी होती, रहति ठिकों की मोल।।202।।

जहिया किर्तम ना हता, धरती हती न नीर।
उत्पति परलय ना हती, तबकी कहैं कबीर॥203॥
जिस कारण मैं जाय था, सो तो मिलिया आय।
सांई ते सनमुख भया, लागि कबीरा पाय॥204॥
तौ लौं तारा जगमगै, जौ लौं उगै न सूर।
तौ लौं जीव कर्म वश डोलै, जौ लौं ज्ञान न पूर॥205॥
नांव न जाने गांव का, भूला मारग जाय।
काल गड़ेगा कांटा, अगमन खसी कराय॥206॥
संगत्ति कीजै साधु की, हरै और की व्याधि।
ओछी संगति कूर की, आठों पहर उपाधि॥207॥
संगति से सुख ऊपजे, कुसंगति से दुख होय।
कहहिं कबीर तहां जाइये, जहां अपनी संगति होय॥208॥
जैसी लागी ओर की, वैसे निबहै छोर।
कौड़ी-कौड़ी जोरि के, पूंजी लक्ष करोर॥209॥
आजु काल दिन कैइक में, अस्थिर नाहिं शरीर।
कहहिं कबीर कस राखिहो, कांचे बासन नीर॥210॥
बहु बन्धन से बांधिया, एक बिचारा जीव।
की बल छूटै आपने, की रे छुड़ावै पीव॥211॥
जीव मति मारो बापुरा, सबका एकै प्राण।
हत्या कबहुं न छूटिहैं, जो कोटिन सुनो पुराण॥212॥
जीव घात ना कीजिये, बहुरि लेत वै कान।
तीरथ गये न बांचिहो, जो कोटि हीरा देहु दान॥213॥
तीरथ गये तीन जना, चित चंचल मन चोर।
एकौ पाप न काटिया, लादिनि मन दश और॥214॥
तीरथ गये ते बहि मुये, जूड़े पानि नहाय।
कहहिं कबीर सुनो हो संतो, राक्षस होय पछिताय॥215॥

तीरथ भई विष बेलरी, रही युगन युग छाय।
कबिरन मूल निकन्दिया, कौन हलाहल खाय॥216॥
ये गुणवंती बेलरी, तव गुण बर्णि न जाय।
जर काटे ते हरियरी, सींचे ते कुम्हिलाय॥217॥
बेलि कुढंगी फल बुरो, फुलवा कुबुधि बसाय।
ओर विनष्टी तूमरी, तेरो सरोपात करुवाय॥218॥
पानी ते अति पातला, धूवां ते अति झीन।
पौनहु ते उतावला, सो दोस्त कबीरन कीन॥219॥
सतगुरु बचन सुनो हो संतो, मति लीजै शिर भार।
हो हजूर ठाढ़ कहत हौं, अब तैं सम्हर संभार॥220॥
वो करुवाई बेलरी, औ करुवा फल तोर।
सिद्ध नाम जब पाइये, बेलि बिछोहा होर॥221॥
सिद्ध भया तो क्या भया, चहुंदिश फूटी बास।
अंतर वाके बीज है, फिर जामन की आस॥222॥
परदे पानी ढारिया, संतो करो बिचार।
शरमा शरमी पचि मुवा, काल घसीटनहार॥223॥
अस्ति कहौं तो कोइ न पतीजे, बिना अस्ति का सिद्धा।
कहहिं कबीर सुनो हो संतो, हीरी हीरा बेधा॥224॥
सोना सज्जन साधुजन, टूटि जुरै सौ बार।
कुजन कुंभ कुम्हार का, एकै धका दरार॥225॥
काजर केरी कोठरी, बुड़ता है संसार।
बलिहारी तेहि पुरुष की, जो पैठि के निकरनहार॥226॥
काजर ही की कोठरी, काजर ही का कोट।
तोंदी कारी ना भई, रहा सो ओटहि ओट॥227॥
अर्ब-खर्ब ले दर्ब है, उदय-अस्त लों राज।
भक्ति महातम ना तुले, ई सब कौने काज॥228॥

मच्छ बिकाने सब चले, धीमर के दरबार।
अंखिया तेरी रतनारी, तू क्यों पहिरा जार।।229।।
पानी भीतर घर किया, सेज्या किया पतार।
पासा परा करीम का, तब मैं पहिरा जार।।230।।
मच्छ होय नहिं बांचिहो, धीमर तेरो काल।
जेहि-जेहि डाबर तुम फिरो, तहं तहं मेले जाल।।231।।
बिन रसरी गर सकलो बंधा, तासो बंधा अलेख।
दीन्हा दर्पण हस्त में, चश्म बिना क्या देख।।232।।
समुझाये समुझे नहीं, पर हाथ आपु बिकाय।
मैं खैंचत हौं आपको, चला सो जमपुर जाय।।233।।
साखी आंखी ज्ञान की, समुझि देखु मन माहिं।
बिनु साखी संसार का, झगरा छूटत नाहिं।।234।।
लोहा केरी नावरी, पाहन गुरुवा भार।
शिर पर विष की मोटरी, चाहै उतरन पार।।235।।
कृष्ण समीपी पांडवा, गले हिंवारे जाय।
लोहा को पारस मिलै, तो काहे को काई खाय।।236।।
पूरब उगै पश्चिम अथवै, भखै पौन के फूल।
ताहू को राहु ग्रासे, मानुष काहेक भूल।।237।।
नैनन आगे मन बसै, पलक-पलक करे दौर।
तीन लोक मन भूप है, मन पूजा सब ठौर।।238।।
मन स्वारथी आप रस, विषय लहर फहराय।
मन के चलाये तन चलै, जाते सरबस जाय।।239।।
कैसी गति संसार की, ज्यों गाडर की ठाट।
एक परा जो गाड़ में, सबै गाड़ में जात।।240।।
मारग तो कठिन है, वहां कोई मत जाव।
गये ते बहुरे नहीं, कुशल कहै को आव।।241।।

मारी मरे कुसंग की, केरा साथे बेर।
वै हालैं वै चींधरें, बिधिना संग निबेर।।242।।

केरा तबहि न चेतिया, जब ढिग लागी बेर।
अब के चेते क्या भया, जब कांटन लीन्हा घेर।।243।।

जीव मर्म जाने नहीं, अंध भया सब जाय।
बादी द्वारे दादि न पावै, जन्म-जन्म पछिताय।।244।।

जाको सतगुरु ना मिला, ब्याकुल दहुं दिश धाय।
आंखि न सूझै बावरा, घर जरै घूर बुताय।।245।।

बस्तु अंतै खोजै अंतै, क्यों कर आवै हाथ।
सज्जन सोई सराहिये, जो पारख राखै साथ।।246।।

सुनिये सबकी, निबेरिये अपनी।
सेंदुर का सिंधौरा, झपनी की झपनी।।247।।

बाजन दे बाजन्तरी, तू कल कुकुही मति छेर।
तुझे बिरानी क्या परी, तू अपनी आप निबेर।।248।।

गावै कथै बिचारै नाहीं अनजाने का दोहा।
कहहिं कबीर पारस परसे बिना, जस पाहन भीतर लोहा।। 249।।

प्रथम एक जो हौं किया, भया सो बारहबान।
कसत कसौटी ना टिका, पीतर भया निदान।।250।।

कबिरन भक्ति बिगारिया, कंकर पत्थर धोय।
अंतर में विष राखि के, अमृत डारिनि खोय।।251।।

रही एक की भई अनेक की, बिस्वा बहुत भ्रतारी।
कहहिं कबीर काके संग जरिहौ, बहु पुरुषन की नारी।। 252।।

तन बोहित मन काग है, लक्ष योजन उड़ि जाय।
कबहिं के भरमें अगम दरिया, कबहिं के गगन रहाय।। 253।।

ज्ञान रतन की कोठरी, चुंबक दीन्हों ताल।
पारखि आगे खोलिये, कूंजी बचन रसाल।।254।।

स्वर्ग पाताल के बीच में, दुई तुमरिया बद्ध।
षट दर्शन संशय परी, लख चौरासी सिद्ध॥255॥
सकलो दुर्मति दूर करु, अच्छा जन्म बनाव।
काग गौन गति छांड़ि के, हंस गौन चलि आव॥256॥
जैसी कहै करै जो तैसी, राग द्वेष निरुवारे।
तामें घटै बढ़ै रतियो नहिं, यहि विधि आपु संवारे॥257॥
द्वारे तेरे राम जी, मिलहु कबीरा मोहि।
तैं तो सब में मिलि रहा, मैंन मिलूंगा तोहि॥258॥
भरम बढ़ा तिहुंलोक में, भरम मंडा सब ठांव।
कहहिं कबीर पुकारि के, तुम बसेउ भरम के गांव॥259॥
रतन अड़ाइनि रेत में, कंकर चुनि-चुनि खाय।
कहहिं कबीर पुकारि के, ई पिंडे होहु कि जाय॥260॥
जेते पत्र बनस्पती, औ गंगा की रेन।
पंडित बिचारा क्या कहै, कबीर कही मुख बैन॥261॥
हौं जाना कुल हंस हो, ताते कीन्हा संग।
जो जानत बगु बावरा, छुवै न देतेउं अंग॥262॥
गुणिया तो गुण ही कहै, निर्गुणिया गुणहि घिनाय।
बैलहि दीजै जायफर, क्या बूझै क्या खाय॥263॥
अहिरहु तजि खसमहु तजी, बिना दाद की ढोर।
मुक्ति परी बिललात है, वृन्दावन की खोर॥264॥
मुख की मीठी जो कहै, हृदया है मति आन।
कहहिं कबीर ता लोगन से, तैसेहिं राम सयान॥265॥
इतते सब कोई गये, भार लदाय लदाय।
उतते कोई न आइया, जासों पुछिये धाय॥266॥
भक्ति पियारी राम की, जैसी पियारी आग।
सारा पट्टन जरि मुवा, बहुरि ले आवै मांग॥267॥

नारि कहावै पीव की, रहै और संग सोय।
जार मीत हृदया बसे, खसम खुशी क्यों होय॥268॥
सज्जन से दुर्जन भया, सुनि काहू की बोल।
कांसा तामा होय रहा, हता ठिकों का मोल॥269॥
बिरहिन साजी आरती, दर्शन दीजै राम।
मूये दर्शन देहुगे, तो आवैं कौने काम॥270॥
पल में परलय बीतिया, लोगहिं लागु तमारि।
आगल सोच निवारि के, पाछल करहु गोहारि॥271॥
एक समाना सकल में, सकल समाना ताहि।
कबीर समाना बूझ में, जहः दूतिया नाहिं॥272॥
एक साधे सब साधिया, सब साधे एक जाय।
जैसा सींचै मूल को, फूलै फलै अघाय॥273॥
जेहि बन सिंह न संचरे, पन्छी ना उड़ि जाय।
सो बन कबिरन हींड़िया, शून्य समाधि लगाय॥274॥
सांच कहौं तो है नहीं, झूठहि लागु पियारि।
मो शिर ढारे ढेंकुली, सींचे और कि क्यारि॥275॥
बोल तो अमोल है, जो कोई बोले जान।
हिये तराजू तौलिके, तब मुख बाहर आन॥276॥
करु बहियां बल आपनी, छाड़ बिरानी आस।
जाके आंगन नदिया बहै, सो कस मरै पियास॥277॥
वो तो वैसा ही हुआ, तू मति होहु अयान।
वो निर्गुणिया तैं गुणवन्ता, मत एकहि में सान॥278॥
जो मतवारे राम के, मगन होहिं मन मांहि।
ज्यों दर्पण की सुंदरी, गहै न आवै बांहिं॥279॥
साधू होना चाहिए, पक्का है के खेल।
कच्चा सरसों पेरिके, खरी भया नहिं तेल॥280॥

सिंहों केरी खोलरी, मेढ़ा पैठा धाय।
बानी ते पहिचानिये, शब्दहिं देत लखाय॥281॥
जेहि खोजत कल्पौ गया, घटहि माहिं सो मूर।
बाढ़ी गर्भ गुमान ते, ताते परि गइ दूर॥282॥
दश द्वारे का पींजरा, तामें पंछी पौन।
रहिबे को अचरज अहै, जात अचंभौ कौन॥283॥
रामहिं सुमिरे रण भिरे, फिरै और की गैल।
मानुष केरी खोलरी, ओढ़े फिरत हैं बैल॥284॥
खेत भला बीज भला, बोये मुठी का फेर।
काहे बिरवा रूखरा, ये गुण खेतहि केर॥285॥
गुरु सीढ़ी ते ऊतरै, शब्द बिमूखा होय।
ताको काल घसीटिहैं, राखि सकै नहिं कोय॥286॥
भुंभुरी घाम बसै, घट माहीं।
सब कोइ बसै, सोग की छाहीं॥287॥
जो मिला सो गुरु मिला, शिष्य न मिलिया कोय।
छौ लाख छियानबे सहस रमैनी, एक जीव पर होय॥288॥
जहां गाहक तहां हौं नहीं, हौं तहां गाहक नाहिं।
बिना विवेक भटकत फिरे, पकरि शब्द की छाहिं॥289॥
नग पषाण जग सकल है, पारख बिरला कोय।
नग ते उत्तम पारखी, जग में बिरला होय॥290॥
सपने सोया मानवा, खोलि जो देखै नैन।
जीव परा बहु लूट में, ना कछु लेन न देन॥291॥
नष्ट का राज है, नफर का बरते तेज।
सारशब्द टकसार है, कोइ हृदया माहिं विवेक॥292॥
जब लग बोला तब लग ढोला, तौ लौं धन ब्यौहार।
ढोला फूटा बोला गया, कोइ न झांके द्वार॥293॥

कर बंदगी विवेक की, भेष धरे सब कोय।
सो बंदगी बहि जान दे, जहां शब्द विवेक न होय।।294।।

सुर नर मुनि औ देवता, सात द्वीप नौ खंड।
कहहिं कबीर सब भोगिया, देह धरे को दंड।।295।।

जब लग दिल पर दिल नहीं, तब लग सब सुख नाहिं।
चारिउ युगन पुकारिया, सो संशय दिल माहिं।।296।।

यंत्र बजावत हौं सुना, टूटि गया सब तार।
यंत्र बिचारा क्या करे, जब गया बजावनहार।।297।।

जो तू चाहै मूझको, छांड़ सकल की आस।
मुझ ही ऐसा होय रहो, सब सुख तेरे पास।।298।।

साधु भया तो क्या भया, बोलै नाहिं बिचार।
हतै पराई आतमा, जीभ बांधि तरवार।।299।।

हंसा के घट भीतरे, बसै सरोवर खोट।
चलै गांव जहंवा नहीं, तहां उठावन कोट।।300।।

मधुर बचन है औषधी, कटुक बचन है तीर।
श्रवण द्वार होय संचरे, सालै सकल शरीर।।301।।

ढाढस देखो मरजीव को, धाय जुरि पैठि पताल।
जीव अटक मानै नहीं, ले गहि निकरा लाल।।302।।

ई जग तो जहंड़े गया, भया योग ना भोग।
तिल झारि कबिरा लिया, तिलैठी झारें लोग।।303।।

ये मरजीवा अम्मृत पीवा, क्या धंसि मरसि पतार।
गुरु की दया साधु की संगति, निकरि आव यहि द्वार।।304।।

केतेहि बुंद हलफो गये, केते गये बिगोय।
एक बुंद के कारणे, मानुष काहेक रोय।।305।।

आगि जो लागि समुद्र में, टूटि टूटि खसे झोल।
रोवै कबिरा डांफिया, मोर हीरा जरे अमोल।।306।।

छौ दर्शन में जो परवाना, तासु नाम बनवारी।
कहहिं कबीर सब खलक सयाना, इनमें हमहिं अनारी॥307॥

सांचे श्राप न लागै, सांचे काल न खाय।
सांचिहिं सांचा जो चलै, ताको काह नशाय॥308॥

पूरा साहेब सेइये, सब विधि पूरा होय।
ओछे से नेह लगाय के, मूलहु आवै खोय॥309॥

जाहु वैद्य घर आपने, यहां बात न पूछै कोय।
जिन्ह यह भार लदाइया, निरबाहेगा सोय॥310॥

औरन के सिखलावते, मोहड़े परिगौ रेत।
रास बिरानी राखते, खाइनि घर का खेत॥311॥

मैं चितवत हौं तोहि को, तू चितवत है वोहि।
कहहिं कबीर कैसे बनि हैं, मोहि तोहि औ वोहि॥312॥

तकत तकावत तकि रहा, सकै न बेझा मार।
सबै तीर खाली परा, चला कमानहिं डार॥313॥

जस कथनी तस करनी, जस चुंबक तस ज्ञान।
कहहिं कबीर चुंबक बिना, क्यों जीते संग्राम॥314॥

अपनी कहै मेरी सुनै, सुनि मिलि एकै होय।
हमरे देखत जग जात है, ऐसा मिला न कोय॥315॥

देश विदेश हौं फिरा, गांव-गांव की खोरि।
ऐसा जियरा ना मिला, लेवै फटक पछोरि॥316॥

मैं चितवत हौं तोहि को, तू चितवत कछु और।
लानत ऐसे चित्त पर, एक चित्त दुइ ठौर॥317॥

चुंबक लोहे प्रीति है, लोहे लेत उठाय।
ऐसा शब्द कबीर का, काल से लेत छुड़ाय॥318॥

भूला तो भूला, बहुरि के चेतना।
विस्मय की छूरी, संशय का रेतना॥319॥

दोहरा कथि कहैं कबीर, प्रतिदिन समय जो देखि।
मुये गये नहिं बहुरे, बहुरि न आये फेरि॥320॥
गुरु बिचारा क्या करे, शिष्यहि मां है चूक।
भावै त्यों परमोधिये, बांस बजाये फूक॥321॥
दादा भाई बाप कै लेखों, चरणन होइहौं बंदा।
अबकी पुरिया जो निरुवारे, सो जन सदा अनंदा॥322॥
सब ते लघुता भली, लघुता से सब होय।
जस दुतिया को चंद्रमा, सीस नावै सब कोय॥323॥
मरते मरते जग मुवा, मुये न जाना कोय।
ऐसा होय के ना मुवा, जो बहुरि न मरना होय॥324॥
मरते मरते जग मुवा, बहुरि न किया विचार।
एक सयानी आपनी, परबस मुवा संसार॥325॥
शब्द है गाहक नहीं, वस्तु है महंगे मोल।
बिना दाम काम न आवै, फिरै सो डामाडोल॥326॥
गृह तजि के भये योगी, योगी के गृह नाहिं।
बिना विवेक भटकत फिरै, पकरि शब्द की छाहिं॥327॥
सिंह अकेला बन रमै, पलक-पलक करै दौर।
जैसा बन है आपना, वैसा बन है और॥328॥
पैठा है घट भीतरे, बैठा है साचेत।
जब जैसी गति चाहै, तब तैसी मति देत॥329॥
बोलत ही पहिचानिये, साहु चोर का घाट।
अंतर घट की करनी, निकरे, मुख की बाट॥330॥
दिल का महरमि कोइ न मिलिया, जो मिलिया सो गर्जी।
कहहिं कबीर असमानहिं फाटा, क्यों कर सीवै दर्जी॥331॥
ई जग जरते देखिया, अपनी अपनी आगि।
ऐसा कोई ना मिला, जासों रहिये लागि॥332॥

बना बनाया मानवा, बिना बुद्धि बेतूल।
कहा लाल ले कीजिये, बिना बास का फूल॥333॥
हम तो लखा तिहु लोक में, तू क्यों कहै अलेख।
सारशब्द जाना नहीं, धोखे पहिरा भेख॥334॥
कारे बड़े कुल ऊपजै, जोरे बड़ी बुधि नाहिं।
जैसा फूल उजारिका, मिथ्या लगि झरि जाहिं॥335॥
कर्ते किया न बिधि किया, रवि ससि परी न दृष्टि।
तीन लोक में है नहीं, जाने सकलो सृष्टि॥336॥
सुरहुर पेड़ अगाध फल, पंछी मरिया झूर।
बहुत जतन कै खोजिया, फल मीठा पै दूर॥337॥
बैठा रहै सो बानिया, ठाढ़ रहै सो ग्वाल।
जागत रहै सो पहरुआ, तेहि धरि खायो काल॥338॥
आगे-आगे दौं जरे, पाछे हरियर होय।
बलिहारी तेहि वृक्ष की, जर काटे फल होय॥339॥
जन्म मरण बालापना, चौथे वृद्ध अवस्था आय।
जस मूसा को तकै बिलाई, अस जम जिव घात लगाय॥ 340॥
है बिगरायल ओर का, बिगरो नाहिं बिगारो।
घाव काहि पर घालो, जित देखो तित प्राण हमारो॥341॥
पारस परसे कंचन भौ, पारस कधी न होय।
पारस के अर्स-पर्स ते, सुवर्ण कहावै सोय॥342॥
ढूंढ़त ढूंढ़त ढूंढ़िया, भया सो गूनागून।
ढूंढ़त ढूंढ़त ना मिला, तब हारि कहा बेचून॥343॥
बेचूने जग चूनिया, सांई नूर निनार।
आखिर ताके बखत में, किसका करो दिदार॥344॥
सोई नूर दिल पाक है, सोई नूर पहिचान।
जाके किये जग हुवा, सो बेचून क्यों जान॥345॥

ब्रह्मा पूछै जननि से, कर जोरे सीस नवाय।
कौन वर्ण वह पुरुष है, माता कहु समुझाय॥346॥

रेख रूप वै है नहीं, अधर धरी नहिं देह।
गगन मंडल के बीच में, निरखो पुरुष बिदेह॥347॥

धरे ध्यान गगन के माहीं, लाये बज्र किवांर।
देखी प्रतिमा आपनी, तीनउं भये निहाल॥348॥

ये मन तो शीतल भया, जब उपजा ब्रह्मज्ञान।
जेहि बसंदर जग जरै, सो पुनि उदक समान॥349॥

जासो नाता आदि का, बिसरि गया सो ठौर।
चौरासी के बसि परे, कहै और की और॥350॥

अलख लखौं अलखै लखौं, लखौं निरंजन तोहि।
हौं कबीर सबको लखौं, मोंको लखै न कोहि॥351॥

सुमिरन तू घट में करै, घट ही में करतार।
घट ही भीतर पाइये, सुरति शब्द भण्डार॥352॥

थोड़ा सुमिरन बहुत सुख, जो करि जानै कोय।
हरदी लगै न फिटकरी, चोखा ही रंग होय॥353॥

तू तू करता तू भया, तुझ में रहा समाय।
तुझ मांहि मन मिलि रहा, अब कहुं अनत न जाय॥354॥

जल में बसै कमोदिनी, चन्दा बसै अकास।
जाको जासे प्रेम है, सो ताही के पास॥355॥

जहां प्रेम तहं नेम नहीं, तहां न बुधि व्यवहार।
प्रेम मगन जब मन भया, कौन गिनै तिथि वार॥356॥

अधिक सनेही माछरी, दूजा अलप सनेह।
जबही जलते बीछुरै, तबही त्यागै देह॥357॥

प्रेम बिकाता मैं सुना, माथा साटै हाट।
पूछत बिलम न कीजिये, तत छिन दीजै काट॥358॥

नाम रसायन प्रेम रस, पीवत अधिक रसाल।
कबीर पीवन दुर्लभ है, मांगै शीश कलाल॥359॥

प्रेम पांवरी पहिरि के, धीरज कज्जल देय।
शील सिंदूर भराय के, तब पिय का सुख लेय॥360॥

प्रेम छिपाया ना छिपै, जा घट परगट होय।
जो पै मुख बोलै नहीं, नैन देत हैं रोय॥361॥

प्रेम बिना धीरज नहीं, बिरह बिना वैराग।
सतगुरु बिन जावै नहीं, मन मनसा का दाग॥362॥

प्रेम भक्ति में रचि रहैं, मोक्ष मुक्ति फल पाय।
शब्द मांहि जब मिलि रहै, नहिं आवै नहिं जाय॥363॥

अमृत पावै ते जना, सतगुरु लागा कान।
वस्तु अगोचर मिलि गई, मन नहिं आवा आन॥364॥

यह तो घर है प्रेम का, ऊंचा अधिक इकंत।
शीष काटि पग तर धरै, तब पैठे कोई संत॥365॥

यह तत वह तत एक है, एक प्रान दुइ गात।
अपने जिय से जानिये, मेरे जिय की बात॥366॥

कबीर हम गुरु रस पिया, बाकी रही न छाक।
पाका कलश कुम्हार का, बहुरि च चढ़सी चाक॥367॥

आया प्रेम कहां गया, देखा था सब कोय।
छिन रोवै छिन में हंसै, सो तो प्रेम न होय॥368॥

आठ पहर चौसठ घड़ी, लागि रहे अनुराग।
हिरदै पलक न बीसरे, तब सांचा बैराग॥369॥

जाके चित्त अनुराग है, ज्ञान मिले नर सोय।
बिन अनुराग न पावई, कोटि करै जो कोय॥370॥

प्रीति ताहि सो कीजिये, जो आप समाना होय।
कबहुक जो अवगुन पड़ै, गुन ही लहै समोय॥371॥

सबै रसायन हम पिया, प्रेम समान न कोय।
रंचक तन में संचरै, सब तन कंचन होय।।372।।
प्रेम प्रेम सब कोइ कहै, प्रेम न चीन्है कोय।
जा मारग साहिब मिलै, प्रेम कहावै सोय।।373।।
मिलना जग में कठिन है, मिलि बिछरौ जनि कोय।
बिछुरा साजन तिहि मिलै, जिहि माथै मनि होय।।374।।
प्रेम बिना नहिं भेष कछु, नाहक करै सुवाद।
प्रेम बाद जब लग नहीं, सबै भेष बरबाद।।375।।
प्रेम भाव इक चाहिए, भेष अनेक बनाय।
भावै घर में वास कर, भावै बन में जाय।।376।।
प्रेमी ढूंढ़त मैं फिरूं, प्रेमी मिलै न कोय।
प्रेमी सों प्रेमी मिलै, विष से अमृत होय।।377।।
जा घट प्रेम न संचरै, सो घट जानु मसान।
जैसे खाल लुहार की, सांस लेत बिन प्रान।।378।।
गहरी प्रीति सुजान की, बढ़त-बढ़त बढ़ि जाय।
ओछी प्रीति अजान की, घटत घटत घटि जाय।।379।।
जब लग मरने से डरैं, तब लगि प्रेमी नांहि।
बड़ी दूर है प्रेम घर, समझ लेहु मन मांहि।।380।।
गुणवेता औ द्रव्य को, प्रीति करै सब कोय।
कबीर प्रीति सो जानिये, इनते न्यारी होय।।381।।
प्रेम न बाड़ी ऊपजै, प्रेम न हाट बिकाय।
राजा परजा जो रुचै, शीश देय ले जाय।।382।।
जो जागत सो सपन में, ज्यौं घट भीतर सांस।
जो जन जाको भावता, सो जन ताके पास।।383।।
प्रेम प्रीति से जो मिले, ताको मिलिये धाय।
कपट राखिके जो मिले, तासे मिलै बलाय।।384।।

प्रेम पियाला जो पिये, शीश दच्छिना देय।
लोभी शीश न दे सकै, नाम प्रेम का लेय॥385॥
जो है जाका भावता, जब तब मिलि हैं आय।
तन मन ताको सौंपिये, जो कबहुं न छाड़ि जाय॥386॥
नेह निबाहै ही बनै, सोयै बनै न आन।
तन दे मन दे शीश दे, नेह न दीजै जान॥387॥
आगि आंचि सहना सुगम, सुगम खड़क की धार।
नेह निबाहन एक रस, महा कठिन ब्यौहार॥388॥
प्रीति पुरानि न होत है, जो उत्तम से लाग।
सो बरसां जल में रहै, पथर न छोड़े आग॥389॥
प्रीति बहुत संसार में, नाना विधि की सोय।
उत्तम प्रीति सो जानिये, सतगुरु से जो होय॥390॥
प्रेम पंथ में पग धरै, देत न शीश डराय।
सपने मोह व्यापे नहिं, ताको जन्म नशाय॥391॥
सजन सनेही बहुत हैं, सुख में मिले अनेक।
बिपत्ति पड़े दुख बांटिये, सो लाखन में एक॥392॥
छिनहि चढ़ै छिन उतरै, सो तो प्रेम न होय।
औघट घाट प्रेम पिंजर बसै, प्रेम कहावै सोय॥393॥
जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहिं।
प्रेम गली अति सांकरी, तामें दो न समांहि॥394॥
यह तो घर है प्रेम का, खाला का घर नाहिं।
शीष उतारै भुईं धरै, तब पैठे घर मांहि॥395॥
गोता मारा सिंधु में, मोती लाये पैठि।
वह क्या मोती पायेंगे, रहे किनारे बैठि॥396॥
साहिब के दरबार में, कमी काहु की नाहिं।
बन्दा मौज न पावहीं, चूक चाकरी माहिं॥397॥

शीलवन्त सुर ज्ञान मत, अति उदार चित्त होय।
लज्जावान अति निछलता, कोमल हिरदा सोय॥398॥

यह मन ताको दीजिए, सांच्रा सेवक होय।
सिर ऊपर आरा सहै, तऊ न दूजा होय॥399॥

वितंदय धरमक ध्वजा, धीरजवान प्रमान।
सन्तोषी सुख दायका, सेवक परम सुजान॥400॥

अनराते सुख सोवना, राते नींद न आय।
ज्यों जल छूटी माछरी, तड़फत रैन बिहाय॥401॥

सेवक स्वामी एक मत, मत में मत मिलि जाय।
चतुराई रीझै नहीं, रीझै मन के भाय॥402॥

गुरुमुख गुरु चितवन रहे, जैसे मणिहिं भुजंग।
कहैं कबीर बिसरैं नहीं, यह गुरुमुख को अंग॥403॥

फल कारन सेवा करै, निशि-दिन जांचै राम।
कहैं कबीर सेवक नहीं, चाहै चौगुन दाम॥404॥

कहैं कबीर गुरु प्रेम बस, क्या नियरै क्या दूर।
जाका चित्त जासों बसै, सो तेहि सदा हजूर॥405॥

गुरु आज्ञा मानै नहीं, चलै अटपटी चाल।
लोक वेद दोनों गये, आये सिर पर काल॥406॥

गुरु आज्ञा लै आवही, गुरु आज्ञा लै जाय।
कहैं कबीर सो सन्त प्रिय, बहु विधि अमृत पाय॥407॥

सेवक सेवा में रहै, सेवक कहिये सोय।
कहैं कबीर सेवा बिना, सेवक कभी न होय॥408॥

सतगुरु शब्द उलंघि के, जो सेवक कहुं जाय।
जहां जाय तहं काल है, कहैं कबीर समझाय॥409॥

ज्ञानी अभिमानी नहीं, सब काहू सो हेत।
सत्यवान परमारथी, आदर भाव सहेत॥410॥

मैं भौंरा तोहि बरजिया, बन बन बास न लेय।
अटकेगा कहुं बेल सों, तड़प तड़प जिय देय॥411॥
इत पर घर उत है घरा, बनिजन आये हाट।
करम करीना बेचि के, उठि करि चालो बाट॥412॥
कबीर खेत किसान का, मिरगन खाया झारि।
खेत बिचारा क्या करै, धनी करै नहिं वारि॥413॥
कबीर यह संसार है, जैसा सेंमल का फूल।
दिन दस के व्यवहार में, झूठे रंग न फूल॥414॥
राम भजो तो अब भजो, बहोरि भजोगे कब्ब।
हरिया हरिया रुखड़े, ईंधन हो गये सब्ब॥415॥
दुनिया सेती दोसती, होय भजन में भंग।
एका एकी राम सों, कै साधुन के संग॥416॥
कबीर यह तन जात है, सकै तो ठौर लगाव।
कै सेवा कर साधु की, कै गुरु के गुन गाव॥417॥
कबीर जो दिन आज है, सो दिन नांहि काल।
चेति सके तो चेति ले, मीच परी है ख्याल॥418॥
कबीर या संसार में, घना मानुष मतिहीन।
राम नाम जाना नहीं, आये टापा दीन॥419॥
ज्यौं कोरी रेजा बुनै, नीरा आवै छोर।
ऐसा लेखा मीच का, दौरि सके तो दौर॥420॥
मैं मेरी तू जनि करै, मेरी मूल विनासि।
मेरी पग का पैखड़ा, मेरी गल की फांसि॥421॥
मोर तोर की जेवरी, गल बंधा संसार।
दास कबीरा क्यों बंधै, जाके नाम अधार॥422॥
जो तू परा है फंद में, निकसेगा कब अंध।
माया मद तोकूं चढ़ा, मत भूले मतिमंद॥423॥

क्या करिये क्या जोड़िये, थोड़े जीवन काज।
छाड़ि छाड़ि सब जात हैं, देह गेह धन राज॥ 424॥
एक बुन्द के कारनै, रोता सब संसार।
अनेक बुन्द खाली गये, तिनका नहीं विचार॥ 425॥
मरुं मरुं सब कोइ कहै, मेरी मरै बलाय।
मरना था सो मरि चुका, अब को मरने जाय॥ 426॥
मन मूआ माया मुई, संशय मुआ शरीर।
अविनाशी जो ना मरे, तो क्यों मरे कबीर॥ 427॥
तन सराय मन पाहरु, मनसा उतरी आय।
को काहू का है नहीं, देखा ठोंकि बजाय॥ 428॥
जिनके नौबत बाजती, मैंगल बंधति बारि।
एकहि गुरु के नाम बिन, गये जनम सब हारि॥ 429॥
कबीर गर्व न कीजिये, ऊंचा देखि अवास।
काल परे भुंई लेटना, ऊपर जमसी घास॥ 430॥
नान्हा कातौ चित्त दे, महंगे मोल बिकाय।
ग्राहक राजा राम है, और न नियरे जाय॥ 431॥
मच्छ होय नहीं बचिहों, धीमर तेरो काल।
जिहि जिहि डाबर तुम फिरे, तहं तहं मेले जाल॥ 432॥
ऊंचा महल चुनाइया, सुबरन कली ढुलाय।
वे मन्दिर खाली पड़े, रहै मसाना जाय॥ 433॥
कबीर गर्व न कीजिये, चाम लपेटे हाड़।
हय बर ऊपर छत्र तट, तो भी देवे गाड़॥ 434॥
कबीर नाव तो झांझरि, भरी बिराने भार।
खेवट सों परिचै नहीं, क्यौंकर उतरै पार॥ 435॥
जागो लोगो मत सुवो, ना कुरु नींद से प्यार।
जैसा सपना रैन का, ऐसा यह संसार॥ 436॥

कबीर गर्व न कीजिये, काल गहे कर केश।
ना जानौ कित मारि हैं, क्या घर क्या परदेस॥437॥
कबीर गर्व न कीजिये, इस जोबन की आस।
टेसू फूला दिवस दस, खंखर भया पलास॥438॥
कबीर गर्व न कीजिये, देही देखि सुरंग।
बिछुरे पै मेला नहीं, ज्यों केचुली भुजंग॥439॥
कबीर जंत्र न बाजई, टूट गये सब तार।
जंत्र बिचारा क्या करै, जब चला बजावन हार॥440॥
कबीर गाफिल क्या करै, आया काल नजीक।
कान पकरि के ले चले, ज्यौं अजियाहि खटीक॥441॥
कबीर पानी हौज का, देखत गया बिलाय।
ऐसे ही जीव जायगा, काल जु पहुंचा आय॥442॥
कबीर केवल नाम कह, शुद्ध गरीबी चाल।
कूर बड़ाई बूड़सी, भारी परसी झाल॥443॥
कबीर मरेंगे मरि जायंगे, कोय न लेगा नाम।
ऊजड़ जाय बसाहिंगे, छोड़ि बसन्ता गाम॥444॥
नर नारायन रूप है, तू मति जानै देह।
जो समझे तो समझ ले, खलक पलक में खेह॥445॥
आंखि व देखे बावरा, शब्द सुनै नहिं कान।
सिर के केस उज्जल भये, अबहूं निपट अजान॥446॥
अहिरन की चोरी करै, करे सुई का दान।
ऊंचा चढ़ि कर देखता, केतिक दूर विमान॥447॥
चेत सबेरे बावरे, फिर पाछे पछिताय।
तोको जाना दूर है, कहैं कबीर बुझाय॥448॥
मूरख शब्द न मानई, धर्म न सुनै विचार।
सत्य शब्द नहिं खोजई, जावैं जम के द्वार॥449॥

कबीर वा दिन याद कर, पग ऊपर तल सीस।
मृत मंडल में आयके, बिसरि गया जगदीस॥450॥
कबीर बेड़ा जरजरा, कूड़ा खेवन हार।
हरुये हरुये तरि गये, बूड़े जिन सिर भार॥451॥
कबीर पांच पखेरूआ, राखा पोष लगाय।
एक जू आया पारधी, लइ गया सबै उड़ाय॥452॥
कबीर रसरी पांव में, कह सौवे सुख चैन।
सांस नगारा कूंच का, बाजत है दिन रैन॥453॥
आये हैं तो जायेंगे, राजा रंक फकीर।
एक सिंघासन चढ़ि चले, एक बांधे जात जंजीर॥454॥
या मन गहि जो थिर रहै, गहरी धूनि गाड़ि।
चलती बिरियां उठि चला, हस्ती घोड़ा छाड़ि॥455॥
तू मति जाने बावरे, मेरा है सब कोय।
प्रान पिण्ड सो बंधि रहा, सो नहिं अपना होय॥456॥
दीन गंवायो दूनि संग, दुनी न चाली साथ।
पांव कुल्हाड़ी मारिया, मूरख अपने हाथ॥457॥
काल चक्र चक्की चलै, बहुत दिवस औ रात।
सगुन अगुन दोय पाटला, तामें जीव पिसात॥458॥
मेरा संगी कोय नहिं, सबै स्वारथी लोय।
मन परतीति न ऊपजै, जिय विस्वास न होय॥459॥
महलन मांहीं पौढ़ते, परिमल अंग लगाय।
ते सपने दीसे नहीं, देखत गये बिलाय॥460॥
जंगल ढेरी राख की, उपरि उपरि हरियाय।
ते भी होते मानवी, करते रंग रलियाय॥461॥
जिसको रहना उतघरा, सो क्यों जोड़े मित्त।
जैसे घर पर पाहुना, रहै उठाये चित्त॥462॥

राम नाम जाना नहीं, पाला सकल कुटुम्ब।
धन्धाही में पचि मरा, बार भई नहिं बुम्ब॥463॥

कहा किया हम आयके, कहा करेंगे जाय।
इत के भये न ऊत के, चाले मूल गंवाय॥464॥

यह तन काचा कुंभ है, लिया फिरै थे साथ।
टपका लागा फुटि गया, कछू ना आया हाथ॥465॥

यह तन काचा कुंभ है, माहिं किया रहि वास।
कबीर नैन निहारिया, नहिं जीवन की आस॥466॥

विषय वासना उरझिकर, जनम गंवाय बाद।
अब पछितावा क्या करै, निज करनी कर याद॥467॥

राजपाट धन पायके, क्यों करता अभिमान।
पाड़ोसी की जो दशा, भई सो अपनी जान॥468॥

चले गये सो ना मिले, किसको पूंछूं बात।
मात पिता सुत बान्धवा, झूठा सब संघात॥469॥

कबीर मन्दिर लाख का, जड़िया हीरा लाल।
दिवस चारि का पेखना, विनशि जाएगा काल॥470॥

कबीर धूलि सकेलि के, पुड़ी जो बांधी येह।
दिवस चार का पेखना, अन्त खेह की खेह॥471॥

कबीर नौबत आपनी, दिन दस लेहु बजाय।
यह पुर पट्टन यह गली, बहुरि न देखहु आय॥472॥

पांचों नौबत बाजते, होत छत्तीसों राग।
सो मन्दिर खाली पड़ा, बैठन लागे काग॥473॥

कहा चुनावै मेड़िया, चूना माटी लाय।
मीच सुनैगी पापिनी, दौरि कि लेगी आय॥474॥

यह तन कांचा कुंभ है, चोट चहूं दिस खाय।
एकहिं गुरु के नाम बिन, जदि तदि परलय जाय॥475॥

५ तत्व का पूतरा, मानुष धरिया नाम।
दिन चार के कारने, फिर फिर रोके ठाम॥476॥
घर रखवाला बाहिरा, चिड़ियां खाईं खेत।
आधा परधा ऊबरे, चेति सके तो चेत॥477॥
कौन पवन धरती बसे, कौन पवन आकाश।
कौन पवन मध्ये बसे, कौन पवन परकाश॥478॥
धीर पवन धरती बसे, अकह पवन अकाश।
मधुर पवन मध्ये बसे, अग्र पवन परकाश॥479॥
कौन पवन लै आवही, कौन पवन लै जाय।
कौन पवन भरमत फिरै, सो मोहिं देहु बताय॥480॥
सहज पवन लै आवही, सुरति पवन लै जाय।
जीव पवन भरमत फिरै, सतगुरु कहै समुझाय॥481॥
तनका मंजन नीर है, नीरहि मंजन पौन।
कहै कबीर सुन पण्डिता, पवन का मंजन कौन॥482॥
तनका इंद्री मैल है, मन पवना लै धोय।
ज्ञान गुरुतें पाइये, पवन का मंजन सोय॥483॥
अब हम चले अमरापुरी, टारे टूरे टाट।
आवन होय सो आइयो, सूली ऊपर बाट॥484॥
सूली ऊपर घर करे, विषका करे अहार।
तिनका काल कहा करै, जो आठ पहर हुशियार॥485॥
गागर ऊपर गागरी, चोली ऊपर हार।
सूली ऊपर साथरा, जहां बुलावै यार॥486॥
यार बुलावै भाव सों, मोपै गया न जाय।
धन मैली पिउ ऊजला, लागि न सक्कों पाय॥487॥
खलक मिला खाली हुआ, बहुत किया बकवाद।
बांझ हिलावै पालना, तामें कौने स्वाद॥488॥

मौत बिसारी बावरी, अचरज कीया कौन।
तन माटी में मिल गया, ज्यौं आटा में लौन॥489॥
जनमै मन बिचारि के, कूरे काम निवारि।
जिन पंथा तोहि चालना, सोई पंथ संवारि॥490॥
माटी कहै कुम्हार सो, क्यों तू रौंदे मोहि।
एक दिन ऐसा होयगा, मैं रौंदूंगी तोहि॥491॥
राम नाम जाना नहीं, चूके अबकी घात।
माटी मिलन कुम्हार की, घनी सहेगी लात॥492॥
बैल गढन्ता नर गढ़ा, चूका सींग रु पूंछ।
एकहि गुरु के नाम बिनु, धिक दाढ़ी धिक मूंछ॥ 493॥
कल करै सो आज कर, सबहि साज तुव साथ।
काल काल तू क्या करै, काल काल के हाथ॥494॥
एक दिन ऐसा होयगा, कोय काहु का नांहि।
घर की नारी को कहै, तन की नारी जांहि॥495॥
कबीर सुपने रैन के, उघरी आये नैन।
जीव परा बहु लूट में, ना कछु लेन न देन॥496॥
पाव पलक की सुधि नहीं, करै काल का साज।
काल अचानक मारसी, ज्यौं तीतर को बाज॥497॥
ऊंचा दीसै धौहरा, मांड़ी चीती पोल।
एक गुरु के नाम बिना, जम मारेंगे रोल॥498॥
काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।
पल में परलय होयगी, बहुरि करेगा कब॥499॥
यह औसर चेत्यो नहीं, पशु ज्यौं पाली देह।
राम नाम जान्यो नहीं, अन्त पड़े मुख खेह॥500॥
कुल खोये कुल उबरै, कुल राखै कुल जाय।
राम निकुल कुल भोटिया, सब कुल गया बिलाय॥ 501॥

हाड़ जले, लकड़ी जले, जले जलावन हार।
कौतिक हारा भी जले, कासों करूं पुकार॥502॥

झूठा सब संसार है, कोउ न अपना मीत।
राम नाम को जानि ले, चलै सो भौजल जीत॥503॥

दुनिया के धोखै मुआ, चला कुटुंब की कानि।
तब कुल की क्या लाज है, जब ले धरा मसानि॥504॥

यह बिरियां तो फिरि नहिं, मन में देखु विचार।
आया लाभहि कारनै, जनम जुआ मति हार॥505॥

कै खाना कै सोवना, और न कोई चीत।
सतगुरु शब्द बिसारिया, आदि अन्त का मीत॥506॥

आज कहै मैं काल भजुं, काल कहै फिर काल।
आज काल के करत ही, औसर जासी चाल॥507॥

आज काल के बीच में, जंगल होगा बास।
ऊपर ऊपर हल फिरै, ढोर चरेंगे घास॥508॥

हाड़ जरै ज्यौं लाकड़ी, केस जरै ज्यों घास।
सब जग जरता देखि करि, भये कबीर उदास॥509॥

पानी केरा बुदबुदा, अस मानुष की जात।
देखत ही छिप जाएगा, ज्यौं तारा प्रभात॥510॥

ऊजड़ खेड़े टेकरी, घड़ि घड़ि गये कुम्हार।
रावन जैसा चलि गया, लंका को सरदार॥511॥

भय से भक्ति करै सबै, भय से पूजा होय।
भय पारस है जीव को, निरभय होय न कोय॥512॥

भय बिन भाव न ऊपजै, भय बिनु होय न प्रीति।
जब हिरदे से भय गया, मिटी सकल रस रीति॥513॥

आछे दिन पाछे गये, गुरु सों किया न हेत।
अब पछितावा क्या करै, चिड़ियां चुग गईं खेत॥514॥

एक दिन ऐसा होयगा, सब सों परै बिछोह।
राजा राना राव रंक, सावधान क्यों नहिं होय॥515॥
मन राजा नायक भया, टांडा लादा जाय।
है है है है ह्वै रही, पूंजी गयी बिलाय॥516॥
जो जल बाढ़े नाव में, घर में बाढ़ै दाम।
दोनों हाथ उलीचिये, यही सयानों काम॥517॥
खाय पकाय लुटाय ले, यह मनुवा मिजमान।
लेना हो सो लेइ ले, यही गोय मैदान॥518॥
जहां न जाको गुन लहै, तहां न ताको ठांव।
धोबी बसके क्या करे, दिगम्बर के गांव॥519॥
हरिजन तो हारा भला, जीतन दे संसार।
हारा तो हरि सों मिले, जीता जम के द्वार॥520॥
हस्ती चढ़िये ज्ञान का, सहज दुलीचा डार।
स्वान रूप संसार है, भूंकन दे झकमार॥521॥
मांगन को भल बोलनो, चोरन को भल चूप।
माली को भल बरसनो, धोबी को भल धूप॥522॥
बालों जैसी किरकिरी, ऊजल जैसी धूप।
एसी मीठी कछु नहीं, जैसी मीठी चूप॥523॥
ऋतु बसंत याचक भया, हरखि दिया द्रुम पात।
ताते नव पल्लव भया, दिया दूर नहिं जात॥524॥
अति हठ मत कर बावरे, हठ से बात न होय।
ज्यूं ज्यूं भीजे कामरी, त्यूं त्यूं भारी होय॥525॥
खाय पकाय लुटाय के, करि ले अपना काम।
चलती बिरिया रे नरा, संग न चलै छदाम॥526॥
लेना होय सो जल्द ले, कही सुनी मत मान।
कही सुनां जुग-जुग चली, आवागमन बंधान॥527॥

देह धरे का गुन यही, देह देह कछु देह।
बहुरि न देही पाइये, अबकी देह सुदेह॥528॥

सत ही मैं सत बांटई, रोटी में ते टूक।
कहैं कबीर ता दास को, कबहु न आवै चूक॥529॥

नाम भजो मन बसि करो, यही बात है तंत।
काहे को पढ़ि पचि मरो, कोटिन ज्ञान ग्रंथ॥530॥

चातुर को चिन्ता घनी, नहिं मूरख को लाज।
सर अवसर जानै नहीं, पेट भरन सूं काज॥531॥

तीन ताप में ताप हैं, ताका अनंत उपाय।
ताप आतम महाबली, संत बिना नहिं जाय॥532॥

बन्दे तू कर बन्दगी, तब पावै दीदार।
औसर मानुष जनम का, बहुरि न बारंबार॥533॥

जीवत कोय समुझै नहिं, मुवा न कह संदेस।
तन मन से परिचय नहिं, ताको क्या उपदेस॥534॥

काल काल तत्काल है, बुरा न करिये कोय।
अनबोवे लुनता नहीं, बोवे लुनता होय॥535॥

दुरबल को न सताइये, जाकी मोटी हाय।
बिना जीव की सांस से, लोह भसम ह्वै जाय॥536॥

कबीर आप ठगाइये, और न ठगिये कोय।
आप ठगे सुख ऊपजै, और ठगे दुख होय॥537॥

बनजारे के बैल ज्युं, भरमि फिरयो चहुं देस।
खांड लादि भुस खात हैं, बिन सतगुरु उपदेश॥538॥

या दुनिया में आय के, छांडि देय तू ऐंठ।
लेना है सो लेय ले, उठी जात है पैंठ॥539॥

मान अभिमान न कीजिये, कहैं कबीर पुकार।
जो सिर साधु न नमैं, तो सिर काटि उतार॥540॥

पढ़ि पढ़ि के पत्थर भये, लिखि भये जु ईंट।
कबीर अन्तर प्रेम का, लागी नेक न छींट॥541॥
जिहि जिवरी ते जग बंधा, तू जनि बंधै कबीर।
जासी आटा लौन ज्यौं, सोन समान शरीर॥542॥
चतुराई क्या कीजिये, जो नहिं शब्द समाय।
कोटिक गुन सूवा पढ़ै, अन्त बिलाई खाय॥543॥
करता था तो क्यौं रहा, अब करि क्यौं पछताय।
बोवै पेड़ बबूल का, आम कहां ते खाय॥544॥
काया सों कारज करें, सकल काज की रीत।
कर्म भर्म सब मेट के, राम नाम सौं प्रीत॥545॥
देह खेह हो जायेगी, कौन कहेगा देह।
निश्चय कर उपकार ही, जीवन का फल येह॥546॥
बहते को मत बहन दो, कर गहि ऐचहु ठौर।
कह्यौ सुन्यो मानै नहीं, शब्द कहो दुइ और॥ 547॥
कहते को कहि जान दे, गुरु की सिख तूं लेय।
साकट जन औ स्वान को, फेरि जवाब न देय॥548॥
जैसा भोजन खाइये, तैसा ही मन होय।
जैसा पानी पीजिये, तैसी बानी होय॥549॥
कथा कीरतन करन की, जाके निसदिन रीत।
कहैं कबीर ता दास सों, निश्चै कीजै प्रीत॥550॥
कबीर यह तन जात है, सको तो राखु बहोर।
खाली हाथो बह गये, जिनके लाख करोर॥551॥
या दुनिया दो रोज की, मत कर यासो हेत।
गुरु चरनन चित लाइये, जो पूरन सुख देत॥552॥
कबीर तहां न जाइये, जहं जो कुल को हेत।
साधुपनो जानै नहीं, नाम बाप को लेत॥553॥

कबीर संगी साधु का, दल आया भरपूर।
इन्द्रिन को तब बांधिया, या तन कीया घूर॥554॥
ऐसी बानी बोलिये, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करै, आपहु शीतल होय॥555॥
धर्म किये धन ना घटै, नदी न घटै नीर।
अपनी आंखों देखि ले, यों कथि कहहिं कबीर॥556॥
कहैं कबीर देय तू, जब लग तेरी देह।
देह खेह हो जायेगी, कौन कहेगा देह॥557॥
जग में बैरी कोय नहीं, जो मन शीतल होय।
या आपा को डारि दे, दया करे सब कोय॥558॥
बार बार तोसों कहा, सुन रे मनुवा नीच।
बनजारे का बैल ज्यूं, पैंडा माहीं मीच॥559॥
जिन गुरु जैसा जानिया, तिनको तैसा लाभ।
ओसे प्यास न भागसी, जब लगि धसै न आभ॥560॥
इष्ट मिले अरु मन मिले, मिले सकल रस रीति।
कहैं कबीर तहं जाइये, यह सन्तन की प्रीति॥561॥
गांठि होय सो हाथ कर, हाथ होय सो देह।
आगे हाट न बानिया, लेना है सो लेह॥562॥
राम नाम सुमिरन करै, सतगुरु पद निज ध्यान।
आतम पूजा जीव दया, लहै सो मुक्ति अमान॥563॥
जो तोको काटा बोवै, ताहि बोवै तू फूल।
तुझको फूल का फूल है, वाको है तिरशूल॥564॥
गारी ही से ऊपजै, कलह कष्ट औ मीच।
हारि चले सो सन्त है, लागि मरै सो नीच॥565॥
हाड़ बड़ा हरि भजन करि, द्रव्य बड़ा कछु देह।
अकल बड़ी उपकार करि, जीवन का फल येहि॥566॥

सार शब्द जानै बिना, जिव परलै में जाय।
काया माया थिर नहीं, शब्द लेहु अरथाय॥567॥
यही बड़ाई शब्द की, जैसे चुम्बक भाय।
बिना शब्द नहीं ऊबरे, केता करै उपाय॥568॥
कुटिल वचन सबतें बुरा, जारि करै सब छार।
साधु वचन जल रूप है, बरसै अमृत धार॥569॥
कुटिल बचन नहिं बोलिये, शीतल बैन ले चीन्हि।
गंगा जल शीतल भया, परबत फोड़ी तीन्हि॥570॥
खोद खाद धरती सहै, काट कूट बनराय।
कुटिल बचन साधु सहै, और से सहा न जाय॥571॥
शीतल शब्द उचारिये, अहं आनिये नाहिं।
तेरा प्रीतम तुझहि में, दुसमन भी तुझ माहिं॥572॥
शब्द कहै सो कीजिये, बहुतक गुरु लबार।
अपने अपने लाभ को, ठौर ठौर बटपार॥573॥
खोजी हुआ शब्द का, धन्य सन्त जन सोय।
कहैं कबीर गहि शब्द को, कबहु न जाय बिगोय॥574॥
शीतलता तब जानिये, समता रहै समाय।
विष छोड़ै निरबिस रहै, सब दिन दूखा जाय॥575॥
करक गड़न दुरजन बचन, रहै सन्त जन टारि।
बिजुली परै समुद्र में, कहा सकेगी जारि॥576॥
कुबुधि कमानी चढ़ि रही, कुटिल वचन के तीर।
भरि भरि मारे कान में, सालै सकल सरीर॥577॥
सोई शब्द निज सार है, जो गुरु दिया बताय।
बलिहारी वा गुरुन की, सीष बियोग न जाय॥578॥
सीखै सुनै विचार ले, ताहि शब्द सुख देय।
बिना समझै शब्द गहै, कछु न लोहा लेय॥579॥

काल फिरै सिर ऊपरै, जीवहि नजरि न आय।
कहैं कबीर गुरु शब्द गहि, जम से जीव बचाय॥ 580॥
जंत्र मंत्र सब झूठ है, मति भरमो जग कोय।
सार शब्द जानै बिना, कागा हंस न होय॥581॥
कर्म फंद जग फंदिया, जप तप पूजा ध्यान।
जाहि शब्द ते मुक्ति होय, सो न परा पहिचान॥582॥
शब्द जु ऐसा बोलिये, तन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे, आपन को सुख होय॥583॥
जिहि शब्दे दुख ना लगे, सोई शब्द उचार।
तपत मिटी सीतल भया, सोई शब्द ततसार॥584॥
कागा काको धन हरै, कोयल काको देत।
मीठा शब्द सुनाय के, जग अपनो करि लेत॥585॥
शब्द पाय सुरति राखहि, सो पहुंचै दरबार।
कहैं कबीर तहां देखिये, बैठा पुरुष हमार॥586॥
शब्द बराबर धन नहीं, जो कोय जानै बोल।
हीरा तो दामों मिलैं, सब्दहि मोल न तोल॥587॥
सन्त सन्तोषी सर्वदा, शब्दहिं भेद विचार।
सतगुरु के परताप ते, सहज सील मतसार॥588॥
जिभ्या जिन बस में करी, तिन बस कियो जहान।
नहिं तो औगुन ऊपजे, कहि सब संत सुजान॥589॥
लागी लागी क्या करै, लागत रही लगार।
लागी तबही जानिये, निकसी जाय दुसार॥590॥
हरिजन सोई जानिये, जिह्वा कहैं न मार।
आठ पहर चितवन रहै, गुरु का ज्ञान विचार॥591॥
टीला टीली ढाहि के, फोरि करै मैदान।
समझ सका करता चलै, सोई शब्द निरबान॥592॥

शब्द दुराया ना दुरै, कहूं जु ढोल बजाय।
जो जन होवै जौहरी, लेहैं सीस चढ़ाय॥593॥
शब्द शब्द सब कोय कहै, शब्द का करो विचार।
एक शब्द शीतल करै, एक शब्द दे जार॥594॥
रैन तिमिर नासत भयो, जबही भानु उगाय।
सार शब्द के जानते, करम भरम मिटि जाय॥595॥
सहज तराजू आनि कै, सब रस देखा तोलि।
सब रस मांहीं जीभ रस, जु कोय जानै बोलि॥596॥
मुख आवै सोई कहै, बोलै नहीं विचार।
हते पराई आतमा, जीभ बांधि तलवार॥597॥
शब्द न करै मुलाहिजा, शब्द फिरै चहुं धार।
आपा पर जब चीन्हिया, तब गुरु सिष ब्यवहार॥598॥
शब्द खोजि मन बस कर, सहज जोग है येह।
सत्त शब्द निज सार है, यह तो झूठी देह॥599॥
जिह्वा में अमृत बसै, जो कोइ जानै बोल।
विष बासुकि का ऊतरे, जिह्वा तनै हिलोल॥600॥
कबीर सार शब्द निज जानि के, जिन कीन्ही परतीति।
काग कुमत तजि हंस ह्वै, चले सु भौजल जीति॥601॥
शब्द सम्हारे बोलिये, शब्द के हाथ न पांव।
एक शब्द औषधि करे, एक शब्द करे घाव॥602॥
शब्द गुरु का शब्द है, काया का गुरु काय।
भक्ति करै नित शब्द की, सत्गुरु यौं समुझाय॥603॥
शब्द उपदेस जु मैं कहुं, जु कोय मानै संत।
कहैं कबीर विचारि के, ताहि मिलावौं कंत॥604॥
बोलै बोल विचारि के, बैठे ठौर संभारि।
कहैं कबीर ता दास को, कबहु न आवै हारि॥605॥

एक शब्द सुख खानि है, एक शब्द दुख रासि।
एक शब्द बन्धन कटै, एक शब्द गल फांसि।।606।।
जीवन में मरना भला, जो मरि जानै कोय।
मरना पहिले जो मरै, अजर अमर सो होय।।607।।
मन को मिरतक देखि के, मति माने विश्वास।
साधु तहां लौं भय करे, जौ लौ पिंजर सांस।।608।।
जब लग आश शरीर की, मिरतक हुआ न जाय।
काया माया मन तजै, चौड़े रहा बजाय।।609।।
जीवत मिरतक होय रहै, तजै खलक की आस।
रच्छक समरथ सद्गुरु, मति दुख पावै दास।।610।।
पांचों इन्द्रिय छठा मन, सम संगत सूचंत।
कहैं कबीर जग क्या करे, सातों गांठि निश्चिंत।।611।।
भक्त मरे क्या रोइये, जो अपने घर जाय।
रोइये साकट बापुरे, हाटों हाट बिकाय।।612।।
अजहुं तेरा सब मिटै, जो जग मानै हार।
घर में झगरा होत है, सो घर डारो जार।।613।।
मैं मेरा घर जालिया, लिया पलीता हाथ।
जो घर जारो आपना, चलो हमारे साथ।।614।।
मैं जानूं मन मरि गया, मरि के हूआ भूत।
मूये पीछे उठि लगा, ऐसा मेरा पूत।।615।।
शब्द विचारी जो चले, गुरुमुख होय निहाल।
काम क्रोध व्यापै नहीं, कबहूं न ग्रासै काल।।616।।
सूर सती का सहज है, घड़ी इक का घमसान।
मरै न जीवै मरजिवा, धमकत रहे मसान।।617।।
कबीर मिरतक देखकर, मति धारो विश्वास।
कबहूं जागै भूत है, करै पिंडका नाश।।618।।

आस पास जोधा खड़े, सबे बजावै गाल।
मंझ महल ते ले चला, ऐसा परबल काल॥619॥
जरा कुत्ता जोबन ससा, काल अहेरी नित्त।
दो बैरी बिच झोंपड़ा, कुशल कहां सो मित्त॥620॥
पात झरन्ता देखि के, हंसतीं, कूपलियां।
हम चाले तुम चालियो, धीरी बापलियां॥621॥
काल पाय जग ऊपजो, काल पाय सब जाय।
काल पाय सब बिनसिहैं, काल काल कह खाय॥622॥
मैं अकेल वह दो जना, सेरी नाहीं कोय।
जो जम आगे ऊबरो, तो जरा बैरी होय॥623॥
जो उगै सो आथवे, फूलै सो कुम्हिलाय।
जो चूनै सो ढहि पड़ै, जामै सो मरि जाय॥624॥
चाकी चली गुपाल की, सब जग पीसा झार।
रुड़ा शब्द कबीर का, डारा पाट उघार॥625॥
काल काल सब कोइ कहे, काल न चीन्हे कोय।
जेती मन की कल्पना, काल कहावै सोय॥626॥
काल फिरै सिर ऊपरे, हाथों धरी कमान।
कहैं कबीर गहु नाम को, छोड़ सकल अभिमान॥627॥
जाय झरोखे सोवता, फूलना सेज बिछाय।
सो अब कहूं दीखै नहीं, छिन में गयो बिलाय॥628॥
कबीर टुक टुक चोंघता, पल पल गई विहाय।
जिव जंजाले पड़ि रहा, दिया दमामा आय॥629॥
काल जीव को ग्रासई, बहुत कह्यौ समुझाय।
कहैं कबीर मैं क्या करूं, कोई नहिं पतियाय॥630॥
झूठा सुख को सुख कहै, मानत है मन मोद।
जगत चबेना काल का, कछू मूठी कछू गोद॥631॥

चहुं दिस ठाढ़े सूरमा, हाथ लिये हथियार।
सबही यह तन देखता, काल ले गया मार॥632॥

चहुं दिस पाका कोट था, मन्दिर नगर मझार।
खिरकी खिरकी पाहरु, गज बंधा दरबार॥633॥

हम जाने थे खायंगे, बहुत जिमीं बहु माल।
ज्यौं का त्यौं ही रहि गया, पकड़ि ले गया काल॥634॥

धरती करते एक पग, समुन्दर करते फाल।
हाथों परबत तौलते, ते भी खाये काल॥635॥

खुलि खेलो संसार में, बांधि न सक्कै कोय।
घाट जगाती क्या करै, सिर पर पोट न होय॥636॥

चलती चाकी देखि के, दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बिच आय के, साबुत बचा न कोय॥637॥

मूसा डरपे काल सूं, कठिन काल का जोर।
स्वर्ग भूमि पाताल में, जहां जाव तहं गोर॥638॥

जोबन सिकदारी तजी, चला निशान बजाय।
सिर पर सेत सिरायचा, दिया बुढ़ापा आय॥639॥

बेटा जाये क्या हुआ, कहा बजावै थाल।
आवन जावन होय रहा, ज्यों कीड़ी का नाल॥640॥

बालपन भोले गया, और जुवा महमंत।
वृद्धपने आलस गयो, चला जरन्ते अन्त॥641॥

संसै काल शरीर में, विषम काल है दूर।
जाको कोइ जानै नहीं, जारि करै सब धूर॥642॥

कबीर गाफिल क्यौं फिरै, क्या सोता घनघोर।
तेरे सिराने जम खड़ा, ज्यूं अंधियारे चोर॥643॥

जरा आय जोरा किया, नैनन दीन्हीं पीठ।
आंखौ ऊपर आंगुली, वीष भरै पछ नीठ॥644॥

बिरिया बीती बल घटा, केस पलटि भये और।
बिगरा काज संभारि लै, करि छूटन की ठौर॥645॥
ताजी छूटा सहर ते, कसबै पड़ी पुकार।
दरवाजा जड़ाहि रहा, निकस गया असवार॥646॥
पंथी ऊभा पंथ सिर, बगुचा बांधा पूंठ।
मरना मुंह आगे खड़ा, जीवन का सब झूठ॥647॥
यह जीव आया दूर ते, जाना है बहु दूर।
बिच के वासै बसि गया, काल रहा सिर पूर॥648॥
सब जग डरपैं काल सों, ब्रह्मा विश्नु महेस।
सुर नर मुनि औ लोक सब, सात रसातल सेस॥649॥
कबीर मन्दिर आपने, नित उठि करता आल।
मरहट देखी डरपता, चौड़े दीया डाल॥650॥
निश्चय काल गरास हो, बहुत कहा समुझाय।
कहैं कबीर मैं का कहूं, देखत ना पतियाय॥651॥
जारि बारि मिस्सी करै, मिस्सी करिहै छार।
कहैं कबीर कोइला करै, फिर दे दै औतार॥652॥
कबीर घाट जगाती धर्मराय, गुरुमुख ले पहिचान।
छाप बिना गुरु नाम के, साकट रहा निदान॥653॥
ऐसे सांच न मानई, तिलकी देखो जोय।
जारि बारि कोयला करै, जमता देखा सोय॥654॥
माली आवत देखि के, कलियां करें पुकार।
फूली फूली चुनि लई, काल हमारी बार॥655॥
संसै काल शरीर में, जारि केर सब धूर।
काल से बांचै दास जन, जिन पै दयाल हजूर॥656॥
कबीर पगरा दूर है, आय पहूंची सांझ।
जन जन को मत राखतां, वेश्या रहि गई बांझ॥657॥

काल हमारे संग है, कस जीवन की आस।
दस दिन नाम संभार ले, जब लग पिंजर सांस।।658।।

टालै टूलै दिन गयो, ब्याज बढ़न्ता जाय।
ना हरि भजा न खत कटा, काल पहुंचा आय।।659।।

फागुन आवत देखि के, मन झूरे बनराय।
जिन डाली हम केलि किय, सोही बयारे जाय।।660।।

हाथों परबत फाड़ते, समुन्दर घूट भराय।
ते मुनिवर धरती गले, का कोई गरब कराय।।661।।

कबीर सब सुख राम है, औरहि दुख की रासि।
सुर नर मुनि अरु असुर सुर, पड़े काल की फांसि।।662।।

काची काया मन अथिर, थिर थिर करम करन्त।
ज्यौं ज्यौं नर निधड़क फिरै, त्यौं त्यौं काल हसन्त।।663।।

कबीर पगरा दूर है, बीच पड़ी है रात।
ना जाने क्या होयगा, ऊगन्ता परभात।।664।।

जिनके नाम निशान है, तिन अटकावै कौन।
पुरुष खजाना पाइया, मिटि गया आवा गौन।।665।।

तरुवर पात सों यौं कहै, सुनो पात इक बात।
या घर याही रीति है, इक आवत इक जात।।666।।

पात झरन्ता यौं कहै, सुन तरुवर बन राय।
अबके बिछुड़े ना मिले, दूर पड़ेंगे जाय।।667।।

स्वारथ का सबको सगा, सारा ही जग जान।
बिन स्वारथ आदर करै, सो नर चतुर सुजान।।668।।

स्वारथ कूं स्वारथ मिले, पड़ि पड़ि लूंबा बूंब।
निस्प्रेही निरधार को, कोय न राखै झूंब।।669।।

माया कूं माया मिले, कर कर लम्बे हाथ।
निस्प्रेही निरधार को, गाहक दीनानाथ।।670।।

संसारी से प्रीतड़ी, सरै न एकौ काम।
दुविधा से दोनों गये, माया मिली न राम॥671॥
कबीर यह मन मसखरा, कहूं तो मानै रोस।
जा मारग साहिब मिलै, तहां न चालै कोस॥672॥
कुंभै बांधा जल रहै, जल बिन कुंभ न होय।
ज्ञानै बांधा मन रहै, मन बिनु ज्ञान न होय॥673॥
मन चलतां तन भी चलै, ताते मन को घेर।
तन मन दोऊ बसि करै, होय राई सुमेर॥674॥
काया देवल मन धजा, विषय लहर फहराय।
मन चलते देवल चले, ताका सरबस जाय॥675॥
मेरे मन में परि गई, ऐसी एक दरार।
फाटाफटिक पषान ज्यूं, मिलै न दूजी बार॥676॥
पहिले यह मन कागा था, करता जीवन घात।
अब तो मन हंसा भया, मोती चुनि-चुनि खात॥677॥
काया कजरी बन अहै, मन कुंजर महमन्त।
अंकुस ज्ञान रतन है, फेरै साधु सन्त॥678॥
बिना सीस का मिरग है, चहुं दिस चरने जाय।
बांधि लाओ गुरुज्ञान सूं, राखो तत्व लगाय॥679॥
अपने अपने चोर को, सब कोय डारै मार।
मेरा चोर मुझको मिलै, सरबस डारूं वार॥680॥
कबीर मन तो एक है, भावै जहां लगाय।
भावै गुरु की भक्ति कर, भावै विषय कमाय॥681॥
तन का बैरी कोइ नहीं, जो मन शीतल होय।
तूं आपा को डारि दे, दया करे सब कोय॥682॥
मना मनोरथ छांड़ि दे, तेरा किया न होय।
पानी में घी नीकसै, रुखा खाय न कोय॥683॥

चंचल मन निहचल करै, फिरि फिरि नाम लगाय।
तन मन दोउ बसि करै, ताका कछु नहिं जाय॥684॥

मेरा मन मकरन्द था, करता बहुत बिगार।
सूधा होय मारग चला, हरि आगे हम लार॥685॥

कबीर मनहि गयंद है, आंकुस दे दे राखु।
विष की बेली परिहरो, अमृत का फल चाखु॥686॥

कबीर यह मन लालची, समझै नहीं गंवार।
भजन करन को आलसी, खाने को तैयार॥687॥

महमंता मन मारि ले, घट ही मांहीं घेर।
जब ही चालै पीठ दे, आंकुस दे दे फेर॥688॥

मन मनसा जब जायगी, तब आवैगी और।
जबही निहचल होयगा, तब पावैगा ठौर॥689॥

अकथ कथा या मनहि की, कहैं कबीर समुझाय।
जो याको समझा परै, ताको काल न खाय॥690॥

सुर नर मुनि सबको ठगै, मनहिं लिया औतार।
जो कोई याते बचै, तीन लोक ते न्यार॥691॥

धरती फाटै मेघ मिलै, कपड़ा फाटै डौर।
तन फाटै को औषधि, मन फाटै नहिं ठौर॥692॥

यह मन नीचा मूल है, नीचा करम सुहाय।
अमृत छाड़ै मान करि, विषहि प्रीत करि खाय॥693॥

मन को मारूं पटकि के, टूक टूक है जाय।
विष की क्यारी बोयके, लुनता क्यौं पछिताय॥694॥

अपने उरझै उरझिया, दीखै सब संसार।
अपने सुरझै सुरझिया, यह गुरु ज्ञान विचार॥695॥

मन के बहुतक रंग हैं, छिन छिन बदले सोय।
एक रंग में जो रहे, ऐसा बिरला कोय॥696॥

मन के मते न चालिये, मन के मते अनेक।
जो मन पर असवार है, सो साधु कोय एक॥697॥
मन मोटा मन पातरा, मन पानी मन लाय।
मन के जैसी ऊपजै, तैसी ही है जाय॥698॥
कबीर मन मरकट भया, नेक न कहुं ठहराय।
राम नाम बांधै बिना, जित भावै तित जाय॥699॥
कहत सुनत सब दिन गये, उरझि न सुरझा मन्न।
कहैं कबीर चेता नहीं, अजहूं पहला दिन्न॥700॥
मन की घाली हूं गई, मन की घाली जाउं।
संग जो परी कुसंग के, हाटै हाट बिकाउं॥701॥
मन के मते न चालिये, छांड़ि जीव की बानि।
कतवारी के सूत ज्यौं, उलटि अपूठा आनि॥702॥
मन गोरख मन गोविंद, मन ही औघड़ सोय।
जो मन राखै जतन करि, आपै करता होय॥703॥
यह मन हरि चरणे चला, माया-मोह से छूट।
बेहद माहीं घर किया, काल रहा शिर कूट॥704॥
जेती लहर समुद्र की, तेती मन की दौर।
सहजै हीरा नीपजे, जो मन आवै ठौर॥705॥
मन पंछी बिन पंख का, जहां तहां उड़ि जाय।
मन भावे ताको मिले, घट में आन समाय॥706॥
कबीर बैरी सबल है, एक जीव रिपु पांच।
अपने-अपने स्वाद को, बहुत नचावै नाच॥707॥
कबीर लहरि समुद्र की, केतो आवै जांहि।
बलिहारी वा दास की, उलटि समावै मांहि॥708॥
बात बनाई जग ठग्यो, मन परमोधा नांहि।
कहैं कबीर मन लै गया, लख चौरासी मांहि॥709॥

कबीर यह गत अटपटी, चटपट लखी न जाय।
जो मन की खटपट मिटै, अधर भये ठहराय॥710॥

मनुवा तू क्यों बावरा, तेरी सुध क्यों खोय।
मौत आय सिर पर खड़ी, ढलते बेर न होय॥711॥

मनुवां तो पंछी भया, उड़िके चला अकास।
ऊपर ही ते गिर पड़ा, मन माया के पास॥712॥

मनुवा तो फूला फिरै, कहे जो करूं धरम।
कोटि करम सिर पर चढ़े, चेति न देखै मरम॥713॥

मन दाता मन लालची, मन राजा मन रंक।
जो यह मन गुरु सो मिलै, तो गुरु मिले निसंक॥714॥

मन फाटै बायक बुरै, मिटै सगाई साक।
जैसे दूध तिवास को, उलटि हुआ जो आक॥715॥

मन पांचौं के बस पड़ा, मन के बस नहिं पांच।
जित देखूं तित दौं लगी, जित भांगू तित आंच॥716॥

मन के मारे बन गये, बन तजि बस्ती मांहि।
कहैं कबीर क्या कीजिये, यह मन ठहरै नाहिं॥717॥

निहचिन्त होय के गुरु भजै, मन में राखै सांच।
इन पांचौं को बसि करै, ताहि न आवै आंच॥718॥

मन मुरीद संसार है, गुरु मुरीद कोय साध।
जो माने गुरु बचन को, ताका मता अगाध॥719॥

मन ही को परमोधिये, मन ही को उपदेस।
जो यह मन को बसि करै, सीष होय सब देस॥720॥

चिन्ता चित्त बिसारिये, फिर बूझिये नहिं आन।
इन्द्री पसारा मेटिये, सहज मिलै भगवान॥721॥

कोटि करमकर पलक में, या मन विषया स्वाद।
सद्गुरु शब्द न मानहीं, जनम गंवाय बाद॥722॥

कागद केरी नावरी, पानी केरी गंग।
कहैं कबीर कैसे तिरै, पांच कुसंगी संग॥723॥
इन पांचौं से बंधिया, फिर फिर धरै शरीर।
जो यह पांचौं बसि करै, सोई लागै तीर॥724॥
मन पंछी तब लगि उड़ै, विषय वासना मांहि।
ज्ञान बाज की झपट में, जब लगि आवै नांहि॥725॥
मन नहिं मारा करि सका, न मन पांच प्रहारि।
सील सांच सरधा नहीं, अजहुं इन्द्रि उघारि॥726॥
दौड़त दौड़त दौड़िया, जेती मन की दौर।
दौड़ि थके मन थिर भया, वस्तु ठौर की ठौर॥727॥
मन अपना समुझाय ले, आया गाफिल होय।
बिन समुझे उठि जायेगा, फोकट फेरा तोय॥728॥
मन के हारै हार है, मन के जीतै जीत।
कहैं कबीर गुरु पाइये, मन ही के प्रतीत॥729॥
या मारा जग भरमिया, सबको लगी उपाध।
यहि तारन के कारनै, जग में आये साध॥730॥
खान खरच बहु अन्तरा, मन में देखु विचार।
एक खवावै साधु को, एक मिलावै छार॥731॥
मन मते माया तजी, यूं करि निकस बहार।
लागि रहि जानी नहीं, भटकी भयो खुवार॥732॥
कबीर माया जात है, सुनो शब्द निज मोर।
सुखियों के घर साध जन, सूमौं के घर चोर॥733॥
कबीर माया पापिनी, लोभ भुलाया लोग।
पूरी किनहुं न भोगिया, इसका यही बिजोग॥734॥
कबीर माया पापिनी, फंद ले बैठी हाट।
सब जग तो फंदै पड़ा, गया कबीरा काट॥735॥

छाड़ै बिन छूटै नहीं, छोड़न हारा राम।
जीव जतन बहुतरि करै, सरे न एकौ काम॥736॥
माया छोड़न सब कहै, माया छोरि न जाय।
छोरन की जो बात करु, बहुत तमाचा खाय॥737॥
माया सम नहिं मोहिनी, मन समान नहिं चोर।
हरिजन सम नहिं पारखी, कोई न दीसे ओर॥738॥
माया जुगवे कौन गुन, अंत न आवै काज।
सोई नाम जोगावहु, भये परमारथ साज॥739॥
कबीर या संसार की, झूठी माया मोह।
जिहि घर जिता बधावना, तिहि घर तेता दोह॥740॥
माया करक कदीम है, यह भव सागर माहिं।
जंबुक रूपी जीव है, खैंचत ही महि जाहिं॥741॥
आंधी आई प्रेम की, ढही भरम की भीत।
माया टाटी उड़ि गई, लगी नाम सों प्रीत॥742॥
झीनी माया जिन तजी, मोटी गई बिलाय।
ऐसे जन के निकट से, सब दुःख गये हिराय॥743॥
सुकृत लागै साधु की, बादि विमुख की जाय।
कै तो तल गाड़ी रहै, कै कोय औरे खाय॥744॥
साधु ऐसा चाहिए, आई देई चलाय।
दोस न लागै तासु को, शिर की टरै बलाय॥745॥
मीठा सब कोय खात है, विष ह्वै लागै धाय।
नीम न कोई पीवसी, सबै रोग मिट जाय॥746॥
मोटी माया सब तजैं, झीनी तजी न जाय।
पीर पैगम्बर औलिया, झीनी सबको खाय॥747॥
ऊंची डाली प्रेम की, हरिजन बैठा खाय।
नीचे बैठी बाघिनी, गिर पड़े तिहि खाय॥748॥

माया सेती मति मिली, जो सोबरिया देहि।
नारद से मुनिवर गले, क्याहि भरोसा तेहि॥749॥
माया दीपक नर पतंग, भ्रमि भ्रमि माहिं परन्त।
कोई एक गुरु ज्ञानते, उबरे साधु सन्त॥750॥
करक पड़ा मैदान में, कुकुर मिले लख कोट।
दावा कर लड़ि मुए, अन्त चले सब छोड़॥751॥
माया दोय प्रकार की, जो जानै सो खाय।
एक मिलावै राम को, एक नरक ले जाय॥752॥
माया का सुख चार दिन, कंह तूं गहे गंवार।
सपने पायो राज धन, जात न लागे बार॥753॥
कबीर माया संचै संग्रहै, वह दिन जानै नांहि।
सहस बरस की सब करैं, मरैं मुहूरत मांहि॥754॥
कबीर माया सांपिनी, जनता ही को खाय।
ऐसा मिला न गारुड़ी, पकड़ि पिटारे बांय॥755॥
माया छाया एक सी, बिरला जानै कोय।
भगता के पीछे फिरै, सनमुख भाजै सोय॥756॥
माया मन की मोहिनी, सुर नर रहे लुभाय।
इन माया सब खाइया, माया कोय न खाय॥757॥
माया तो ठगनी भई, ठगत फिरै सब देस।
जा ठग ने ठगनी ठगी, ता ठग को आदेस॥758॥
माया माथे सींगड़ा, लम्बे नौ नौ हाथ।
आगे मारै सींगड़ा, पाछै मारै लात॥759॥
गुरु को चेला बिष दे, जो गांठी होय दाम।
पूत पिता को मारसी, ये माया के काम॥760॥
माया दासी सन्त की, साकट की शिर ताज।
सांकट की सिर मानिनी, सन्तों सहेली लाज॥761॥

माया माया सब कहैं, माया लखै न कोय।
जो मन से ना ऊतरे, माया कहिए सोय॥762॥

कबीर माया मोहिनी, मांगी मिलै न हाथ।
मना उतारी जूठ करु, लागी डोलै साथ॥763॥

कबीर माया बेसवा, दोनूं की इक जात।
आंवत को आदर करैं, जात न बूझैं बात॥764॥

माया मोहिनी, जैसी मीठी खांड।
सद्गुरु की किरपा भई, नातर करती भांड॥765॥

माया संख पदुम लौं, भक्ति बिहुन जो होय।
जम लै ग्रासैं सो तेहि, नरक पड़े पुनि सोय॥766॥

कबीर माया मोहिनी, सब जग छाला छानि।
कोइ एक साधु ऊबरा, तोडी कुल की कानि॥767॥

कबीर माया डाकिनी, सब काहू को खाय।
दांत उपारुं पापिनी, सन्तो नियरै जाय॥768॥

भूले थे संसार में, माया के संग आय।
सतगुरु राह बताइया, फेरि मिलै तिहि जाय॥769॥

माया काल की खानि है, धरै त्रिगुण विपरीत।
जहां जाय तहं सुख नहीं, या माया की रीत॥770॥

जग हटवारा स्वाद ठग, माया वेश्या लाय।
राम-राम गाढ़ा गहो, जनि जहु जनम गंवाय॥771॥

कबीर माया मोहिनी, मोहै जान सुजान।
भागै हू छूटे नहीं, भरि भरि मारै बान॥772॥

जिनको सांई रंग दिया, कबहुं न होय कुरंग।
दिन-दिन बानी आगरी, चढ़ै सवाया रंग॥773॥

मैं जानूं हरिसूं मिलूं, मो मन मोटी आस।
हरि बिच डारै अन्तरा, माया बड़ी पिचास॥774॥

माया तरुवर त्रिविधका, शोक दुख संताप।
शीतलता सुपनै नहीं, फल फीका तन ताप॥775॥

माया मुई न मन मुआ, मरि मरि गया शरीर।
आशा तृष्णा ना मुई, यौं कथि कहैं कबीर॥776॥

माया मरि मन मारिया, राख्या अमर शरीर।
आशा तृष्णा मारि के, थिर ह्वै रहैं कबीर॥777॥

मन ते माया ऊपजै, माया तिरगुण रूप।
पांच तत्व के मेल में, बांधे सकल सरूप॥778॥

अष्ट सिद्धि नव निद्धि लौं, सबही मोह की खान।
त्याग मोह की वासना, कहैं कबीर सुजान॥779॥

सुर नर मुनि सब फंसे, मृग त्रिस्ना जग मोह।
मोह रूप संसार है, गिरे मोह निधि जोह॥780॥

अपना तो कोई नहीं, देखा ठोकि बजाय।
अपना अपना क्या करै, मोह भरम लपटाय॥781॥

मोह फंद सब फंदिया, कोय न सकै निवार।
कोई साधु जन पारखी, बिरला तत्व विचार॥782॥

अपना तो कोई नहिं, हम काहू के नांहि।
पार पहूंची नाव जब, मिलि सब बिछुड़े जांहि॥783॥

जहं लगि सब संसार है, मिरग सबन को मोह।
सुर नर नाग पाताल अरु, ऋषि मुनिवर सब जोह॥784॥

जब घट मोह समाइया, सबै भया अंधियार।
निर्मोह ज्ञान विचारि के, साधु उतरे पार॥785॥

काहु जुगति ना जानिया, किहि बिधि बचै सुखेत।
नहिं बंदगी नहिं दीनता, नहिं साधु संग हेत॥786॥

मोह नदी विकराल है, कोई न उतरै पार।
सतगुरु केवट साथ ले, हंस होय जम नार॥787॥

मोह सलिल की धार में, बहि गये गहिर गंभीर।
सूक्ष्म मछली सुरति है, चढ़ती उल्टी नीर॥788॥
कुरुक्षेत्र सब मेदिनी, खेती करै किसान।
मोह मिरग सब चरि गया, आसन रहि खलिहान॥789॥
एक मोह के कारनै, भरत धरी दो देह।
ते नर कैसे छूटिहैं, जिनके बहुत सनेह॥790॥
कामी क्रोधी लालची, इनते भक्ति न होय।
भक्ति करै कोय सूरमा, जाति बरन कुल खोय॥791॥
सहकामी दीपक दसा, सीखै तेल निवास।
कबीर हीरा सन्त जन, सहजै सदा प्रकाश॥792॥
काम काम सब कोय कहै, काम न चीन्है कोय।
जेती मन की कल्पना, काम कहावै सोय॥793॥
काम क्रोध मद लोभ की, जब लग घट में खान।
कबीर क्या मूरख क्या पंडिता, दोनों एक समान॥794॥
बुन्द खिरी नर नारि की, जैसी आतम घात।
अज्ञानी मानै नहीं, येहि बात उत्पात॥795॥
कामी लज्जा ना करै, मांहीं अहलाद।
नींद न मांगै साथरा, भूख न मांगै स्वाद॥796॥
कहता हूं कहि जात हूं, मानै नहीं गंवार।
बैरागी गिरही कहा, कामी वार न पार॥797॥
कामी कुत्ता तीस दिन, अन्तर होय उदास।
कामी नर कुत्ता सदा, छह रितु बारह मास॥798॥
कामी अमी न भावई, विष को लेवै सोध।
कुबुधि न भाजै जीव की, भावै ज्यौं परमोध॥799॥
काम कहर असवार है, सबको मारै धाय।
कोई एक हरिजन ऊबरा, जाके नाम सहाय॥800॥

भग भोगै भग ऊपजै, भगते बचै न कोय।
कहैं कबीर भगते बचै, भक्त कहावै सोय।।801।।
जहां काम तहां नाम नहिं, तहां नाम नहिं काम।
दोनों कबहू ना मिलै, रवि रजनी इक ठाम।।802।।
तन मन लज्जा ना रहे, काम बान उर साल।
एक काम सब वश किए, सुर नर मुनि बेहाल।।803।।
कामी तो निरभय भया, करै न काहूं संक।
इन्द्री केरे बसि पड़ा, भुगते नरक निसंक।।804।।
दीपक सुन्दर देखि करि, जरि जरि मरे पतंग।
बढ़ी लहर जो विषय की, जरत न मोरै अंग।।805।।
भक्ति बिगाड़ी कामिया, इन्द्रिन केरे स्वाद।
हीरा खोया हाथ सों, जनम गंवाय बाद।।806।।
कामी का गुरु कामिनी, लोभी का गुरु दाम।
कबीर का गुरु सन्त है, संतन का गुरु राम।।807।।
बहुत जतन करि कीजिये, सब फल जाय नसाय।
कबीर संचै सूम धन, अन्त चोर लै जाय।।808।।
कबीर औंधी खोपड़ी, कबहूं धापै नांहि।
तीन लोक की सम्पदा, कब आवै घर मांहि।।809।।
जब मन लागा लोभ सों, गया विषय में भोय।
कहैं कबीर विचारि के, केहि प्रकार धन होय।।810।।
सूम थैली अरु श्वान भग, दोनों एक समान।
घालत में सुख ऊपजै, काढ़त निकसै प्रान।।811।।
प्रभुता को सब कोइ भजै, प्रभु को भजै न कोय।
कहैं कबीर प्रभु को भजै, प्रभुता चेरी होय।।812।।
लघुता में प्रभुता बसै, प्रभुता से प्रभु दूर।
कीड़ी सो मिसरी चुगै, हाथी के सिर धूर।।813।।

मान बड़ाई कूकरी, सन्तन खेदी जान।
पांडव जग पावन भया, सुपच बिराजै आन॥814॥

बड़ा बड़ाई ना करै, बड़ा न बोलै बोल।
हीरा मुख से ना कहै, लाख टका है मोल॥815॥

ऊंचे कुल के कारने, भूलि रहा संसार।
तब कुल की क्या लाज है, जब तन होगा छार॥816॥

बड़ी बिपति बड़ाई है, नन्हा करम से दूर।
तारे सब न्यारे रहें, गहै चंद और सूर॥817॥

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर॥818॥

कबीर अपने जीवते, ये दो बांता धोय।
मान बड़ाई कारनै, अछता मूल न खोय॥819॥

मान बड़ाई कूकरी, धर्मराय दरबार।
दीन लकुटिया बाहिरै, सब जग खाया फार॥820॥

मान बड़ाई ऊरमी, ये जग का व्यवहार।
दीन गरीबी बन्दगी, सतगुरु का उपकार॥821॥

मान बड़ाई देखि कर, भक्ति करै संसार।
जब देखै कछु हीनता, अवगुन धरै गंवार॥822॥

बड़ा बड़ाई ना करै, छोटा बहु इतराय।
ज्यौं प्यादा फरजी भया, टेढ़ा टेढ़ा जाय॥823॥

कंचन तजना सहज है, सहज तिरिया का नेह।
मान बड़ाई ईरषा, दुरलभ तजनी येह॥824॥

माया तजी तो क्या भया, मान तजा नहिं जाय।
मान बड़े मुनिवर गले, मान सबन को खाय॥825॥

काला मुख कर मान का, आदर लावो आग।
मान बड़ाई छांड़ि के, रहौ नाम लौ आग॥826॥

बग ध्यानी ज्ञानी घने, अरथी मिले अनेक।
मान रहित कबीर कहैं, सो लाखन में एक॥827॥
हाथी चढ़ि के जो फिरै, ऊपर चंवर ढुराय।
लोग कहैं सुख भोगवै, सीधे दोजख जाय॥828॥
ऊंचा देखि न राचिये, ऊंचा पेड़ खजूर।
पंक्षि न बैठे छांयड़े, फल लागा पै दूर॥829॥
मान बड़ाई जगत में, कूकर की पहिचान।
प्यार किये मुख चाटई, बैर किये तन हान॥830॥
बड़ी बड़ाई ऊंट की, लादे जहं लग सांस।
मुहकम सलिता लादि के, ऊपर चढ़ै परास॥831॥
ऊंचा पानी ना टिकै, नीचै ही ठहराय।
नीचा होय सो भरि पिये, ऊंच पियासा जाय॥832॥
बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जोरे बड़ मति नांहि।
जैसे फूल उजाड़ का, मिथ्या हो झड़ जांहि॥833॥
मान तजा तो क्या भया, मन का मता न जाय।
संत बचन मानै नहीं, ताको हरि न सुहाय॥834॥
मान दिया मन हरषिया, अपमाने तन छीन।
कहैं कबीर तब जानिये, माया में लौ लीन॥835॥
जौन मिला सो गुरु मिला, चेला मिला न कोय।
चेला को चेला मिलै, तब कछु होय तो होय॥836॥
लेने को हरिनाम है, देने को अन्नदान।
तरने को है दीनता, बूड़न को अभिमान॥837॥
ऊंचे कुल में जनमिया, देह धरी अस्थूल।
पार ब्रह्म को ना चढ़ै, वास विहूना फूल॥838॥
कूकस कूटै कन बिना, बिन करनी का ज्ञान।
ज्यौं बन्दूक गोली बिना, भड़क न मारै आन॥839॥

आपा राखि परमोधिये, सुनै ज्ञान अकराथि।
तुस कूटै कन बाहिरी, कछू न आवै हाथि॥840॥
पद जौरै साखी कहै, साधन पड़ि गयी रोस।
काढ़ा जल पीवै नहीं, काढ़ि पीवन की होस॥841॥
कथनी थोथी जगत में, करनी उत्तम सार।
कहैं कबीर करनी भली, उतरै भोजल पार॥842॥
कथनी मीठी खांड सी, करनी विष की लोय।
कथनी तजी करनी करै, विष से अमृत होय॥843॥
पढ़ि पढ़ि के समुझावई, मन नहिं धारै धीर।
रोटी का संसै पड़ा, यौं कह दास कबीर॥844॥
कथनी कांची होय गयी, करनी करी न सार।
स्रोता वक्ता मरि गया, मूरख अनंत अपार॥845॥
कथनी बदनी छाड़ि दे, करनी सों चित लाय।
नर सो जल प्याये बिना, कबहुं प्यास न जाय॥846॥
कथनी कथै तो क्या हुआ, करनी ना ठहराय।
कालबूत का कोट ज्यौं, देखत ही ढहि जाय॥847॥
साखी लाय बनाय के, इत उत अच्छर काटि।
कहैं कबीर कब लगि जिये, जूठी पत्तर चाटि॥848॥
कथनी के सूरे घने, थोथै बांधै तीर।
बिरह बान जिनके लगा, तिनके बिकल सरीर॥849॥
कथनी कथि फूला फिरै, मेरे होयै उचार।
भाव भक्ति समझै नहीं, अंधा मूढ़ गंवार॥850॥
पानी मिलै न आप को, औरन बकसत छीर।
आपन मन निहचल नहीं, और बंधावत धीर॥851॥
करनी गर्व निवारनी, मुक्ति स्वारथी सोय।
कथनी तजि करनी करै, तब मुक्ताहल होय॥852॥

कबीर करनी आपनी, कबहुं न निष्फल जाय।
सात समुद्र आड़ा पड़ै, मिलै अगाड़ी धाय॥853॥
स्त्रोता तो घरहीं नहीं, वक्ता बकै सो बाद।
स्त्रोता वक्ता एक घर, तब कथनी का स्वाद॥854॥
श्रम ही ते सब कुछ बने, बिन श्रम मिले न काहिं।
सीधी अंगुली घी जम्मो, कबहूं निकसै नाहिं॥855॥
जैसी मुख से नीकसे, तैसी चालै नाहिं।
मानुष नहीं वे श्वान गति, बांधे जमपुर जांहि॥856॥
रहनी के मैदान में, कथनी आवै जाय।
कथनी पीसै पीसना, रहनी अमल कमाय॥857॥
करनी बिन कथनी कथै, अज्ञानी दिन रात।
कूकर सम भूकत फिरै, सुनी सुनाई बात॥858॥
जैसी करनी जासु की, तैसी भुगते सोय।
बिन सतगुरु की भक्ति के, जनम जनम दुख होय॥859॥
करनी का रजमा नहीं, कथनी मेरु समान।
कथता बकता मर गया, मूरख मूढ़ अजान॥860॥
कबीर करनी क्या करै, जो गुरु नहीं सहाय।
जिहि जिहि डारी पगु धरै, सों सों निंवनिंव जाय॥861॥
कबीर चोर चोराई टूंबरी, गाड़ै पानी मांहि।
वह गाड़ै तो ऊछलै, करनी छानी नाहिं॥862॥
करनी बिन कथनी कथै, गुरु पद लहै न सोय।
बातों के पकवान से, धीरा नाहीं कोय॥863॥
मारग चलते जो गिरै, ताको नाहिं दोस।
कहैं कबीर बैठा रहै, ता सिर करड़ै कोस॥864॥
काया खेत किसान मन, पाप पुन्न दो बीव।
बोया लूनै आपना, काया कसकै जीव॥865॥

काला मुंह करूं करम का, आदर लावूं आग।
लोभ बड़ाई छांड़ि के, रांचू गुरु के राग।।866।।

कबीर सजड़ै ही जड़ा, झूठा मोह अपार।
अनेक लुहारे पचि मुये, उझड़त नहीं लगार।।867।।

बखत कहो या करम कहो, नसिब कहो निरधार।
सहस नाम हैं करम के, मन ही सिरजनहार।।868।।

दुख लेने जावै नहीं, आवै आचा बूच।
सुख का पहरा होयगा, दुख करेगा कूच।।869।।

तेरा बैरी कोइ नहीं, तेरा बैरी फैल।
अपने फैल मिटाय ले, गली-गली कर सैल।।870।।

कबीर कमाई आपनी, कबहु न निष्फल जाय।
सात समुद्र आड़ा पड़े, मिलै अगाड़ी आय।।871।।

परारब्ध पहिले बना, पीछे बना सरीर।
कबीर अचम्भा है यही, मन नहिं बांधे धीर।।872।।

रे मन भाग्यहि भूल मत, जो आया मन भाग।
सो तेरा टलता नहीं, निश्चय संसै त्याग।।873।।

लिखा मिटै नहीं करम का, गुरु कर भज हरिनाम।
सीधे मारग नित चलै, दया धर्म विसराम।।874।।

कबीर चंदन पर जला, तीतर बैठा मांहि।
हम तो दाझत पंख बिन, तुम दाजत हो काहि।।875।।

चहै अकास पताल जा, फोड़ि जाहु ब्रह्मण्ड।
कहैं कबीर मिटिहै नहीं, देह धरे का दण्ड।।876।।

जहं यह जियरा पगु धरे, बखत बराबर साथ।
जो है लिखा नसीब में, चलै न अविचल बात।।877।।

बाहिर सुख दुख देन को, हुकुम करै मन मांय।
जब उठे मन बखत को, बाहिर रूप धरि आय।।878।।

पाहन लै देवल रचा, मोटी मूरत माहिं।
पिण्ड फूटि परबश रहै, सो लै तारे काहिं॥879॥
कबीर पाहन पूजि के, होन चहत भव पार।
भीजि पानि भेदै नदी, बूड़ै जिन सिर भार॥880॥
अकिल बिहूना आदमी, जानै नहीं गंवार।
जैसे कपि परबस पर्यो, नाचै घर घर द्वार॥881॥
पाहन पानी पूजि के, पचि मूआ संसार।
भेद अलहदा रहि गया, भेदवन्त सो पार॥882॥
पंख होत परबस पर्यो, सूवा के बुधि नाहिं।
अकिल बिहूना आदमी, यों बन्धा जग माहिं॥883॥
अकिल बिहूना सिंह ज्यों, गयों ससा के संग।
अपनी प्रतिमा देखिके, कियो तन को भंग॥884॥
कुबुधी को सूझै नहीं, उठि उठि देवल जाय।
दिल देहरा को खबरि नहीं, पाथर ते कह पाय॥885॥
सिदक सूबरी बाहिरा, कहा हज्ज को जाय।
जिनका दिल साबित नहीं, तिनको कहा खुदाय॥886॥
कबीर सालिगराम का, मोहिं भरोसा नाहिं।
काल कहर की चोट में, बिनसि जाय छिन माहिं॥887॥
पूजा सेवा नेम व्रत, गुड़ियन का सा खेल।
जब लग पिव परसै नहीं, तब लग संसै मेल॥888॥
पाहन पूजै हरि मिलै, तो मैं पूजूं पहार।
ताते तो चक्की भली, पीसि खाय संसार॥889॥
पाहन ही का देहरा, पाहन ही का देव।
पूजन हारा आंधरा, क्यों करि मानै सेव॥890॥
आतम दृष्टि जानै नहीं, न्हावै प्रातः काल।
लोकलाज लिया रहे, लागा भरम कपाल॥891॥

कबीर जेता आतमा, तेता सालिगराम।
बोलनहारा पूजिये, नहिं पाहन सो काम॥892॥
अकिल बिहूना आंधरा, गज फन्दे पड़ो आय।
ऐसे सब लग बंधिया, काहि कहूं समझाय॥893॥
लिखा पढ़ी में सब पड़े, यह गुन तजै न कोय।
सबै पड़े भ्रम जाल में, डारा यह जिय खोय॥894॥
तुरक मसीत देहर हिन्दू, आप आप को धाय।
अलख पुरुष घट भीतरे, ताका पार न पाय॥895॥
जप तप दीखै थोथरा, तीरथ ब्रत विश्वास।
सूवा सेमल सेइया, यों जग चला निरास॥896॥
कबीर बिना वसीले चाकरी, बिना बुद्धि की देह।
बिना ज्ञान का जोगना, फिरै लगाये खेह॥897॥
मुल्ला चढ़ि किलकारिया, अल्लाह न बहिरा होय।
जेहि कारन तूं बांग दे, दिल ही अन्दर सोय॥898॥
चिउंटी चावल ले चली, बिच में मिल गयी दाल।
कहैं कबीर दो न मिलै, इक ले दूजी डाल॥899॥
आगा पीछा दिल करै, सहजै मिलै न आय।
सो बासी जमलोक का, बांधा जमपुर जाय॥900॥
कांकर पाथर जोरि के, मसजिद लई चुनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, बहिरा हुआ खुदाय॥901॥
पाहन केरी पूतरी, करि पूजै संसार।
याहि भरोसे मत रहो, बूड़ो काली धार॥902॥
पांच तत्व का पूतरा, रज बीरज की बूंद।
एकै घाटी नीसरा, ब्राह्मन क्षत्री सूद॥903॥
मनही में फूला फिरै, करता हूं मैं धर्म।
कोटि कर्म सिर पर चढ़े, चेति न देखे मर्म॥904॥

पढ़ा सुना सीखा सभी, मिटी न संसै भूल।
कहैं कबीर कासों कहूं, यह सब दुख का मूल॥905॥
मरती बिरियां दान दे, जीवन बड़ा कठोर।
कहैं कबीर क्यों पाइये, खांड़ा का व चोर॥906॥
पाहन को क्या पूजिये, जो नहिं देय जवाब।
अंधा नर आशा मुखी, यों ही खोवै आब॥907॥
तेरे हिय में राम हैं, ताहि न देखा जाय।
ताको तो तब देखिये, दिल की दुविधा जाय॥908॥
न्हाये धोये क्या भया, जो मन मैल न जाय।
मीन सदा जल में रहै, धोये बास न जाय॥909॥
दुविधा जाके मन बसै, दयावन्त जिय नाहिं।
कबीर त्यागो ताहि को, भूलि देहि जनि बाहिं॥910॥
सब बन तो तुलसी भई, परबत सालिगराम।
सब नदियां गंगा भई, जाना आतम राम॥911॥
निर्मल गुरु के ज्ञान सो, निरमल साधु भाय।
कोइला होय न ऊजला, सौ मन साबुन लाय॥912॥
पूजै सालिगराम को, मन की भ्रान्ति न जाय।
शीतलता सपने नहीं, दिन दिन अधिक लाय॥913॥
दाता दाता चलि गये, रहि गये मक्खी चूस।
दान मान समुझे नहीं, लड़ने को मजबूत॥914॥
कबीर सोई पीर है, जो जानै पर पीर।
जो पर पीर न जानई, सो काफिर बेपीर॥915॥
दया दया सब कोइ कहै, मर्म न जानै कोय।
जाति जीव जानै नहीं, दया कहां से होय॥916॥
जहां दया वहां धर्म है, जहां लोभ तहं पाप।
जहां क्रोध वहां काल है, जहां क्षमा वहां आप॥917॥

दया भाव हिरदै नहीं, ज्ञान कथै बेहद।
ते नर नरकहि जाहिंगे, सुनि सुनि साखी सबद॥918॥

आचारी सब जग मिला, बीचारी नहिं कोय।
जाके हिरदै गुरु नहीं, जिया अकारथ सोय॥919॥

कुंजर मुख से कन गिरा, खुटै न वाको आहार।
कीड़ी कन लेकर चली, पोषन दे परिवार॥920॥

भावै जाओ बादरी, भावै जावहु गया।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, सब ते बड़ी दया॥921॥

दया धर्म का मूल है, पाप मूल संताप।
जहां क्षमा तहां धर्म है, जहां दया तहां आप॥922॥

दया का लच्छन भक्ति है, भक्ति से होवै ध्यान।
ध्यान से मिलता ज्ञान है, यह सिद्धान्त उरान॥923॥

दीन गरीबी दीन को, दुंदुर को अभिमान।
दुंदुर तो विष से भरा, दीन गरीबी जान॥924॥

कबीर दीन गरीबी बंदगी, सबसों आदर भाव।
कहैं कबीर सोई बड़ा, जामें बड़ा सुभाव॥925॥

दर्शन को तो साधु हैं, सुमिरन को गुरु नाम।
तरने को आधीनता, डूबन को अभिमान॥926॥

कबीर सबते हम बुरे, हमते भल सब कोय।
जिन ऐसा करि बूझिया, मीत हमारा सोय॥927॥

कबीर नवै सो आपको, पर को नवै न कोय।
घालि तराजू तोलिये, नवै सो भारी होय॥928॥

नहिं दीन नहिं दीनता, संत नहिं मिहमान।
ता घर जम डेरा किया, जीवत भया मसान॥929॥

नीचै नीचै सब तिरै, संत चरण लौ लीन।
जातिहि के अभिमान ते, बूड़े सकल कुलीन॥930॥

इक बानी सो दीनता, सब कछु गुरु दरबार।
यही भेंट गुरु देव की, संतन कियो विचार॥931॥
दीन लखै मुख सबन को, दीनहि लखै न कोय।
भली बिचारी दीनता, नरहु देवता होय॥932॥
बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोज्यो आपना, मुझसा बुरा न कोय॥933॥
मिसरी बिखरी रेत में, हस्ती चुनी न जाय।
कीड़ी ह्वै करि सब चुनै, तब साहिब कूं पाय॥934॥
दीन गरीबी बंदगी, साधुन सों आधीन।
ताके संग मैं यौं रहूं, ज्यौं पानी संग मीन॥935॥
आपा मेटै पिव मिलै, पिव में रहा समाय।
अकथ कहानी प्रेम की, कहै तो को पतियाय॥936॥
कंचन केवल हरि भजन, दूजा कांच कथीर।
झूठा आल जंजाल तजि, पकड़ा सांच कबीर॥937॥
सांचै कोइ न पतीजै, झूठै जग पतियाय।
गली गली गोरस फिरै, मदिरा बैठ बिकाय॥938॥
सांच कहै तो मारि हैं, यह तुरकानी जोर।
बात कहूं सतलोक की, कर गहि पकड़ै चोर॥939॥
जिन नर सांच पिछानिया, करता केवल सार।
सो प्रानी काहे चलै, झूठै कुल की लार॥940॥
तेरे अन्दर सांच जो, बाहर नाहिं जनाव।
जानन हारा जानि है, अन्तर गति का भाव॥941॥
अब तो हम कंचन भये, तब हम होते कांच।
सतगुरु की किरपा भई, दिल अपने का सांच॥942॥
सांचै कोइ न पतीजै, झूठै जग पतियाय।
पांच टका की धोपटी, सात टके बिक जाय॥943॥

सांच हुआ तो क्या हुआ, नाम न सांचा जान।
सांचा होय सांचा मिलै, सांचै मांहि समान।।944।।

कबीर झूठ न बोलिये, जब लग पार बसाय।
न जानो क्या होयगा, पल के चौथे भाय।।945।।

कबीर लज्जा लोक की, बोलै नाहिं सांच।
जानि बूझि कंचन तजै, क्यों तू पकड़े कांच।।946।।

सांच कहूं तो मारि हैं, झूठै जग पतियाय।
यह जग काली कूतरी, जो छेड़ै तो खाय।।947।।

सांचे को सांचा मिलै, अधिक बढ़ै सनेह।
झूठे को सांचा मिलै, तड़ दे टूटे नेह।।948।।

झूठ बात नहिं बोलिये, जब लग पार बसाय।
अहो कबीरा सांच गहु, आवागवन नसाय।।949।।

सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हृदय सांच है, ताके हृदय आप।।950।।

निन्दक दूर न कीजिये, कीजै आदर मान।
निर्मल तन मन सब करै, बके आन ही आन।।951।।

निन्दक तो है नाक बिन, निसदिन विष्ठा खाय।
गुन छाड़ै अवगुन गहै, तिसका यही सुभाय।।952।।

अड़सठ तीरथ निन्दक न्हाई, देह पलोसे मैल न जाई।
छप्पन कोटि धरती फिरि आवै, तो भी निन्दक नरकहिं जावै।। 953।।

सातों सागर मैं फिरा, जम्बू दीप दै पीठ।
पर निन्दा नाहीं करे, सो कोइ बिरला दीठ।।954।।

माखी गहै कुवास को, फूल वास नहिं लेयं।
मधुमाखी हैं साधु जन, पुष्प बास चित देयं।।955।।

कंचन को तजबो सहल, सहल त्रिया को नेह।
निन्दा केरो त्यागबो, बड़ा कठिन है येह।।956।।

जो कोई निन्दै साधु को, संकट आवै सोय।
नरक जाये जन्मै मरै, मुक्ति कबहुं नहिं होय।।957।।
आपन को न सराहिये, और न कहिये रंक।
क्या जानो केहि रुखतर, कूरा रोय करंक।।958।।
दोष पराया देखि के, चले हसन्त हसन्त।
अपने चित्त न आवई, जिनको आदि न अन्त।।959।।
आपन को न सराहिये, पर निन्दिये न कोय।
चढ़ना लम्बा धौहरा, ना जाने क्या होय।।960।।
निन्दक मेरा जनि मरो, जीवो आदि जुगादि।
कबीर सतगुरु पाइये, निन्दक के परसादि।।961।।
कबीर निन्दक मरि गया, अब क्या कहिये जाय।
ऐसा कोई ना मिला, बीड़ा लेय उठाय।।962।।
निन्दक एकहु मति मिलै, पापी मिलै हजार।
इक निन्दक के शीश पर, लाख पाप का भार।।963।।
निन्दक से कुत्ता भला, हट कर माड़ै रार।
कुत्ते से क्रोधी बुरा, गुरु दिलावै गार।।964।।
निन्दक तो है नाक बिन, सोहै नकटों माहिं।
साधू जन गुरु भक्त जो, तिनमें सोहै नाहिं।।965।।
काहू को नहिं निन्दिये, चाहै जैसा होय।
फिर फिर ताको बन्दिये, साधु लच्छ है सोय।।966।।
जौ तू सेवक गुरुन का, निन्दा की तज बान।
निन्दक नेरे आय जब, कर आदर सनमान।।967।।
तिनका कबहुं न निन्दिये, पांव तले जो होय।
कबहूं उड़ि आंखों परै, पीर घनेरी होय।।968।।
निन्दक नियरे राखिये, आंगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निरमल करे सुभाय।।969।।

दीप कू झोला पवन है, नर को झोला नारि।
ज्ञानी झोला गर्व है, कहैं कबीर पुकारि॥970॥

अभिमानी कुंजर भये, निज सिर लीन्हा भार।
जम द्वारे जम कूटहीं, लोहा घड़ै लुहार॥971॥

अहं अगनि हिरदै जरै, गुरु सों चाहै मान।
तिनको जम न्यौता दिया, हो हमरे मिहमान॥972॥

मद अभिमान न कीजिये, कहैं कबीर समुझाय।
जा सिर अहं जु संचरे, पड़ै चौरासी जाय॥973॥

कबीर गर्व न कीजिये, रंक न हंसिये कोय।
अजहूं नाव समुद्र में, ना जानौं क्या होय॥974॥

जहां आपा तहां आपदा, जहां संसै तहां सोग।
कहैं कबीर कैसे मिटै, चारौं दीरघ रोग॥975॥

आपा सबही जात है, किया कराया सोय।
आपा तजि हरि को भजै, लाखन मध्ये होय॥976॥

कोटि करम लागे रहै, एक क्रोध की लार।
किया कराया सब गया, जब आया हंकार॥977॥

गार अंगार क्रोध झल, निन्दा धूवां होय।
इन तीनों को परिहरै, साधु कहावै सोय॥978॥

क्रोध अगनि घर घर बढ़ी, जलै सकल संसार।
दीन लीन निज भक्त जो, तिनके निकट उबार॥979॥

यह जग कोठी काठ की, चहुंदिस लागी आग।
भीतर रहै सो जलि मुये, साधु उबरे भाग॥980॥

जगत मांहि धोखा घना, अहं क्रोध अरु काल।
पौरि पहुंचा मारिये, ऐसा जम का जाल॥981॥

दसौं दिसा में क्रोध की, उठी अपरबल आग।
सीतल संगत साध की, तहां उबरिये भाग॥982॥

आप स्वारथी मेदिनी, भक्ति स्वारथी दास।
कबीर जन परमार्थी, डारी तन की आस॥983॥

प्रीत रीत सब अर्थ की, परमारथ की नाहिं।
कहैं कबीर परमारथी, बिरला कोई कलि माहिं॥984॥

परमारथ पाको रतन, कबहुं न दीजै पीठ।
स्वारथ सेमल फूल है, कली अपूठी पीठ॥985॥

सुख के संगी स्वारथी, दुख में रहते दूर।
कहैं कबीर परमारथी, दुख सुख सदा हजूर॥986॥

जो कोय करे सो स्वारथी, अरस परस गुन देत।
बिन किया करै सो सूरमा, परमारथ के हेत॥987॥

स्वारथ सूका लाकड़ा, छांह बिहूना सूल।
पीपल परमारथ भजो, सुख सागर को मूल॥988॥

मरूं पर मांगू नहीं, अपने तन के काज।
परमारथ के कारनै, मोहि न आवै लाज॥989॥

मांगन मरण समान है, तोहि दई मैं सीख।
कहैं कबीर समुझाय के, मति कोई मांगै भीख॥990॥

अनमांगा उत्तम कहा, मध्यम मांगि जो लेय।
कहैं कबीर निकृष्टि सो, पर घर धरना देय॥991॥

सहज मिलै सो दूध है, मांगि मिलै सो पानि।
कहैं कबीर वह रक्त है, जामें ऐंचातानि॥992॥

उदर समाता मांगि ले, ताको नाहिं दोष।
कहैं कबीर अधिका गहै, ताकी गति न मोष॥993॥

आब गया आदर गया, नैनन गया सनेह।
यह तीनों तबही गये, जबहिं कहा कछु देह॥994॥

उदर समाता अन्न ले, तनहि समाता चीर।
अधिकहिं संग्रह ना करै, तिसका नाम फकीर॥995॥

मांगन गये सो मर रहे, मरै जु मांगन जांहि।
तिनतैं पहले वे मरे, होत करत हैं नाहिं॥996॥

अजहूं तेरा सब मिटै, जो मानै गुरु सीख।
जब लग तू घर में रहे, मति कहुं मांगे भीख॥997॥

पतिव्रता कै एक है, व्यविचारिनके दोय।
पतिव्रता व्यभिचारिणी, कहु क्यों मेला होय॥998॥

पतिव्रता को सुख घना, जाकै पति है एक।
मन मैली व्यभिचारिणी, ताके खसम अनेक॥999॥

पतिव्रता मैली भली, गलै काचकी पोत।
सब सखियन में यो दिखे, ज्यों सूरज की जोत॥1000॥

पतिव्रता मैली भली, काली कुचल कुरूप।
पतिव्रता के रूप पर, बारों कोटि स्वरूप॥1001॥

पतिव्रता तब जानिये, रती न खंडै नैन।
अंतर तो सूची रहै, बोलै मीठा बैन॥1002॥

पतिव्रता पति को भजै, पति भजि धरै विश्वास।
आन दिशा चितवै नहीं, सदा पीवकी आस॥1003॥

पतिव्रता ऐसे रहै, जैसे चोली पान।
जब सुख देखे पीवका, चित्त न आवै आन॥1004॥

पतिव्रता व्यभिचारिणी, एक मंदिर में बास।
वह रंग राती पीवकै, वह घर घर फिरै उदास॥1005॥

हरि न रटा तौ क्या हुआ, जो अन्तर है हेत।
पतिव्रता पतिकों भजै, मुखहिं नाम नहिं लेत॥1006॥

सुरति समानी नाम में, नाम किया परकास।
पतिव्रता पतिकों मिली, पलक न छांड़ै पास॥1007॥

सांई मेरा सुलछना, मैं पतिव्रता नार।
देहु दीदार दया करौ, अपने निज भरतार॥1008॥

प्रीति रीति तुझ सों मेरे, बहुगुनियाला कन्त।
जो हंसि बोलूं और सूं, तो नील रंगाऊं दंत॥1009॥
मोचित पलहु न बीसरूं, तुम परदेशहिं जाय।
यह अंग और न भेलसी, जदितदि तुम मिलि आय॥1010॥
साईं मेरा एक तू, और न दूजा कोय।
दूजा साईं जो करूं, जो कलि दूजा होय॥1011॥
बार बार क्या आखिये, मेरे मनकी सोय।
कलि तो ऊखल होयगी, साईं और न होय॥1012॥
एकै साधे सब सधै, सब साधै यक जाय।
जौ तू सींचै मूल कों, फूलै फलै अघाय॥1013॥
सब आये इस एक में, डार पात फल फूल।
कबिरा पीछै क्या रहा, गहि पकरा निजमूल॥1014॥
एक राम को जानि कै, दूजा देइ बहाय।
तीरथ व्रत जप तप नहीं, आतम तत्त्व समाय॥1015॥
मैं अबला पिव पिव करूं, निगुर्ण मेरा पीव।
शून्य सनेही राम बिन, और न देखूं जीव॥1016॥
घर परमेश्वर पाहुना, सुनो सनेही दास।
षट्रस भोजन भक्ति करि, कबहुं छांड़ै पास॥1017॥
भोरै भूली खसमके, कबहुं न किया विचार।
सतगुरु साहिब बताइया, पूरबला भरतार॥1018॥
कबिरा भेरै बैठिकै, सबसे कहूं पुकारि।
धरा धरै सो धर कुटी, अधर धरै सो नारि॥1019॥
धरिया कूं धीजूं नहीं, गहूं अधर की बाहिं।
धरिया अधर पहिचानियां, तौ कछु धरावहि नाहिं॥1020॥
कबिरा सीप समुद्र की, रटै पियास पियास।
सकल बूंद कों ना गिनै, स्वाति बूंद की आस॥1021॥

कबिरा सीप समुद्र की, खारा जल नहि लेय।
पानी पीवै स्वातिका, शोभा सागर देय।।1022।।
ऊंची जाति पपीहरा, नवै न नीचा नीर।
कै जांचै सुरपतिहिं को, कै दुख सहै शरीर।।1023।।
परा पपिहरा सुरसरी, लगा बधिकका बान।
मुख मूदै श्रुति गगन में, यों हि निकसि गये प्रान।।1024।।
पपिहाका प्रण देखता, धीरज रहै न रंच।
मरती बेर जल में परा, तऊ न बोरै चंच।।1025।।
पपिहा प्रण कबहूं न तजै, तजै तो तन बेकाज।
तन छूटै तो कछु नहीं, प्रण छूटै तो लाज।।1026।।
चातक सुतहि पढ़ावई, आन नीर मति लेय।
मम कुल येहि स्वभाव है, स्वाति बूंद चित्त देय।।1027।।
चातक चित्तहि चुबि गया, सुत सपूत की बात।
आन नीर परसै नहीं, सुनौ तात यह बात।।1028।।
सुख के माथै सिल परौ, हरि हिरदा सों जाय।
बलिहारी वा दुःख की, पल पल राम कहाय।।1029।।
मैं सेवक समरत्थ का, कबहुं न होय अकाज।
पतिबरता नंगी रहै, बाही पति की लाज।।1030।।
मैं सेवक समरत्थ का, कोई पूरिबले भाग।
सूती जागी सुन्दरी, सांई दिया सुहाग।।1031।।
पतिव्रता कही एक तू, और न दूजा कोय।
अष्ट पहर निरखत रहै, सोही सुहागिनि होय।।1032।।
पतिव्रता पतिकों भजै, और न अन्य सुहाय।
सिंह बचा जो लंघना, तौ भी घास न खाय।।1033।।
कबिरा कलियुग आयकै, कीया बहुत जो मीत।
जिन दिल बांधा एक से, ते सुख सोवे निचिंत।।1034।।

गुरु मरजाद न भक्तिपन, नहिं पियका अधिकार।
कहै कबीर व्यभिचारिणी, आठ पहर भरतार।।1035।।
व्यभिचारिणि व्यभिचारि में, आठ पहर हुशियार।
कहै कबीर पतिव्रत बिन, क्यों रीझे करतार।।1036।।
व्यभिचारिणि के बस नहीं, अपनो तनमन सोय।
कहैं कबीर पतिव्रत बिन, नारी गई बिगोय।।1037।।
नारि कहावै पीवकी, रहै और संग सोय।
जार सदा मन में बसै, खसम खुशी क्यों होय।।1038।।
सेज बिछावै सुन्दरी, अन्तर परदा होय।
तन सौंपे मन दै नहीं, सदा सुहागिन सोय।।1039।।
कबिरा मन दीया नहीं, तन करि डारया जेर।
अन्तर्यामी लखि गया, बात कहनका फेर।।1040।।
राम राम रटिबौ करै, निस दिन साधन संग।
कहा धों कौन कुफेरते, नैना लागा रंग।।1041।।
मन दीया कहिं औरहीं, तन साधन के संग।
कहै कबीर कोरी गजी, कैसे लागै रंग।।1042।।
कबिरा पंथ निहारता, आन परी है सांझ।
जन जनको मन राखता, वेश्या रह गई बांझ।।1043।।
सौ बरसां भक्ति करै, एक दिन पूजै आनि।
सौ अपराधी आत्मा, परै चौरासी खानि।।1044।।
राम नाम को छांडि कै, करै आन को जाप।
ताके मुहडे दीजिये, नौसादर को बाप।।1045।।
राम नाम को छांड़ि कै, राति जगावन जाय।
सांपिनि है्व कर औतरे, अपना जाया खाय।।1046।।
आन भजै सो आंधरा, राम भजै सो साध।
तत्त्व भजै सो वैष्णव, तिन का मता अगाध।।1047।।

राति जगावैं रांडिया, गावैं विषियां गीत।
मारै लौंदा लापसी, राम न आवै चीत॥1048॥

करै सुहाली लापसी, लाय आन की जात।
ज्वारा हंसै मलकता, आया मेरी घात॥1049॥

कामी तरै क्रोधी तरै लोभी तरै अनंत।
आन उपासी कृतघ्नी, तिरै न राम कहंत॥1050॥

काज कनागत कारटा, आन देव को खाय।
कहै कबीर समुझै नहीं, बांधा यमपुर जाय॥1051॥

देवी देव मानैं सबै, अलख न मानैं कोय।
जा अलखेका सब किया, तासों बेमुख होय॥1052॥

देवी देव ठाढ़े भए, हमकों ठौर बताय।
जो मुझ सों बेमूख है, तिन कों लूटो खाय॥1053॥

जो आवै तो जाय नहिं, जाय तो कहां समाय।
अकथ कहानी प्रेम की, बूझे ही बूझी जाय॥1054॥

नाव न जानै गांव का, बिन जाने कित जांव।
चलता चलता युग भया, पाव कोस पर गांव॥1055॥

सतगुरु दीन दयाल हैं, दया करी मोहिं आय।
कोटि जनम का पंथ था, पल में पहुंचा जाय॥1056॥

अगम पंथ मन स्थिर रहै, बुद्धि करै प्रवेश।
तन मन धन सब छांड़ि कै, तब पहुंचै वा देश॥1057॥

अगम हता सो सुगम किया, सो गुरु दिया बताय।
कोटि कल्प का पंथ था, पल में पहुंचा जाय॥1058॥

उततें सतगुरु आइया, जाकी बुद्धि है धीर।
भवसागर के जीव को, खेइ लगावै तीर॥1059॥

चलूं चलूं सब कोई कहै, पहुंचे बिरला कोय।
एक कनक अरु कामिनी, दुर्लभ घाटी दोय॥1060॥

जहां काल की गम नहीं, मुआ न सुनिये कोय।
कहै कमाली विप्र सो, तहां होय तो होय॥1061॥
जहां न चीटी चढि सकै, राई ना ठहराय।
मनुवा तहं लै राखिया, तेही पहुंचे जाय॥1062॥
सुर नर थाके मुनिजना, थाके विष्णु महेश।
तहां कबीरा चढ़ि गया, सतगुरु के उपदेश॥1063॥
कबिरा हरि हथियार कर, कूरा गली निवारि।
जो जो पंथा चालना, सों सो पंथ संभारि॥1064॥
वह मारग कितकों गया, मारग पहुंचे साद।
मैं तो दोऊ गहि रहा, लोभ बड़ाई बाद॥1065॥
अगमहुतें अगम है, अपरम पार अपार।
तहं मन धीरज क्यों धरै, पंथ खरा निरधार॥1066॥
बिन पावन की राह है, बिन बस्ती का देश।
बिना पिण्ड का पुरुष है, कहै कबीर संदेश॥1067॥
घाटहिं पानी सब भरै, औघट भरै न कोय।
औघट घाट कबीर का, भरे सो निर्मल होय॥1068॥
जहां चतुर की गम नहीं, तहां मूरख किमि जाय।
वाह बिधाता नाथ है, काग कपूरहिं खाय॥1069॥
चलतां चलतां पग थकै, निपट करारी कोस।
बिना दयाल झलका परै, काको दीजै दोस॥1070॥
बाट बिचारी क्या करै, पंथि न चलै सुधारि।
राह आपनी छांडिकै, चलै उजारि उजारि॥1071॥
कहांते तुम जो आइया, कौन तुम्हारा ठाम।
कौन तुम्हारी जाति है, कौन पुरुष को नाम॥1072॥
अमर लोकते आइया, सुख के सागर ठांम।
जाति हमारी अजाति है, अमर पुरुष को नाम॥1073॥

कौन तुम्हारी जाति है, कौन तुम्हारा नाम।
कौन तुम्हारा इष्ट है, कौन तुम्हारा गांव।।1074।।
जाति हमारी आतमा, प्रान हमारा नाम।
अलख हमारा इष्ट है, गगन हमारा ग्राम।।1075।।
कहांते जीवहिं आइया, कहवां जाय समाय।
कौन डोरि धरि संचरै, मोहिं कहो समुझाय।।1076।।
सरगुनते जीव आइया, निर्गुन जाय समाय।
सुरति डोरि धरि संचरै, सतगुरु कहै समुझाय।।1077।।
कौन सुरति ले आवई, कौन सुरति ले जाय।
कौन सुरति है अस्थिरै, सो गुरु देहु बताय।।1078।।
वास सुरति धरि आवई, शब्द सुरति धरि जाय।
परिचय सुरति है अस्थिरे, सो गुरु दई बताय।।1079।।
ना वहां आवागमन था, नहिं धरती आकास।
कबिरा जन कहवां हते, तब था कोई न पास।।1080।।
नाहीं आवा गमन था, नहिं धरती अकास।
हतो कबीरा राम जन, साहब पास खबास।।1081।।
पहुंचेंगे तब कहेंगे, वही देश की सीच।
अबहिं कहां तिगड़िये, बेड़ी पायन बीच।।1082।।
सूक्ष्म सुरति का मरम है, जीव न जानत जाल।
कहै कबीरा दूरि करि, आतम आदि ही काल।1083।।
अंत:करण मन मही, मनही मनोरथ मांहि।
उपजत उपजत जानिये, बिनशत जानै नांहि।।1084।।
आशा एक जो राम की, दूजी आश निवार।
दूजी आशा मारसी, ज्यों चौपर की सार।।1085।।
आशा एकहि राम की, युग युग पुरवैं आस।
ज्यां गंडल कोरो रहै, बसै जो चंदन पास।।1086।।

आसा बेली कर्म बन, गरजै मनके साथ।
तृष्णा फूल चमकना, फल करता के हाथ॥1087॥
कबीर आसा तृष्णाही नदी, तहां न मन ठहराय।
इन दोनों को लंधि करि, चौड़े बैठे जाय॥1088॥
चौड़े बैठे जाय के, नांव धरा रनजीति।
साहब न्यारा देखियां, अंतर्गतिकी प्रीति॥1089॥
आसा तर्क सवादियां नैनै गये सुजान।
घने पखेरू मरिया, जाजरी जोरि कमान॥1090॥
कबिरा जोगी जगत गुरु, तजै जगत की आस।
देखा चाहै जगत कौं, जगत गुरु को दास॥1091॥
योगी होय जग जीतता, बहिरत है संसार।
एक अंदेशा रहि गया, पीछै परा अहार॥1092॥
बहुत पसारा जनि करै, कर थोरे की आस।
बहुत पसारा जिन किया, तेई गये निरास॥1093॥
जो तू चाहै मुझहिं को, मन कछू राखै आस।
मुझहि सरीखा ह्वै रहो, सब कुछ तेरे पास॥1094॥
करी बांहुबल आपनी, छांड़ि बिरानी आस।
जाके आंगन नदी बहै, सो क्यों मरै पियास॥1095॥
आसन मारै कहा भयो, मरी न मनकी आस।
तेली केरे बैल ज्यों, धरही कोस पचास॥1096॥
गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूं पांय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दियो बताय॥1097॥
गुरु नारायन रूप है, गुरु ज्ञान को घाट।
सतगुरु बचन प्रताप सों, मन के मिटे उचाट॥1098॥
जैसी प्रीति कुटुंब से, तैसी गुरु सों होय।
कहैं कबीर ता दास का, पला न पकड़ै कोय॥1099॥

गुरु समान दाता नहीं, याचक शिष्य समान।
तीन लोक की संपदा, सो गुरु दीन्हीं दान॥1100॥

गुरु को मानुष जानते, ते नर कहिए अन्ध।
होय दुखी संसार में, आगे जम का फन्द॥1101॥

गुरु पारस को अन्तरो, जानत हैं सब संत।
वह लोहा कंचन करे, ये करि लेय महंत॥1102॥

गुरु की आज्ञा आवई, गुरु की आज्ञा जाय।
कहैं कबीर सो संत है, आवागमन नशाय॥1103॥

गुरु महिमा गावत सदा, मन राखे अति मोद।
सो भव फिर आवै नहीं, बैठे प्रभु की गोद॥1104॥

सुनिये सन्तों साधु मिलि, कहहिं कबीर बुझाय।
जेहि विधि गुरु सों प्रीति ह्वै, कीजै सोइ उपाय॥1105॥

गुरु गोविन्द करि जानिये, रहिये शब्द समाय।
मिलै तौ दण्डवत बंदगी, नहिं पल पल ध्यान लगाय॥1106॥

गुरु सों प्रीति निबाहिये, जेहि तत निबहै संत।
प्रेम बिना ढिग दूर है, प्रेम निकट गुरु कंत॥1107॥

तन मन ताको दीजिए, जाको विषया नाहिं।
आपा सब ही डारि के, राखै साहिब माहिं॥1108॥

गुरु शरणागत छाड़ि के, करै भरोसा और।
सुख सम्पति को कह चली, नहीं नरक में ठौर॥1109॥

कबीर ते नर अंध हैं, गुरु को कहते और।
हरि रुठे गुरु ठौर है, गुरु रुठे नहिं ठौर॥1110॥

गुरु बिन ज्ञान न उपजै, गुरु बिन मिलै न मोष।
गुरु बिन लखै न सत्य को, गुरु बिन मिटै न दोष॥1111॥

कुमति कीच चेला भरा, गुरु ज्ञान जल होय।
जनम जनम का मोरचा, पल में डारे धोय॥1112॥

गुरु मूरति गति चन्द्रमा, सेवक नैन चकोर।
आठ पहर निरखत रहे, गुरु मूरति की ओर।।1113।।
कहैं कबीर तजि भरम को, नन्हा ह्वै कर पीव।
तजि अहं गुरु चरण गहु, जमसों बाचै जीव।।1114।।
गुरु सों ज्ञान जो लीजिए, सीस दीजिए दान।
बहुतक भोंदू बहि गये, राखि जीव अभिमान।।1115।।
गुरु गोविन्द दोउ एक हैं, दूजा सब आकार।
आपा मेटैं हरि भजैं, तब पावैं दीदार।।1116।।
जल परमानै माछली, कुल परमानै सुद्धि।
जाको जैसा गुरु मिला, ताको तैसी बुद्धि।।1117।।
अबुध सुबुध सुत मातु पितु, सबहिं करै प्रतिपाल।
अपनी ओर निबाहिये, सिख सुत गहि निज चाल।।1118।।
पंडित पढ़ि गुनि पचि मुये, गुरु बिन मिले न ज्ञान।
ज्ञान बिना नहिं मुक्ति है, सत्त सब्द परमान।।1119।।
गुरु को कीजै दण्डवत, कोटि कोटि परनाम।
कीट न जाने भृंग को, गुरु कर ले आप समान।।1120।।
ज्ञान समागम प्रेम सुख, दया भक्ति विश्वास।
गुरु सेवा ते पाइये, सद्गुरु चरण निवास।।1121।।
मूल ध्यान गुरु रूप है, मूल पूजा गुरु पांव।
मूल नाम गुरु वचन है, मूल सत्य सतभाव।।1122।।
लच्छ कोस जो गुरु बसै, दीजै सुरति पठाय।
शब्द तुरी असवार ह्वै, छिन आवै पल जाय।।1123।।
सब धरती कागद करूं, लेखनी सब बनराय।
सात समुद्र की मसि करूं, गुरु गुण लिखा न जाय।।1124।।
गुरु मूरति आगे खड़ी, दुतिया भेद कछु नाहिं।
उन्हीं कूं परनाम करि, सकल तिमिर मिटि जाहिं।।1125।।

जो गुरु पूरा होय तो, शीषहि लेय निबाहि।
शीष भाव सुत जानिये, सुत ते श्रेष्ठ शिष आहि॥1126॥
गुरु को सिर पर राखिये, चलिये आज्ञा माहिं।
कहैं कबीर ता दास को, तीन लोक भय नाहिं॥1127॥
कोटिन चन्दा उगहीं, सूरज कोटि हजार।
तीमिर तो नाशै नहीं, बिन गुरु घोर अंधियार॥1128॥
लौ लागी विष भागिया, कालख डारी धोय।
कहैं कबीर गुरु साबुन सों, कोइ इक ऊजल होय॥1129॥
सचुपाया सुख ऊपजा, दिल दरिया भरपूर।
सकल पाप सहजे गया, सतगुरु मिले हजूर॥1130॥
चारि खानि में भरमता, कबहु न लगता पार।
सो फेरा सब मिटि गया, सतगुरु के उपकार॥1131॥
जग में युक्ति अनूप है, साधु संग गुरु ज्ञान।
तामे निपट अनूप है, सतगुरु लागा कान॥1132॥
बिन सद्गुरु बाचै नहीं, फिर बूड़ै भव मांहि।
भौसागर की त्रास से, सतगुरु पकड़े बाहिं॥1133॥
चित चोखा मन निरमला, बुधि उत्तम मति धीर।
सो धोखा नहिं बिरहहीं, सतगुरु मिले कबीर॥1134॥
सतगुरु मेरा शूरमा, तकि तकि मारै तीर।
लागे पन भागे नहीं, ऐसा दास कबीर॥1135॥
सतगुरु महिमा अनंत है, अनंत किया उपकार।
लोचन अनंत उघारिया, अनंत दिखावन हार॥1136॥
यह सतगुरु उपदेश है, जो माने परतीत।
करम भरम सब त्यागि के, चलै सो भव जल जीत॥ 1137॥
सतगुरु शरण न आवहीं, फिरि फिरि होय अकाज।
जीव खोय सब जायेंगे, काल तिहूं पुर राज॥1138॥

सतगुरु सम को है सगा, साधु सम को दात।
हरि समान को है हितु, हरिजन सम को जात॥1139॥
कबीर समुझा कहत है, पानी थाह बताय।
ताकूं सतगुरु का करे, जो औघट डूबे जाय॥ 1140।
सतगुरु सम कोई नहीं, सात दीप नौ खण्ड।
तीन लोक न पाइये, अरु इक्कीस ब्रह्मण्ड॥1141॥
सतगुरु सांचा शूरमा, नख शिख मारा पूर।
बाहिर घाव न दीखई, अन्तर चकनाचूर॥1142॥
केते पढ़ि गुनि पचि मुए, योग यज्ञ तप लाय।
बिन सतगुरु पावै नहीं, कोटिन करे उपाय॥1143॥
सतगुरु की मानै नहीं, अपनी कहै बनाय।
कहैं कबीर क्या कीजिए, और मता मन माय॥1144॥
मन दिया तो सब दिया, मन के संग शरीर।
अब देवे को क्या रहा, यों कथि कहहिं कबीर॥1145॥
सतगुरु तो सतभाव है, जो अस भेद बताय।
धन्य शीष धन भाग तिहिं, जो ऐसी सुधि पाय॥1146॥
सतगुरु हमसों रीझि कै, कह्यौ एक परसंग।
बरषै बादल प्रेम को, भींजि गयो सब अंग॥1147॥
सतगुरु मिला जु जानिये, ज्ञान उजाला होय।
भ्रम का भांडा तोड़ि करि, रहै निराला होय॥1148॥
पाछे लागे जाय था, लोक वेद के साथ।
पैंड़े में सतगुरु मिले, दीपक दीन्हा हाथ॥1149॥
जेहि खोजत ब्रह्मा थके, सुर नर मुनि अरु देव।
कहैं कबीर सुन साधवा, करु सतगुरु की सेव॥1150॥
गुरवा तो सस्ता भया, पैसा केर पचास।
राम नाम धन बेचि के, शिष्य करन की आस॥1151॥

गुरु नाम है गम्य का, शीष सीख ले सोय।
बिनु पद बिनु मरजाद नर, गुरु शीष नहिं कोय॥1152॥

कहता हूं कहि जात हूं, देता हूं हेला।
गुरु की करनी गुरु जाने, चेला की चेला॥1153॥

गुरु किया है देह का, सतगुरु चीन्हा नांहि।
भवसागर के जाल में, फिर फिर गोता खांहि॥1154॥

गुरु बिचारा क्या करै, शब्द न लागा अंग।
कहैं कबीर मैली गजी, कैसे लागै रंग॥1155॥

यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान।
सीस दिये जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान॥1156॥

गु अंधियारी जानिये, रु कहिये परकास।
मिटें अज्ञान तम ज्ञान ते, गुरु नाम है तास॥1157॥

कबीर बेड़ा सार का, ऊपर लादा सार।
पापी का पापी गुरु, यों बूड़ा संसार॥1158॥

जानीता बूझा नहीं, समुझि किया नहिं गौन।
अंधे को अंधा मिला, राह बतावे कौन॥1159॥

भेदी लीया साथ करि, दीन्हा वस्तु लखाय।
कोटि जनम का पंथ था, पल में पहुंचा जाय॥1160॥

गुरु लोभी शिष लालची, दोनों खेले दांव।
दोनों बूड़े बापुरे, चढ़ि पाथर की नांव॥1161॥

सो गुरु निसदिन बन्दिये, जासों पाया राम।
नाम बिना घट अंध है, ज्यों दीपक बिन धाम॥1162॥

आगे अन्धा कूप में, दूजा लिया बुलाय।
दोनों डूबे बापुरे, निकसे कौन उपाय॥1163॥

जा गुरु को तो गम नहीं, पाहन दिया बताय।
शिष शोधे बिन सेइया, पार न पहुंचा जाय॥1164॥

गुरु गुरु में भेद है, गुरु गुरु में भाव।
सोइ गुरु नित बन्दिये, शब्द बतावे दाव॥1165॥

झूठे गुरु के पक्ष को, तजत न कीजै बार।
द्वार न पावै शब्द का, भटके बारम्बार॥1166॥

जा गुरु ते भ्रम न मिटे, भ्रांति न जिनकी जाय।
सो गुरु झूठा जानिये, त्यागत देर न लाय॥1167॥

सांचे गुरु के पक्ष में, मन को दे ठहराय।
चंचल से निश्चल भया, नहिं आवै नहिं जाय॥1168॥

जाका गुरु है आंधरा, चेला खरा निरंध।
अन्धे को अन्धा मिला, पड़ा काल के फन्द॥1169॥

पूरा सतगुरु न मिला, सुनी अधूरी सीख।
स्वांग यती का पहिन के, घर-घर मांगी भीख॥1170॥

सद्गुरु ऐसा कीजिए, लोभ मोह भ्रम नाहिं।
दरिया सो न्यारा रहे, दीसे दरिया माहिं॥1171॥

बंधे को बंधा मिला, छूटै कौन उपाय।
कर सेवा निरबंध की, पल में लेत छुड़ाय॥1172॥

गुरु कीजै जानि के, पानी पीजै छानि।
बिना बिचारे गुरु करे, परै चौरासी खानि॥1173॥

गुरु तो ऐसा चाहिए, शिष सों कछु न लेय।
शिष तो ऐसा चाहिए, गुरु को सब कुछ देय॥1174॥

गुरु भया नहिं शिष भया, हिरदे कपट न जाव।
आलो पालो दुख सहै, चढ़ि पाथर की नाव॥1175॥

स्वामी सेवक होय के, मन ही में मिलि जाय!
चतुराई रीझै नहीं, रहिए मन के मांय॥1176॥

जिन ढूंढ़ा तिन पाइयां, गहिरै पानी पैठ।
मैं बपुरा बूडन डरा, रहा किनारे बैठ॥1177॥

ऐसा कोई ना मिला, हम को दे उपदेश।
भवसागर में डूबते, कर गहि काढे केश।।1178।।
जैसा ढूंढत मैं फिरुं, तैसा मिला न कोय।
ततवेता तिरगुन रहित, निरगुन सों रत होय।।1179।।
शिष्य पूजै गुरु आपना, गुरु पूजे सब साध।
कहैं कबीर गुरु शीष को, मत है अगम अगाध।।1180।।
देश दिशान्तर मैं फिरूं, मानुष बड़ा सुकाल।
जा देखे सुख उपजै, वाका पड़ा दुकाल।।1181।।
ऐसा कोई ना मिला, जासू कहूं निसंक।
जासो हृदय की कहूं, सो फिर मारे डंक।।1182।।
हृदय ज्ञान न उपजै, मन परतीत न होय।
ताको सद्गुरु कहा करे, घनघसि कुल्हर न होय।।1183।।
सरबस सीस चढ़ाइये, तन कृत सेवा सार।
भूख प्यास सहे ताड़ना, गुरु के सुरति निहार।।1184।।
साकट ते संत होत है, जो गुरु मिले सुजान।
राम-नाम निज मंत्र दे, छुड़ावै चारों खान।।1185।।
जो कामिनी पड़दै रहै, सुनै न गुरुमुख बात।
सो तो होगी कूकरी, फिरै उघारै गात।।1186।।
कबीर हृदय कठोर के, शब्द न लागै सार।
सुधि बुधि के हिरदै विधे, उपजे ज्ञान विचार।।1187।।
हरिया जानै रुखड़ा, उस पानी का नेह।
सूखा काठ न जानि है, कितहूं बूड़ा मेह।।1188।।
कबीर लहरि समुद्र की, मोती बिखरे आय।
बगुला परख न जानई, हंसा चुनि चुनि खाय।।1189।।
कबीर हरिरस बरसिया, गिरि परवत सिखराय।
नीर निवानू ठाहरै, ना वह छापर डाय।।1190।।

पशुवा सों पालौ पर्यो, रहु रहु हिया न खीज।
ऊषर बीज न ऊगसी बोवै दूना बीज॥1191॥
आंखौं देखा घी भला, ना मुख मेला तेल।
साधु सों झगड़ा भला, ना साकट सों मेल॥1192॥
चौसठ दीवा जोय के, चौदह चन्दा माहिं।
तेहि घर किसका चांदना, जिहि घर सतगुरु नाहिं॥1193॥
साकट का मुख बिंब है, निकसत बचन भुवंग।
ताकी औषधि मौन है, विष नहिं व्यापै अंग॥1194॥
साकट संग न बैठिये, करन कुबेर समान।
ताके संग न चालिये, पड़ि हैं नरक-निदान॥1195॥
कबीर गुरु की भक्ति बिनु, राजा रासभ होय।
माटी लदै कुम्हार की, घास न डारै कोय॥1196॥
निगुरा ब्राह्मण नहिं भला, गुरुमुख भला चमार।
देवतन से कुत्ता भला, नित उठि भूंके द्वार॥1197॥
कंचन मेरु अरपहीं, अरपैं कनक भण्डार।
कहैं कबीर गुरु बेमुखी, कबहुं न पावै पार॥1198॥
सांकट सूकर कूकरा, तीनों की गति एक।
कोटि जतन परमोधिये, तऊ न छाड़ै टेक॥1199॥
गगन मंडल के बीच में, तहवां झलकै नूर।
निगुरा महल न पावई, पहुंचेगा गुरु पूर॥1200॥
हरिजन आवत देखि के, मोहड़ो सूख गयो।
भाव भक्ति समुझायो नहीं, मूरख चूकि गयो॥1201॥
साकट कहा न कहि चलै, सुनहा कहा न खाय।
जो कौवा मठ हगि भरै, तो मठ को कहा नशाय॥1202॥
गुरु बिन माला फेरते, गुरु बिन देते दान।
गुरु बिन सब निष्फल गया, पूछौ वेद पुरान॥1203॥

सूता साधु जगाइये, करै ब्रह्म को जाप।
ये तीनों न जगाइये, सांकट सिंह रु सांप।।1204।।
हरिजन की लातां भलीं, बुरि साकट की बात।
लातों में सुख ऊपजे, बाते इज्जत जात।।1205।।
कबीर दर्शन साधु का, बड़े भाग दरशाय।
जो होवै सूली सजा, कांटे ई टरि जाय।।1206।।
कबीर सोई दिन भला, जा दिन साधु मिलाय।
अंक भरि भरि भेटिये, पाप शरीरा जाय।।1207।।
एक दिना नहिं करि सके, दूजे दिन कर लेह।
कबीर साधु दरश ते, पावै उत्तम देह।।1208।।
तीरथ न्हाये एक फल, साधु मिले फल चार।
सतगुरु मिले अनेक फल, कहैं कबीर विचार।।1209।।
कबीर दर्शन साधु के, करत न कीजै कानि।
ज्यों उद्यम से लक्ष्मी, आलस मन से हानि।।1210।।
बार-बार नहिं करि सके, पाख-पाख करि लेय।
कहैं कबीर सो भक्त जन, जन्म सुफल करि लेय।।1211।।
मास-मास नहिं करि सकै, छठै मास अलबत्त।
यामें ढील न कीजिए, कहैं कबीर अविगत्त।।1212।।
दूजे दिन नहिं करि सके, तीजे दिन करु जाय।
कबीर साधु दरश ते, मोक्ष मुक्ति फल पाय।।1213।।
सन्त मिले सुख उपजै, दुष्ट मिले दुख होय।
सेवा कीजै सन्त की, जनम कृतारथ होय।।1214।।
दरशन कीजै साधु का, दिन में कइ कइ बार।
असोजा का मेह ज्यों, बहुत करे उपकार।।1215।।
बरस बरस नहिं करि सकै, ताको लागे दोष।
कहैं कबीर वा जीव सो, कबहु न पावै मोष।।1216।।

मात पिता सुत इस्तरी, आलस बन्धू कानि।
साधु दरश को जब चलै, ये अटकावै आनि॥1217॥
साधु शब्द समुद्र है, जामें रतन भराय।
मन्द भाग मुट्ठी भरै, कंकर हाथ लगाय॥1218॥
संगत कीजै साधु की, कभी न निष्फल होय।
लोहा पारस परस ते, सो भी कंचन होय॥1219॥
कई बार नहिं कर सके, दोय बख्त करि लेय।
कबीर साधु दरश ते, काल दगा नहिं देय॥1220॥
साधु बिरछ सतज्ञान फल, शीतल शब्द विचार।
जग में होते साधु नहिं, जर मरता संसार॥1221॥
साधु मिले यह सब टलै, काल-जाल जम चोट।
शीश नवावत ढहि परै, अघ पापन के पोट॥1222॥
साधु भूखा भाव का, धन का भूखा नाहिं।
धन का भूखा जो फिरै, सो तो साधु नाहिं॥1223॥
दया गरीबी बन्दगी, समता शील सुभाव।
ये ते लक्षण साधु के, कहैं कबीर सद्भाव ॥1224॥
छठे मास नहिं करि सकै, बरस दिना करि लेय।
कहैं कबीर सो भक्तजन, जमहिं चुनौती देय॥1225॥
कंचन दीया करन ने, द्रौपदी दीया चीर।
जो दीया सो पाइया, ऐसे कहैं कबीर॥1226॥
दोय बखत नहिं करि सके, दिन में करु इक बार।
कबीर साधु दरश ते, उतरे भौजल पार॥1227॥
तीजे चौथे नहिं करे, बार-बार करु जाय।
यामें विलंब न कीजिये, कहैं कबीर समुझाय॥1228॥
साधु कहावन कठिन है, ज्यों खांड़े की धार।
डगमगाय तो गिर पड़े, निहचल उतरे पार॥1229॥

दुख सुख एक समान है, हरष शोक नहिं व्याप।
उपकारी निहकामता, उपजै छोह न ताप॥1230॥

पाख पाख नहिं करि सकै, मास मास करु जाय।
यामें देर न लाइये, कहैं कबीर समुझाय॥1231॥

इन अटकाया न रुके, साधु दरश को जाय।
कबीर सोई संत जन, मोक्ष मुक्ति फल पाय॥1232॥

साधु बड़े परमारथी, घन ज्यों बरसे आय।
तपन बुझावैं और की, अपनो पारस लाय॥1233॥

छाजन भोजन प्रीति सों, दीजै साधु बुलाय।
जीवत जस है जगत में, अन्त परम पद पाय॥1234॥

साधु आवत देखि कर, हंसी हमारी देह।
माथा का ग्रह ऊतरा, नैनन बढ़ा स्नेह॥1235॥

साधु भौंरा जग कली, निश दिन फिरै उदास।
टुक टुक तहां बिलंबिया, जहं शीतल शब्द निवास॥1236॥

मानपमान न चित्त धरै, औरन को सनमान।
जो कोई आशा करै, उपदेशै तेहि ज्ञान॥1237॥

साधु जन सब में रमैं, दुख न काहू देहि।
अपने मत गाढ़ा रहै, साधुन का मत येहि॥1238॥

जा सुख को मुनिवर रटैं, सुर नर करैं विलाप।
सो सुख सहजै पाइया, सन्तों संगति आप॥1239॥

कबीर शीतल जल नहीं, हिम ना शीतल होय।
कबीर शीतल सन्त जन, राम सनेही सोय॥1240॥

साधु आवत देखि के, मन में करै मरोर।
सो तो होसी चूहरी, बसै गांव की ओर॥1241॥

कबीर लौंग, इलायची, दातुन माटी पानि।
कहैं कबीर संतन को, देत न कीजै कानि॥1242॥

हरि दरबारी साधु हैं, इन ते सब कुछ होय।
बेगि मिलावें राम को, इन्हें मिले जु कोय॥1243॥
संत मिले जनि बीछरो, बिछरो यह मम प्रान।
शब्द सनेही ना मिले, प्राण देह में आन॥1244॥
साधु ऐसा चाहिए, दुखै दुखावै नाहिं।
पान फूल छेड़े नहीं, बसै बगीचा माहि॥1245॥
निर्बेरी निहकामता, स्वामी सेती नेह।
विषया सो न्यारा रहे, साधुन का मत येह॥1246॥
सरवर तरवर संत जन, और चौथा बरसे मेह।
परमारथ के कारने, चारों धारी देह॥1247॥
कोई आवै भाव लै, कोई अभाव ले आव।
साधु दोऊ को पोषते, भाव न गिनै अभाव॥1248॥
टूका माही टूक दे, चीर माहि सो चीर।
साधु देत न सकुचिये, यों कथि कहहिं कबीर॥1249॥
साधु कहावन कठिन है, लम्बा पेड़ खजूर।
चढ़ै तो चाखे प्रेम रस, गिरै तो चकनाचूर॥1250॥
कबीर साधु आया पाहुना, मांगै चार रतन।
धुनी पानी साथरा, सरधा सेती अन॥1251॥
साधु चलत रो दीजिए, कीजै अति सनमान।
कहैं कबीर कछु भेट धरु, अपने बित्त अनुमान॥1252॥
खाली साधु न बिदा करु, सुन लीजै सब कोय।
कहैं कबीर कछु भेंट धरु, जो तेरे घर होय॥1253॥
साधु दरशन महाफल, कोटि यज्ञ फल लेह।
इन मन्दिर को का पड़ी, नगर शुद्ध करि लेह॥1254॥
यह कलियुग आयो अबै, साधु न मानै कोय।
कामी क्रोधी मसखरा, तिनकी पूजा होय॥1255॥

आज काल दिन पांच में, बरस पांच जुग पंच।
जब तब साधु तारसी, और सकल परपंच॥1256॥

बिरछा कबहुं न फल भखै, नदी न संचवै नीर।
परमारथ के कारने, साधु धरा शरीर॥1257॥

सुख देवै दुख को हरै, दूर करै अपराध।
कहैं कबीर वह कब मिलै, परम स्नेही साध॥1258॥

कबीर साधु सोई जानिये, चलै साधु की चाल।
परमारथ राता रहै, बोलै बचन रसाल॥1259॥

साधु साधु सब एक हैं, जस पुस्तै का खेत।
कोई विवेकी लाल हैं, और सेत का सेत॥1260॥

सन्त मता गजराज का, चाले बन्धन छोड़।
जग कुत्ता पीछै फिरै, सुनै न वाका सोर॥1261॥

इन्द्रिय मन निग्रह करन, हिरदै कोमल होय।
सदा शुद्ध आचार में, रह विचार में सोय॥1262॥

कोटि-कोटि तीरथ करै, कोटि-कोटि करु धाम।
जब लग साधु न सेवई, तब लग काचा काम॥1263॥

सुनिये पार जो पाइया, छाजन भोजन आनि।
कहैं कबीर संतन को, देत न कीजै कानि॥1264॥

कमल पत्र हैं साधु जन, बसै जगत के माहिं।
बालक केरि धाय ज्यों, अपना जानत नाहिं॥1265॥

आशा तजि माया तजै, मोह तजै अरु मान।
हरष शोक निंदा तजै, कहैं कबीर संत जान॥1266॥

साधु दरश को जाइये, जेता धरिये पांव।
डग डग पै असमेध जग, कहैं कबीर समुझाय॥1267॥

कुलवंता कोटिक मिले, पंडित कोटि पचीस।
सुपच भक्त की पनहि में, तुलै न काहू की शीश॥1268॥

साधु सती और सिंह को, ज्यों लंछन त्यों शोभ।
सिंह न मारे मेंढ़का, साधु न बांधे लोभ॥1269॥
जौन चाल संसार की, तौन साधु को नाहिं।
डिंभ चाल करनी करै, साधु कहो मत ताहि ॥1270॥
शीलवन्त दृढ़ ज्ञान मत, अति उदार चित होय।
लज्जावान अति निछलता, कोमल हृदय सोय॥1271॥
सदा रहै संतोष में, धरम आप दृढ़ धार।
आश एक गुरुदेव की, और न चित विचार॥1272॥
सावधान औ शीलता, सदा प्रफुल्लित गात।
निर्विकार गंभीर मत, धीरज दया बरसात॥1273॥
आसन तो एकान्त करैं, कामिनी संगत दूर।
शीतल संत शिरोमनी, उनका ऐसा नूर॥1274॥
रक्त छाड़ि पय को गहै, ज्यौरे गऊ का बच्छ।
औगुण छांड़ै गुण गहै, ऐसा साधु लच्छ ॥1275॥
तूटै बरत अकास सों, कौन सकत है झेल।
साधु सती और सूर का, अनी ऊपर का खेल ॥1276॥
उड़गण और सुधाकरा, बसत नीर के संग।
यों साधु संसार में, कबीर पड़त न फंद ॥1277॥
सदा कृपालु दुख परिहरन, बैर भाव नहिं दोय।
छिमा ज्ञान सत भारवही, हिंसा रहित जु होय॥1278॥
साधु सती और सूरमा, राखा रहै न ओट।
माथा बांधि पताक सों, नेजा घालैं चोट॥1279॥
जौन भाव ऊपर रहै, भितर बसावै सोय।
भीतर और न बसावई, ऊपर और न होय॥1280॥
साधु ऐसा चाहिए, जाके ज्ञान विवेक।
बाहर मिलते सों मिलें, अन्तर सबसों एक॥1281॥

और देव नहिं चित्त बसै, मन गुरु चरण बसाय।
स्वल्पाहार भोजन करु, तृष्णा दूर पराय।।1282।।
जूआ चोरी मुखबिरी, ब्याज बिरानी नारि।
जो चाहे दीदार को, इतनी वस्तु निवारि।।1283।।
बहता पानी निरमला, बन्दा गन्दा होय।
साधु जन रमता भला, दाग न लागै कोय।।1284।।
बंधा पानी निरमला, जो टुक गहिरा होय।
साधु जन बैठा भला, जो कुछ साधन होय।।1285।।
साधु ऐसा चाहिए, जाका पूरा मंग।
विपत्ति पड़ै छाड़ै नहीं, चढ़ै चौगुना रंग।।1286।।
षड़ विकार यह देह के, तिनको चित्त न लाय।
शोक मोह प्यासीह छुधा, जरा मृत्यु नशि जाय।।1287।।
सन्त न छाड़ै सन्तता, कोटिक मिलै असन्त।
मलय भुवंगम बेधिया, शीतलता न तजन्त।।1288।।
जाति न पूछो साधु की, पूछि लीजिये ज्ञान।
मोल करो तरवार का, पड़ा रहन दो म्यान।।1289।।
साधु तो हीरा भया, न फूटै घन खाय।
न वह बिनसै कुम्भ ज्यों, ना वह आवै जाय।।1290।।
आजकल के लोग हैं, मिलिके बिछुरी जांहि।
लाहा कारण आपने, सोगंद रामकि खांहि।।1291।।
क्यों नृपनारी निन्दिये, पनिहारी को मान।
वह मांग सवारे पीवहित, नित वह सुमिरे राम।।1292।।
संत समागम परम सुख, जान अल्प सुख और।
मान सरोवर हंस है, बगुला ठौरे ठौर।।1293।।
कह अकाश को फेर है, कह धरती को तोल।
कहा साधु की जाति है, कह पारस को मोल।।1294।।

साधु चाल जु चालई, साधु कहावै सोय।
बिन साधन तो सुधि नहीं, साधु कहां ते होय॥1295॥
हांसी खेल हराम है, जो जन रमते राम।
माया मन्दिर इस्तरी, नहिं साधु का काम॥1296॥
हयबर गयबर सघन घन, छत्रपति की नारि।
तास पटतरा ना तुले, हरिजन की पनिहारि॥1297॥
सब वन तो चन्दन नहीं, शूरा के दल नाहिं।
सब समुद्र मोती नहीं, यों साधु जग माहिं॥1298॥
साधु साधु सबहीं बड़े, अपनी अपनी ठौर।
शब्द विवेकी पारखी, सो माथे के मौर॥1299॥
सो दिन गया अकाज में, संगत भई न संत।
प्रेम बिना पशु जीवना, भक्ति बिना भगवन्त॥1300॥
साधु बिहंगम सुरसरी, चले बिहंगम चाल।
जो जो गलियां नीकसे, सो सो करे निहाल॥1301॥
कबीर हमारा कोई नहिं, हम काहू के नाहिं।
पारै पहुंची नाव ज्यौं, मिलिके बिछुरी जाहिं॥1302॥
जो मानुष गृह धर्म युत, राखै शील विचार।
गुरुमुख बानी साधु संग, मन वच सेवा सार॥1303॥
बाना पहिरे सिंह का, चलै भेड़ की चाल।
बोली बोले सियार की, कुत्ता खावै काल॥1304॥
गिरही सेवै साधु को, भाव भक्ति आनंद।
कहैं कबीर बैरागी को, निरबानी निरदुन्द॥1305॥
मन मैला तन ऊजरा, बगुला कपटी अंग।
तासौं तो कौवा भला, तन मन एकहि अंग॥1306॥
माला तिलक लगाय के, भक्ति न आई हाथ।
दाढ़ी मूंछ मुंडाय के, चले दुनी के साथ॥1307॥

कवि तो कोटिक कोटि हैं, सिर के मूड़े कोट।
मन के मूड़े देखि करि, ता संग लीजै ओट॥1308॥
तन को जोगी सब करै, मन को करै न कोय।
सहजै सब सिधि पाइये, जो मन जोगी होय॥1309॥
बोली ठोली मसखरी, हंसी खेल हराम।
मद माया और इस्तरी, नहिं सन्तन के काम॥1310॥
बैरागी बिरकत भला, गिरही चित्त उदार।
दोऊ चूकि खाली पड़े, ताको वार न पार॥1311॥
शब्द बिचारे पथ चलै, ज्ञान गली दे पांव।
क्या रमता क्या बैठता, क्या गृह कंदला छांव॥1312॥
माला तिलक तो भेष है, राम भक्ति कछु और।
कहैं कबीर जिन पहिरिया, पांचों राखै ठौर॥1313॥
चाल बकुल की चलत हैं, बहुरि कहावै हंस।
ते मुक्ता कैसे चुगे, पड़ै काल के फंस॥1314॥
घर में रहै तो भक्ति करु, नातर करु बैराग।
बैरागी बन्धन करै, ताका बड़ा अभाग॥1315॥
भुवंगम बास न बेधई, चन्दन दोष न लाय।
सब अंग तो विष सों भरा, अमृत कहां समाय॥1316॥
कबीर संगत साधु की, कभी न निष्फल जाय।
जो पै बोवै भूनिके, फूलै फलै अघाय॥1317॥
कबीर कुसंग न कीजिये, पाथर जल न तिराय।
कंदली सीप भुजंग मुख, एक बूंद तिर भाय॥1318॥
कबीर गुरु के देश में, बसि जानै जो कोय।
कागा ते हंसा बनै, जाति बरन कुल खोय॥1319॥
कबीर संगति साधु की, जो करि जाने कोय।
सकल बिरछ चन्दन भये, बांस न चन्दन होय॥1320॥

जीवन जोबन राज मद, अविचल रहै न कोय।
जो दिन जाय सत्संग में, जीवन का फल सोय॥1321॥
गिरिये परबत सिखर ते, परिये धरनि मंझार।
मूरख मित्र न कीजिये, बूड़ो काली धार॥1322॥
ऊंचे कुल कह जनमिया, करनी ऊंच न होय।
कनक कलश मद सो भरा, साधुन निन्दा सोय॥1323॥
एक घड़ी आधी घड़ी, आधी में पुनि आध।
कबीर संगत साधु की, कटै कोटि अपराध॥1324॥
साधू संगत परिहरै, करै विषय को संग।
कूप खनी जल बावरे, त्याग दिया जल गंग॥1325॥
चर्चा करु तब चौहटे, ज्ञान करो तब दोय।
ध्यान धरो तब एकिला, और न दूजा कोय॥1326॥
सन्त सुरसरी गंग जल, आनि पखारा अंग।
मैले से निरमल भये, साधु जन के संग॥1327॥
कबीर कलह अरु कल्पना, सत्संगति से जाय।
दुख वासो भागा फिरै, सुख में रहै समाय॥1328॥
मथुरा काशी द्वारिका, हरिद्वार जगनाथ।
साधु संगति हरिभजन बिन, कछु न आवै हाथ॥1329॥
साखी सबद बहुतै सुना, मिटा न मन का दाग।
संगति सो सुधरा नहीं, ताका बड़ा अभाग॥1330॥
ज्ञानी को ज्ञानी मिलै, रस की लूटम लूट।
ज्ञानी अज्ञानी मिलै, हौवे माथा कूट॥1331॥
कबीर संगत साधु की, नित प्रति कीजै जाय।
दुरमति दूर बहावसी, देसी सुमति बताय॥1332॥
कबीर संगत साधु की, जौ की भूसी खाय।
खीर खांड भोजन मिलै, साकट संग न जाय॥1333॥

कबीर संगत साधु की, ज्यों गन्धी की बास।
जो कुछ गन्धी दे नहीं, तो भी वास सुवास॥1334॥
निरबन्धन बंधा रहै, बंधा निरबंध होय।
कर्म करै करता नहीं, दास कहावै सोय॥1335॥
लगा रहै सतज्ञान सो, सबही बन्धन तोड़।
कहैं कबीर वा दास सो, काल रहै हथ जोड़॥1336॥
काहूं को न संतापिये, जो शिर हंता होय।
फिर फिर वाकूं बन्दिये, दास लच्छ है सोय॥1337॥
कबीर निहकामी निरमल दशा, नित चरणों की आश।
तीरथ इच्छा ता करै, कब आवै वे दास॥1338॥
सुख दुख सिर ऊपर सहै, कबहु न छाड़ै संग।
रंग न लागै और का, व्यापै सतगुरु रंग॥1339॥
कबीर गुरु कै भावते, दूरहि ते दीसन्त।
तन छीना मन अनमना, जग के रूठि फिरन्त॥1340॥
दासातन हिरदै नहीं, नाम धरावै दास।
पानी के पीये बिना, कैसे मिटै पियास॥1341॥
दासातन हिरदै बसै, साधुन सों आधीन।
कहैं कबीर सो दास है, प्रेम भक्ति लवलीन॥1342॥
दास कहावन कठिन है, मैं दासन का दास।
अब तो ऐसा होय रहूं, पांव तले की घास॥1343॥
कबीर कुल सोई भला, जा कुल उपजै दास।
जा कुल दास न ऊपजै, सो कुल आक पलास॥1344॥
गुरु समरथ सिर पर खड़े, कहा कमी तोहि दास।
रिद्धि सिद्धि सेवा करैं, मुक्ति न छाड़ै पास॥1345॥
कबीर गुरु सबको चहै, गुरु को चहै न कोय।
जब लग आश शरीर की, तब लग दास न होय॥1346॥

कबीर गुरु की भक्ति का, मन में बहुत हुलास।
मन-मनसा माजै नहीं, होन चहत है दास॥1347॥
निर्पक्षी की भक्ति है, निर्मोही को ज्ञान।
निरद्वन्दी की मुक्ति है, निर्लोभी निर्बान॥1348॥
भक्ति भाव भादौ नदी, सबहि चली घहराय।
सरिता सोई सराहिये, जेठ मास ठहराय॥1349॥
जब लग भक्ति सकाम है, तब लग निष्फल सेव।
कहैं कबीर वह क्यों मिलै, निहकामी निजदेव॥1350॥
तिमिर गया रवि देखते, कुमति गयी गुरु ज्ञान।
सुमति गयी अति लोभते, भक्ति गयी अभिमान॥1351॥
भक्ति भेष बहु अन्तरा, जैसे धरनि अकाश।
भक्त लीन गुरु चरण में, भेष जगत की आश॥1352॥
कामी क्रोधी लालची, इनते भक्ति न होय।
भक्ति करै कोई सूरमा, जाति बरन कुल खोय॥1353॥
जब लग नाता जाति का, तब लग भक्ति न होय।
नाता तोड़े गुरु भजै, भक्ति कहावै सोय॥1354॥
प्रेम बिना जो भक्ति है, सो निज दंभ विचार।
उदर भरन के कारन, जन्म गंवाये सार॥1355॥
भाव बिना नहिं भक्ति जग, भक्ति बिना नहीं भाव।
भक्ति भाव इक रूप है, दोऊ एक सुभाव॥1356॥
जाति बरन कुल खोय के, भक्ति करै चितलाय।
कहैं कबीर सतगुरु मिलै, आवागमन नशाय॥1357॥
विषय त्याग बैराग है, समता कहिये ज्ञान।
सुखदायी सब जीव सों, यही भक्ति परमान॥1358॥
भक्ति पदारथ तब मिलै, जब गुरु होय सहाय।
प्रेम प्रीति की भक्ति जो, पूरण भाग मिलाय॥1359॥

और कर्म सब कर्म हैं, भक्ति कर्म निहकर्म।
कहैं कबीर पुकारि के, भक्ति करो तजि भर्म।।1360।।
भक्ति महल बहु ऊंच है, दूरहि ते दरशाय।
जो कोई जन भक्ति करे, शोभा बरनि न जाय।।1361।।
भक्तन की यह रीति है, बन्दे करे जो भाव।
परमारथ के कारने, यह तन रहो कि जाव।।1362।।
भक्ति बिना नहिं निस्तरै, लाख करै जो कोय।
शब्द सनेही ह्वै रहै, घर को पहुंचे सोय।।1363।।
भक्ति कठिन अति दुर्लभ, भेष सुगम नित सोय।
भक्ति जु न्यारी भेष से, यह जानै सब कोय।।1364।।
भक्ति-बीज पलटै नहीं, जो जुग जाय अनन्त।
ऊंच नीच घर अवतरै, होय सन्त का सन्त।।1365।।
देखा देखी भक्ति का, कबहुं न चढ़सी रंग।
विपत्ति पड़े यों छाड़सी, केचुलि तजत भुजंग।।1366।।
आरत ह्वै गुरु भक्ति करु, सब कारज सिध होय।
करम जाल भौजाल में, भक्त फंसै नहिं कोय।।1367।।
भक्ति दुहेली गुरुन की, नहिं कायर का काम।
सीस उतारे हाथ सों, ताहि मिलै निज धाम।।1368।।
भक्ति जु सीढ़ी मुक्ति की, चढ़ै भक्त हरषाय।
और न कोई चढ़ि सकै, निज मन समझो आय।।1369।।
भक्ति सोई जो भाव सों, इक मन चित को राख।
सांच शील सो खेलिए, मैं तैं दोऊ नाख।।1370।।
भक्ति निसैनी मुक्ति की, संत चढ़े सब धाय।
जिन जिन मन आलस किया, जनम जनम पछिताय।।1371।।
भक्ति पंथ बहु कठिन है, रती न चालै खोट।
निराधार का खेल है, अधर धार की चोट।।1372।।

भक्ति गेंद चौगान की, भावै कोई लै जाय।
कहैं कबीर कछु भेद नहिं, कहां रंक कहं राय॥1373॥

कबीर गुरु की भक्ति बिन, धिक जीवन संसार।
धूवां का सा धौरहरा, बिनसत लगे न बार॥1374॥

भक्ति दुवारा सांकरा, राई दशवें भाय।
मन तो मैंगल होय रहा, कैसे आवै जाय॥1375॥

टोटे में भक्ति करै, ताका नाम सपूत।
मायाधारी मसखरैं, केते गये अऊत॥1376॥

भक्ति-भक्ति सब कोई कहै, भक्ति न जाने भेव।
पूरण भक्ति जब मिलै, कृपा करै गुरुदेव॥1377॥

सुमिरण मारग सहज का, सतगुरु दिया बताय।
सांस सांस सुमिरण करूं, इक दिन मिलसी आय॥1378॥

कहता हूं कहि जात हूं, कहूं बजाये ढोल।
श्वासा खाली जात है, तीन लोक का मोल॥1379॥

जाप मरै अजपा मरै, अनहद भी मरि जाय।
सुरति समानी शब्द में, ताहि काल न खाय॥1380॥

बिना सांच सुमिरन नहीं, बिन भेदी भक्ति न सोय।
पारस में परदा रहा, कस लोहा कंचन होय॥1381॥

अपने पहरै जागिये, ना परि रहिये सोय।
ना जानौ छिन एक में, किसका पहिरा होय॥1382॥

लम्बा मारग दूर घर, बिकट पंथ बहु मार।
कहो सन्त क्यों पाइये, दुर्लभ गुरु दीदार॥1383॥

नाम जो रत्ती एक है, पाप जु रत्ती हजार।
आध रत्ती घट संचरै, जारि करे सब छार॥1384॥

माला सांस उसांस की, फेरै कोई निज दास।
चौरासी भरमै नहीं, कटै करम की फांस॥1385॥

वाद विवादां मत करो, करु नित एक विचार।
नाम सुमिर चित लायके, सब करनी में सार॥1386॥
जो कोय सुमिरन अंग को, निशिवासर करै पाठ।
कहैं कबीर सो संत जन, सन्धै औघट घाट॥1387॥
सांस सुफल सो जानिये, जो सुमिरन में जाय।
और सांस यौं ही गये, करि करि बहुत उपाय॥1388॥
लेने को गुरु नाम है, देने को अन्न दान।
तरने को आधीनता, बूड़न को अभिमान॥1389॥
नाम रतन धन पाय के, गांठी बांध न खोल।
नहिं पाटनहिं पार भी, नहिं गाहक नहिं मोल॥1390॥
कहा भरोसा देह का, बिनसि जाय छिन मांहि।
सांस सांस सुमिरन करो, और जतन कछु नांहि॥1391॥
जाकी पूंजी सांस है, छिन आवै छिन जाय।
ताको ऐसा चाहिए, रहे नाम लौ लाय॥1392॥
राम जपत दरिद्री भला, टूटी घर की छान।
कंचन मन्दिर जारि दे, जहां न सतगुरु ज्ञान॥1393॥
कबीर हरि के मिलन की, बात सुनी हम दोय।
कै कछु हरि को नाम ले, कै कर ऊंचा होय॥1394॥
राम लिया जिन सब लिया, सब सास्त्रन को भेद।
बिना राम नर के गये, पढ़ि गुनि चारों वेद॥1395॥
माला फेरत जुग भया, मिटा न मन का फेर।
कर का मन का डारि दे, मनका मनका फेर॥1396॥
जो कोय सुमिरन अंग को, पाठ करै मन लाय।
भक्ति ज्ञान मन ऊपजै, कहैं कबीर समुझाय॥1397॥
क्रिया करै अंगुरि गिनै, मन धावै चहुं ओर।
जिहि फेरै सांई मिलै, सो भय काठ कठोर॥1398॥

तन थिर मन थिर बचन थिर, सुरति निरति थिर होय।
कहै कबीर ता दास को, काल न कापै कोय॥1399॥
कोटि नाम संसार में, ताते मुक्ति न होय।
आदि नाम जो गुप्त जप, बिरला जाने कोय॥1400॥
राम नाम निज औषधि, सतगुरु दई बताय।
औषधि खाय अरु पथ रहै, ताकी बेदन जाय॥1401॥
राम नाम को सुमिरते, तर गए पतित अनेक।
याते कबहुं नहिं छांड़िये, राम नाम की टेक॥1402॥
नींद निशानी मौत की, उठु कबीरा जाग।
और रसायन छांडिके, राम रसायन लाग॥1403॥
सोया सौ निष्फल गया, जागा सो फल लेहि।
साहिब हक्क न राखसी, जब मांगे तब देहि॥1404॥
जबहि राम हिरदै धरा, भया पाप का नाश।
मानो चिनगी आग की, परी पुरानी घास॥1405॥
कबीर क्षुधा है कूकरी, करत भजन में भंग।
वाकूं टुकड़ा डारि के, सुमिरन करूं सुरंग॥1406॥
बाहिर क्या दिखलाइये, अन्तर जपिये राम।
कहा महोला खलक सों, पर्यो धनी सों काम॥1407॥
कबीर सुमिरन सार है, और सकल जंजाल।
आदि अंत मधि सोधिया, दूजा देखा काल॥1408॥
कबीर हरि हरि सुमिरि ले, प्राण जाहिंगे छूट।
घर के प्यारे आदमी, चलते लेंगे लूट॥1409॥
निज सुख आतम राम है, दूजा दुख अपार।
मनसा वाचा करमना, कबीर सुमिरन सार॥1410॥
सुमिरण से सुख होत हैं, सुमिरण से दुख जाय।
कहैं कबीर सुमिरण किये, सांई मांहि समाय॥1411॥

सुमिरन सो मन लाइये, जैसे पानी मीन।
प्राण तजे पल बीछुरे, सत्य कबीर कहि दीन॥1412॥
सुमिरन सों मन जब लगै, ज्ञानांकुस दे सीस।
कहैं कबीर डोलै नहीं, निश्चै बिस्वा बीस॥1413॥
सुख के माथे शिल परै, नाम हृदय से जाय।
बलिहारी वा दुख की, पल पल राम रटाय॥1414॥
कबीर सूता क्या करै, गुण सतगुरु का गाय।
तेरे शिर पर जम खड़ा, खरच कदे का खाय॥1415॥
कबीर मुख सोई भला, जा मुख निकसै राम।
जा मुख राम न नीकसै, ता मुख है किस काम॥1416॥
जैसे माया मन रमैं, तैसा राम रमाय।
तारा मण्डल बेधि के, तब अमरापुर जाय॥1417॥
ज्ञान दीप परकाश करि, भीतर भवन जराय।
तहां सुमिर गुरु नाम को, सहज समाधि लगाय॥1418॥
एक राम को जानि करि, दूजा देह बहाय।
तीरथ व्रत जप तप नहीं, सतगुरु चरण समाय॥1419॥
जीना थोड़ा ही भला, हरि का सुमिरन होय।
लाख बरस की जीवना, लेखै धरै न कोय॥1420॥
सहकामी सुमिरन करै, पावै उत्तम धाम।
निहकामी सुमिरन करै, पावै अविचल राम॥1421॥
सुमिरन सुरति लगाय के, मुख ते कछू न बोल।
बाहर के पट देय के, अन्तर के पट खोल॥1422॥
सुरति समावे राम में, जग से रहे उदास।
कहैं कबीर गुरु चरण में, दृढ़ राखो विश्वास॥1423॥
सुमिरन सों मन लाइये, जैसे दीप पतंग।
प्राण तजे छिन एक में, जरत न मोरै अंग॥1424॥

सुरति फंसी संसार में, ताते परिगो दूर।
सुरति बांधि स्थिर करो, आठों पहर हजूर॥1425॥
राम जपत कुष्टी भला, चुइ चुइ पैर जु चाम।
कंचन देह किस काम की, जो मुख नाहिं राम॥1426॥
माला तो कर में फिरै, जीभ फिरै मुख मांहि।
मनवा तो चहुं दिशि फिरै, यह तौ सुमिरन नांहि॥1427॥
वाद करै सो जानिये, निगुरे का वह काम।
संतों को फुरसत नहीं, सुमिरन करते राम॥1428॥
कोई न जम से बांचिया, राम बिना धरि खाय।
जो जन बिरही राम के, ताको देखि डराय॥1429॥
ज्ञान कथे बकि बकि मरै, काहे करै उपाय।
सतगुरु ने तो यों कहा, सुमिरन करो बनाय॥1430॥
सुमिरण की सुधि यौं करो, जैसे कामी काम।
एक पलक बिसरै नहीं, निश दिन आठौ जाम॥1431॥
सुमिरण की सुधि यौं करो, ज्यौं गागर पनिहारि।
हालै डोलै सुरति में, कहैं कबीर विचारि॥1432॥
पूंजि मेरी राम है, जाते सदा निहाल।
कबीर गरजे पुरुष बल, चोरी करै न काल॥1433॥
जाकी गांठी राम है, ताके हैं सब सिद्धि।
कर जोड़ी ठाढ़ी सबै, अष्ट सिद्धि नव निद्धि॥1434॥
आदि नाम पारस अहै, मन है मैला लोह।
परसत ही कंचन भया, छूटा बन्धन मोह॥1435॥
लूटि सके तो लूटि ले, राम नाम की लूट।
फिर पाछे पछताहुगे, प्राण जाहिंगे छूट॥1436॥
माला फेरै कह भयो, हिरदा गांठि न खोय।
गुरु चरनन चित राखिये, तो अमरापुर जोय॥1437॥

कबीर आपन राम कहि, औरन राम कहाय।
जा मुख राम न नीसरै, ता मुख राम कहाय।।1438।।
राम नाम जाना नहीं, लागी मोटी खोर।
काया हांड़ी काठ की, ना वह चढ़ै बहोर।।1439।।
अस औसर नहिं पाइहो, धरो राम कड़िहार।
भौ सागर तरि जाव जब, पलक न लागे बार।।1440।।
कबीर हरि के नाम में, सुरति रहै करतार।
ता मुख से मोती झरे, हीरा अनंत अपार।।1441।।
कोटि करम कटि पलक में, रंचक आवै राम।
जुग अनेक जो पुन्य करु, नहिं राम बिनु ठाम।।1442।।
दुख में सुमिरन सब करै, सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करै, तो दुख काहे को होय।।1443।।
कबीर बारी पारी आपने, चले पियारे मीत।
तेरी बारी जीयरा, नियरै आवै नीत।।1444।।
कबीर केवल नाम की, जब लगि दीपक बाति।
तेल घटा बाती बुझी, तब सोवे दिन-राति।1445।।
कुल करनी के कारनै, हंसा गया बिगोय।
तब कुल काको लाजि है, चारि पांव का होय।।1446।।
कहत सुनत जग जात हैं, विषय न सूझै काल।
कहैं कबीर सुन प्रानिया, साहिब नाम सम्हाल।।1447।।
ऊजल पहिनै कापड़ा, पान सुपारि खाय।
कबीर गुरु की भक्ति बिन, बांधा जमपुर जाय।।1448।।
परदै रहती पदमिनी, करती कुल की कान।
घड़ी जु पहुंची काल की, छोड़ भई मैदान।।1449।।
हे मतिहीनी माछीरी, राखि न सकी शरीर।
सो सरवर सेवा नहीं, जाल काल नहिं कीर।।1450।।

रात गंवाई सोय कर, दिवस गंवायो खाय।
हीरा जनम अमोल था, कौड़ी बदले जाय॥1451॥
कबीर थोड़ा जीवना, माढ़ै बहुत मढ़ान।
सबही ऊभा पंथ सिर, राव रंक सुलतान॥1452॥
पाकी खेती देखि के, गरबहिं किया किसान।
अजहूं झोला बहुत है, घर आवै तब जान॥1453॥
पन छूटै छूटा फिरै, ते नर भूत खबीस।
भूतनैं पीड़ा राख का, पड़ा पटक्के सीस॥1454॥
मांइ मसानी सेढि सीतला, भैरु भूत हनुमंत।
साहिब से न्यारा रहै, जो इनको पूजंत॥1455॥
पहले यह मन काग था, जीवन करता घात।
अब यह मन हंसा भया, मोती चुगि चुगि खात॥1456॥
यह मन तो पर्वत हता, अब मैं पाया जानि।
टांकी लागी शब्द की, निकसी कंचन खानि॥1457॥
कबीर भंवरा बारी परहरी, मेवा विलम्ब जाय।
वा वन चन्दन घर किया, भूलि गया वनराय॥1458॥
मेरा मन मकरंद था, करता बहुत बिगार।
सूधा होय मारग चला, हरि आगै हम लार॥1459॥
पुहुप बासते पातला, सूक्ष्म जाको रंग।
कबिरा तासों मिलि रहा, कबहूंन छाड़ै संग॥1460॥
मन सों मन मिलता नहीं, होता तनका भंग।
अब मन भया जो कामरी, चढ़ै न दूजा रंग॥1461॥
कौन पवन घर संचरै, कहां किया परकास।
नाद बिंद जब ना हता, तब कहां किया निवास॥1462॥
हुसल पवन घर संचरै, पंचम किया प्रकास।
नाद बिंद जब ना हता, तत्त्वहि किया निवास॥1463॥

सकल पसारा पवन का, सात द्वीप नव खण्ड।
कहा नाम उस पवन का, जो गरजे ब्रह्मंड।।1464।।

सकल पसारा पवन का, सात द्वीप नव खण्ड।
सोहं नाम उस पवन का, जो गरजे ब्रह्मण्ड।।1465।।

कबीर जीवन कुछ नहीं, खिन खारा खिन मीठ।
काल्हि अलहजा मारिया, आज मसाना दीठ।।1466।।

कबीर मन परबत भया, अब मैं पाया जान।
टांकी लागी प्रेम की, निकसी कंचन खान।।1467।।

राम नाम को छांड़ि कै, करै अन्य की आस।
कहै कबीर ता दास का, होय नरक में बास।।1468।।

राम नाम को छांड़ि कै, राखै करवा चौथि।
सोतो होयगी सूकरी, तिन्हैं राम सों कोथि।।1469।।

प्राण पिंड को तजि चलै, मूवा कहै सब कोय।
जीव छतौ जामें मरैं, सूक्ष्म लखै न सोय।।1470।।

मरिये तो मरि जाइये, छूटि परै जंजार।
ऐसा मरना को मरै, दिनमें सौ सौ बार।।1471।।

जा घर गुरु की भक्ति नहीं, संत नहीं मिहमान।
ता घर जम डेरा दिया, जीवत भये मसान।।1472।।

❀इति एकादश प्रकरण—साखी❀
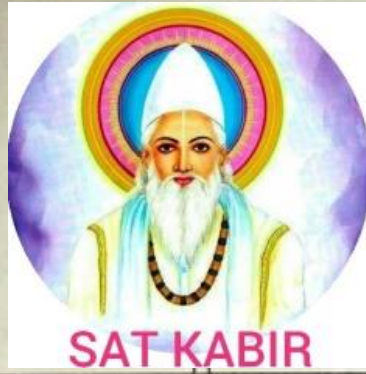
मूल बीजक

द्वादश प्रकरण : पद

पद–1

दुलहनि गावहु मंगलचार,
हम घरि आए हो राजा राम भरतार॥टेक॥
तन रत करि मैं मन रत करिहुं, पंचतत्त बराती।
रामदेव मोरें पांहुनैं आये मैं जीवन मैं माती॥
सरीर सरोवर बेदी करिहु, ब्रह्मा वेद उचार।
रामदेव संगि भांवरी लैहूं, धंनि धंनि भाग हमार॥
सुर तेतीसूं कौतिग आये, मुनिवर सहस उठयासी।
कहै कबीर हंम ब्याहि चले हैं, पुरिष एक अबिनासी॥

पद–2

बहुत दिनन थैं मैं प्रीतम पाये, भाग बड़े धरि बैठे आये॥टेक॥
मंगलचार मांहि मन राखौं, राम रसांइण रसना चाषौं।
मंदिर मांहि भयो उजियारा, ले सुती अपना पीव पियारा॥
मैं रनि रासी जे निधि पाई, हमहिं कहां यह तुमहि बड़ाई।
कहै कबीर मैं कछु न कीन्हा, सखी सुहाग राम मोहि दीन्हा॥

पद-3

अब तोहि जान न देहूं राम पियारे, ज्यूं भावै त्यूं होइ हमारे॥ टेक॥
बहुत दिनन के बिछुरे हरि पाये, भाग बड़े धरि बैठे आये॥
चरननि लागि करौं बरियायी, प्रेम प्रीति राखौं उरझाई।
इस मन मंदिर रहौ नित चौवैं, कहै कबीर करमु मति घोषैं॥

पद-4

गोकुल नाइक बीठुला, मेरी मन लागौ तोरि रे।
बहुतक दिन बिछुरे भये, तेरी औसेरि आवै मोहि रे॥टेक॥
करम कोटिकौ ग्रेह रच्यौ रे, नेह गये की आस रे।
आपहिं आप बंधाइया, द्वै लोचन मरहिं पियास रे॥
आपा पर संमि चीन्हिये, दीसै सरब समान।
इहिं पद नरहरि भेटिये, तूं छाड़ि कपट अभिमांन रे॥
नां कतहुं चलि जाइये, नां सिर लीजै भार।
रसनां रसहि बिचारिये, सारंग श्रीरंग धार रे॥
साथैं सिधि ऐसी पाइये, किंबा होइम होइ।
जे दिठ ग्यांन न ऊपजै, तौ अहटि रहै जिनि कोइ रे॥
एक जुगति एकै मिलै, किंबा जोग कि भोग।
इन दून्युं फल पाइये, रांम नांम सिधि जोग रे॥
प्रेम भगति ऐसी कीजिये, मुखि अंमृत बरिषै चंद।
आपही आप बिचारिये, तब केता होई अनंद रे॥
तुम्ह जिनि जानौं गति है, यहु निज ब्रह्म विचार।
केवल कहि समझाइया, आतम साधन सार रे॥
चरन कंवल चित लाइये, रांम नांम गुन गाइ।
कहै कबीर संसा नहीं, भगति मुकति गति पाइ रे॥

पद-5

तुम्ह घरि जाहू हंमारी बहनां, बिष लागै तुम्हारे नैना।।टेक।।
अंजन छाड़ि निरंजन राते नां किसही का दैनां।
बलि जाऊं ताकी जिनि तुम्ह पठई एक माइ एक बहनां।।
राती खांडी देख कबीरा, देखि हमारा सिंगारौ।
सरग लोक थैं हम चलि आई, करन कबीर भरतारौ।।
सर्ग लोक मैं क्या दुख पड़िया, तुम्ह आई कलि मांही।
जाति जुलाहा नाम कबीरा, अजहुं पतीजौ नांही।।
तहां जाहु जहां पाट पंटबर, अगर चंदन घसि लीनां।
आई हमारै कहां करौगी, हम तौ जाति कमीनां।।
जिन हंम साजे सांज्य निवाजे बांधे, काचै धागै।
जे तुम्ह जतन करो बहुतेरा, पांणीं आगि न लागै।।
साहिब मेरा लेखा मागै लेखा क्यूं करि दीजै।
जे तुम्ह जतन करो बहुतेरा, तौ पांहण नीर न भीजै।
जाकी मैं मछी सो मेरा मछा, सो मेरा रखवालू।
टूक एक तुम्हारै हाथ लगाऊं, तो राजां राम रिसालू।
जाति जुलाहा नाम कबीरा, बनि बनि फिरौं उदासी।
आसि पासि तुम्ह फिरि फिरि बैसो, एक माउ एक मासी।।

पद-6

अब मैं पाइबो ब्रह्म गियान।
सहज समाधें सुख में रहिबो, कोटि कलप विश्राम।।टेक।।
गुर कृपाल कृपा जब कीन्हीं, हिरदै कंवल बिगासा।
भागा भ्रम दसौं दिस सुझ्या, परम जोति प्रकासा।।
मृतक उठ्या धनक कर लीयै, काल अहेड़ भागा।
उदय सूर निस किया पयांनां, सोवत थैं जब जागा।।

अविगत अकल अनूपम देख्या, कहतां कह्या न जाई।
सैन करै मन ही मर रहसै, गूंगै जांनि मिठाई।।
पहुप बिनां एक तरवर फलिया, बिन कर तूर बजाया।
नारी बिनां नीर घट भरिया, सहज रूप सो पाया।।
देखत कांच भया तन कंचन, बिन बानी मन मांनां।
उड़या बिहंगम खोज न पाया, ज्यूं जल जलहि समांना।।
पूज्या देव बहुरि नहीं पूजौं, न्हाये उदिक न नांऊं।
भागा भ्रम ये कहीं कहतां, आये बहुरि न आंऊं।।
आपै मैं तब आपा निरष्या, अपन पै आपा सुझ्या।
आपै कहत सुनत पुनि अपनां, अपन पै आपा बूझ्या।।
अपनै परचै लागी तारी, अपन पै आप समांना।
कहै कबीर जे आप बिचारै, मिटि गया आवन जांना।।

पद-7

नरहरि सहजै ही जिनि जाना।
गत फल फूल तत तर पलव, अंकूर बीज नसांनां।।टेक।।
प्रकट प्रकास ग्यान गुरगमि थैं, ब्रह्म अगनि प्रजारी।
ससिहरि सूर दूर दूरंतर, लागी जोग जुग तारी।।
उलटे पवन चक्र षट बेधा, मेर डंड सरपूरा।
गगन गरजि मन सुंनि समाना, बाजे अनहद तूरा।।
सुमति सरीर कबीर विचारी, त्रिकुटी संगम स्वामी।
पद आनंद काल थैं घूटै, सुख मैं सुरति समांनी।।

पद-8

मन रे मन ही उलटि समांना।
गुर प्रसादि अकलि भई तोकौं नहीं तर था बेगांना।।टेक।।
नेड़ै वै दूरि दूर थैं नियरा, जिनि जैसा करि जाना।
औलौतीका चढ्या बलीडै, जिनि पीया तिनि माना।।
अमर न मरै मरै नहीं जीवै, ताहि खोजि बैरागी।।

अनभै कथा कवन सो कहिये, है कोई चतुर विवेकी।
कबै कबीर गुर दिया पलीता, सो झल बिरलै देखी।।

पद-9

इहि तत रांम जपहु रे प्रांनी, बूझौ अकथ कहांणीं।
हरि कर भाव होई जा ऊपरि जाग्रत रैंनि बिहांनी।।टेक।।
डांइन डारै सुनहां डोरे स्यंघ रहै वन घेरे।
पंच कुटंब मिलि झूझन लागे, बाजत सबद संघेरैं।
रोहै मृग ससा बन घरै, पारधी बांण न मेलै।
सायर जलै सकल बन दाझै, मंछ अहेरा खेलै।
सोई पंडित सो तत ग्याता, जो इति पदहि विचारे।।

पद-10

अवधू ग्यांन लहरि धुनि मांडी रे।
सबद अतीत अनाहद राता, इहि विधि त्रिष्णां षांडी।।टेक।।
बन कै ससै समंद घर कीया, मंछा बसै पहाड़ी।
सुई पीवै ब्राह्मण मतवाला, फल लागा बिन बाड़ी।।
षाड बुणैं कोली मैं बैठी, मैं खूंटा मैं गाड़ी।
तांणै बाणै पड़ी अनंवासी, सूत कहै बुणि गाढी।।
कहै कबीर सुनहु रे संतौ, अगम ग्यांन पद माहीं।
गुरु प्रसाद सुई कै नांकै, हस्ती आवै जांही।।

पद-11

एक अचंभा देखा रे भाई, ठाढ़ा सिंघ चरावै गाई।।टेक।।
पहलै पूत पीछे मांई, चेला कै गुरु लागै पाई।
जल की मछली तरवर ब्याई, पकरि बिलाई मुरगै खाई।।
बैलहि डारि गूंनि घरि आई, कुत्ता कूं लै गई बिलाई।।
तलिकर साषा ऊपरि करि मूल, बहुत भांति जड़ लागे फूल।
कहै कबीर या पद को बुझै, तांकूं तीन्यूं त्रिभुवन सूझै।।

पद-12

हरि के बारे बड़े पकाये, जिनि जारे तिनि पाए।
ग्यान अचेत फिरै नर लोई, ता जनमि जनमि डहकाए।।टेक।।
धौल मंदलिया बैल रबाबी, कऊवा ताल बजावै।
पहरि चोलना गादह नाचै भैंसा निरति करावै।।
स्यंध बैठा पान कतरै, घूंस गिलौरा लावै।
उंदरी बपुरी मंगल गावै, कछु एक आनंद सुनावै।
कहै कबीर सुनहु रे संतौ, गडरी परबत खावा।
चकवा बैसि अंगारे निगले, समंद अकासा धावा।।

पद-13

चरखा जिनि जरे।
कातौंगी हजरी का सूत नणद के भइया की सौं।।टेक।।
जलि जाई थलि ऊपजी, आई नगर मैं आप।
एक अचंभा देखिया, बिटिया जायौ बाप।।
बाबल मेरा ब्याह करि, बर उत्यम ले चाहि।
जब लगि बर पावै नहीं, तब लग तूं ही ब्याहि।।
सुबधी कै घरि लुबधी आयौ, आन बहू कै भाइ।
चूल्हे अगनि बताइ करि, फल सौ दीयो ठठाइ।।
सब जगही मर जाइयौ, एक बड़इया जिनि मरै।
सब रांडनि कौ साथ चरषा को धारै।।
कहै कबीर सो पंडित ज्ञाता जो या पदहि विचारै।
पहलै परचै गुर मिलै सो पीछैं सतगुरु तारे।।

पद-14

अब मोहि ले चलि नणद के बीर, अपनै देसा।
इन पंचनि मिलि लूटी हूं, कुसंग आहि बदेसा।।टेक।।
गंग तीर मोरी खेती बारी, जमुन तीर खरिहानां।
सातौं बिरही मेरे नीपजै, पंचूं मोर किसानां।।

कहै कबीर यह अकथ कथा है, कहतां कही न जाई।
सहज भाई जिहिं ऊपजे, ते रमि रहै समाई॥

पद-15

अब हम सकल कुसल करि मांनां, स्वांति भई तब गोब्यंद जांना॥टेक॥
तन में होती कोटि उपाधि, उलटि भई सुख सहज समाधि॥
जम थैं उलटि भये हैं राम, दुख सिरया सुख किया विश्रांम॥
बैरी उलटि भये हैं मीता साषत उलटि सजन भये चीता॥
आपा जानि उलटि ले आप, तौ नहीं ब्यापै तीन्यूं ताप॥
अब मन उलटि सनातन हूबा, तब हम जांनां जीवत मूवा॥
कहै कबीर सुख सहज समाऊं, आपन डरौं न और डराऊं॥

पद-16

संतौं भाई आई ग्यान की आंधी रे।
भ्रम की टाटी सबै उड़ांणी, माया रहै न बांधी॥टेक॥
हिति चित की द्वैथूंनी गिरांनी, मोह बलींडा तूटा।
त्रिस्नां छांनि परि घर ऊपरि, कुबधि का भांडां फूटा।
जोग जुगति करि संतौं बांधी, निरचू चुवै न पांणी।
कूड कपट काया का निकस्या हरि की गति जब जांणी॥
आंधीं पीछै जो जल बूठा, प्रेम हरि जन भींनां।
कहै कबीर भांन के प्रगटे उदित भया तम षींनां॥

पद-17

अब घटि भये राम राई, साधि सरीर कनक की नाई॥टेक॥
कनक कसौटी जैसे कसि लेई सुनारा, सोधि सरीर भयो तन सारा॥
उपजत उपजत बहुत उपाई, मन थिर भयो तबै तिथि पाई॥
बाहरि षोजत जनम गंवाया, उनमनीं ध्यान घट भीतरी पाया॥
बिन परचै तन कांच कथीरा, परचैं कंचन भया कबीरा॥

पद-18

राम राम राम रमि रहिए; साषित सेती भूलि न कहिये॥टेक॥
का सुनहां कौं सुमृति सुनायें, का साषित पै हरि गुन गायें।
का कऊवा कौं कपूर खवायें, का बिसहर कौं दूध पिलांयें॥
साषित सुनहां दोऊ भाई, वो नींदे वौ भौंकत जाई।
अंमृत ले ले नींव स्यंचाई, कत कबीरा बाकी बांनि न जाई॥

पद-19

हिडोलनां तहां झूलैं आतम राम।
प्रेम भगति हिंडोलना, सब संतन कौ विश्राम॥टेक॥
चंद सूर दोइ खंभवा, बंक नालि की डोरि।
झूलें पंच पियारियां, तहां झूलै जीय मोरि॥
द्वादस गम के अंतरा, तहां अमृद कौ ग्रास।
जिनि यह अमृत चाषिया, सो ठाकुर हम दास॥
सहज सुंनि कौ नेहरौ गगन मंडल सिरमौर।
दोऊ कुल हम आगरी, जो हम झूलै हिंडोल॥
अरध उरध की गंगा जमुना, मूल कबल कौ घाट।
षट चक्र की गागरी, त्रिवेणीं संगम बाट॥
नाद ब्यंद की नावरी, राम नाम कनिहार।
कहै कबीर गुण गाइ ले गुर गंमि उतरौ पार॥

पद-20

मैं बुनि करि सिरांनां हो राम, नालि करम नहीं ऊबरे॥टेक॥
दखिन कूट जब सुनहां भूंका तब हम सुगन बिचारा।
लरके परके सब जागत है हम घरि चोर पसारा हो राम॥
तांनां लीन्हां बांनां लीन्हां, लीन्हे गोड के पऊवा।
इत उत चितवन कठबन लीन्हां, मांड चलवना डऊवा हो राम॥

एक पग दोई पग त्रेपग, संघो हि संधि मिलाई।
करि परपंच मोट बंधि आये, किलिकिलि सबै मिटाई हो राम॥
तांनां तनि करि बांनां बुनि करि, छाक परी मोहि ध्यांन।
कहै कबीर मैं बुंनि सिरांना, जानत है भगवांना हो राम॥

पद-21

जुगिया न्याइ मरै मरि जाई।
घर जाजरौ बलीडौ टैढ़ौ, औलती अरराई॥टेक॥
मगरी तजौ प्रीति पाषे सूं डांडी देहु लगाई।
छींको छोडि उपरहि डौ बांधा, ज्यूं जुगि जुगि रहै समाई।
बैसि परहडी द्वार मुंदावौं, ल्यावों पूत घर घेरो।
जेठी धीय सासरे पठवौ ज्यूं बहुरि न आवै फेरी॥
लहुरी धीई सबै कुल धोयौ, तब ढिग बैठन पाई।
कहै कबीर भाग बपरी कौ, किलिकिलि सबै चुकांई॥

पद-22

मन रे जागत रहिये भाई।
गाफिल होइ बसत मति खोवै, चोर घुसै घर जाई॥टेक॥
षट चक्र की कनक कोठरी, बस्त भाव है सोई।
ताला कूंजी कुलफ के लागे, उधड़त बार न होई॥
पंच पहरवा सोइ गये हैं, बसतैं जागण लागी।
करत विचार मनहीं मन उपज्यो, नां कहीं गया न आया॥
कहै कबीर संसा सब छूटा, राम रतन धन पाया॥

पद-23

चलन चलन सब को कहत है, नां जांनौ बैकुंठ कहां है।टेक॥
जोजन एक प्रमिति नहिं जानै बातन ही बैकुंठ बवानै।
जब लग हैं बैकुंठ की आसा, तब लग नाहीं हरि चरन निवासा॥

कहैं सुनें कैसें पति अइये, जब लग तहां आप नहिं जइये।
कहै कबीर बहु कहिये काहि, साध संगति बैकुंठ हिं आहि॥

पद-24

झगरा एक नवेरो राम, जे तुम्ह अपने जन सूं कांम॥टेक॥
ब्रह्म बड़ा कि जिनि रू उपाया, बेद बड़ा कि जहां थैं आया॥
यह मन बड़ा कि जहां मन मानैं, राम बड़ा कि रामहि जानै।
कहै कबीर हूं खरा उदास, तीरथ बड़े कि हरि के दास॥

पद-25

दास रामहिं जानि है रे, और न जानै कोई॥टेक॥
काजल देह सबै कोई, चषि चाहन मांहि बिनांन।
जिनि लोइनि मन मोहिया, ते लोइन परबांन॥
बहुत भगति भौसागरा, नानां विधि नांनां भाव।
जिहि हिरदै श्रीहरि, भेटिया, सो भेद कहूं कहूं ठाउं॥
दरसन संमि का कीजिये, जौ गुननहिं होत समांन।
सींधव नीर कबीर मिल्यै है, फटक न मिल पखांन॥

पद-26

कासूं कहिये सुनि रामा, तेरा मरम न जानै कोई जी॥
दास बबेकी सब भले, परि भेद न छानां होई जी॥टेक॥
एक सकल ब्रह्मड तैं पूरिया, अरू दूजा महि थान जी॥
राम रसाइन रसिक है अद्भुत गति बिस्तार जी॥
भ्रम निसा जो गति करे, ताहि सूझै संसार जी।
सिव सनकादिक नारदा, ब्रह्म लिया निज बास जी।
कहै कबीर पद पंक्यजा, अब नेड़ा चरण निवास जी॥

पद-27

संतौं धागा टूटा गगन बिनसि गा, सबद जु कहां समाई।
ए संसा मोहि निस दिन ब्यापै, कोई न कहै समझाई॥टेक॥
नहीं ब्रह्मंड प्यंड पुंनि नांहि, पंचतत भी नाहीं।
इला प्यंगुला सुखमन नांही, ए गुणधा कहां समाहीं॥
नहीं ग्रिह द्वार कछू नहीं, तहियां, रचनहार पुनि नांही।
जीवनहार अतीत सदा संगि, ये गुण तहां समांहीं॥
तूटै बंधै बंधै पनि तूटै, तब तब होई बिनासा।
तब को ठाकुर अब को सेवग, को काकै बिसवासा॥
कहै कबीर यहु गगन न बिनसै, जौ धागा उनमांनां।
सीखें सुनें पढ़ें का होई, जौ नहीं पदहिं समांना॥

पद-28

ता मन कौं खोजहु रे भाई, तन छूटे मन कहां समाई॥टेक॥
सनक सनंदन जैदेव नांमा भगति करी मन उनहुं न जानीं।
सिव विरंधि नारद मुनि ग्यानी, मन कर गति उनहूं नहीं जानी॥
धू प्रहिलाद बभीषन सेषा, तन भीतरी मन उनहुं न देषा।
ता मन का कोई जानै भेव, रंचक लीन भया सुषदेव॥
गोरष भरतरी गोपीचंदा, ता मन सों मिलि करै अनंदा।
अकल निरंजन सकल सरीरा ता पन सौं मिलि रहा कबीरा॥

पद-29

जै पै करता बरण बिचारै, तौ जनमत तीनि डांड़ि किन सारै।टेक॥
उतपति ब्यंद कहां थैं आया, तो धरी अरु लागी माया।
नहीं को ऊंचा नहीं को नीचा, जाका प्यंड ताही का सींध।
जे तूं बाभन बभनी आया, तो आंनबाट ह्व काहै न आया।
जे तूं तुरक तुरकनी जाया, तो भीतरि खतनां क्यूं न कराया।
कहै कबीर मधिम नहीं कोई, सौ मधिम जा मुखि राम न होई॥

पद-30

कथता बकता सुरता सोई, आप बिचारै सो ग्यानी होई।।टेक।।
जैसे अगिन पवन का मेला, चंचल चपल बुधि का खेला।
नव दरवाजे दसूं दुवार, बूझि रे ग्यांनी ग्यान विचार।
देही माटी बोलै बवनां, बूझि रे ज्ञानी मूवा स कौनां।
मुई सुरति बाढ़ अहंकार, वह न मुवा जो बोलणहार।
जिस कारनि तटि तीरथि जांहीं, रतन पदारथ घटहीं माहीं।
पढ़ि पढ़ि पंडित बेद वषांणै, भीतरि हुती बसत न जांणै।
कहैं कबीर गुरु ब्रह्मा दिखाया, मरता जरता नजरि न आया।

पद-31

हम न मरैं मरिहैं संसारा, हंस कूं मिल्या जियानवहारा।।टेक।।
अब न मरों मरनै मन मांना, ते नर मुए जिनि राम न जांना।
साकत मरै संत जन जीवै, भरि भरि राम रसाइन पीवै।
हरि मरिहैं तौ हमहूं मरिहैं, हरि न मरै हंस काहे कूं मरिहें।
कहै कबीर मन मनहि मिलावा, अमर भये सुख सागर पावा।

पद-32

कौन मरै कौन जनमै आई, सरग नरक कौने गति पाई।।टेक।।
पंचतत अविगत थैं उतपनां, एकै किया निवासा।
बिछुरे तत फिरि सहजि समांनां, रेख रही नहीं आसा।
जल मैं कुंभ कुंभ मैं जल है, बाहरि भीतरि पानी।
फूटा कुंभ जल जलहिं समानां, यह तत कथौ गियानी।।
आदै गगनां अंतै गगना मधे गगनां भाई।।
कहै कबीर करम किस लागै, झूठी सकं उपाई।।

पद-33

मैं सबनि मैं औरनि मैं हूं सब।
मेरी बिलगि बिलगि बिलगाई हो,
कोई कहौ कबीर कहौ राम राई हो।।टेक।।
ना हम बार बूढ़ नाहीं हम ना हमरै चिलकाई हो।
पठए न जाऊं अरवा नहीं आऊं सहजि रहूं हरिआई हो।।
बोढ़न हमरे एक पछेवरा, लोक बोलै इकताई हो।।
जुलहे तनि बुनि पांनि न पावल, फार बुनी दस ठांउ हो।
त्रिगुंण रहित फल रमि हम राखल, तब हमारौं नांउ राम राई हो।
जग मैं देखौं जग न देखै मोहि, इहि कबीर कछु पाई हो।।

पद-34

राम मोही तारि कहां ले जैहो।
सौ बैकुंठ कहां धूं कैसा, करि पसाव मोहि दैहौ।।टेक।।
जे मेरे जीव दोई जांनत हौ, तो मोहि मुकति बताओ।
एकमेक रमि रह्या सबनि मैं, तौ काहे भरमावौ।
तारण तिरण जबै लग कहिये, तब लग तत्त न जाना।।
एक राम देख्या सबहिन मैं कहैं कबीर मन मांनां।।